हम हिन्दू क्यों हैं?

हम हिन्दू क्यों हैं?

हमारे देश में हिन्दू, जातिवाद और सनातन धर्म को लेकर बड़ी भ्रान्ति है, और इस को कोई सरल अर्थ से समझा ही नहीं पाता, क्यों के कइयों को इसका फंडामेंटाल ज्ञान का पता ही नहीं होता; अगर है तो ये धूर्त आपको हमेसा डेल्युजन और झूठ का नशा इसलिए पिलाते रहते हैं ताकि आप उनके विचारधारा के गुलाम बने रहे । पहले ये जानने को कोसिस करते हैं "हिन्दू कौन है?" हिन्दू का अलग अलग अर्थ आप को कई सोर्सेस से पता चल जायेगा । जातिवादी जैसे सावरकर उनका भी अपना हिन्दू का डेफिनेशन है । हिन्दू शब्द कहाँ से पैदा हुआ पहले आपको देखना पड़ेगा? अगर में ये कहूं ये शब्द आमेरिका, यूरोपियन या जापान या चाइना सभ्यता में पायेजानेवाले भाषाओँ का शब्द है तो क्या आप मानेंगे? इसलिए आपको उनकी भाषा को समझना पड़ेगा और उनके भाषाकोष से इस शब्द का अर्थ ढूंढ़ना पड़ेगा फिर मिलान करना पड़ेगा और फिर आप ये नतीजे पे पहुँच सकते हैं की हिन्दू उस भाषिय सभ्यता से एक भाषा का एक शब्द है या नहीं; अगर है वह उस भाषिय सभ्यता के पैदा शब्द है या अडोप्टेड या बरोड़ शब्द है इत्यादि इत्यादि और आखिर पे आप ये नतीजा पर पहुँच सकते हो शब्द का असली सोर्स क्या है! आजकल ये परिक्षण करना बड़ा आसान है आप कोई भी ओनलाईन ट्रांसलेटर यूज करके ये परिक्षण अति सरल वे में कर सकते हो और आप गूगल ट्रांसलेटर का भी इस्तेमाल कर सकते हो; सिन्धु शब्द का आप ऐसे ही परिक्षण कर सकते हो, जिससे की हिन्दू शब्द का उत्पत्ति हुआ है। परिक्षण के बाद आप को ये पता चल जायेगा की ये कोई बिदेशी शब्द से पैदा शब्द नहीं है ये इण्डिया में बसे अनेक भाषिय सभ्यता से एक भाषा का शब्द है । इंडिया में तो कई भाषा बोले जाते हैं यानि यहाँ सरकारी आंकड़े के हिसाब से करीब 1721 लैंगुएज बोले जाते हैं यानि करीब 122 मेजर लैंगुएज हैं, और 1599 अन्य लैंगुएज हैं । इतने भाषाओँ में से कौनसा भाषिय सभ्यता का ये शब्द है इसको ढूंढ़ना जरुरी है । इसको ढूंढ़ना भी बड़ी आसान है, वह कैसे? अच्छा बताओ हम अंग्रेजी आज क्यों बोल सकते हैं? अंग्रेजी तो यहाँ का भाषा ही नहीं है? हम इस भाषा को इसलिए बोल सकते हैं क्यों की इस भाषा का प्रभाव हमारे समाज पर बड़े तौर पर पड़ा। कब एक भाषा बड़े तौर पर इस्तमाल हो सकता है? जब ये रूलिंग क्लास ही इम्प्लीमेंट करें । अब इन्फॉर्मेशन सोर्स के तौर पर हम किसको लेंगे? लोक-कथा जो सुन सुन के और याद रख कर एक जेनेरेशन से दूसरा जेनेरेशन को

ट्रांसफर किया गया है, इतिहास, पुराण, धार्मिक शास्त्र इत्यादि इत्यादि जो सच झूठ का घालमेल है; क्यों के इसमें कई तथ्य अपने वर्चस्व कायम करने की मतलव से झूठ भी मिलाया होगा यानि ये सच और झूठ का तरह तरह का घालमेल भी है; लेकिन अगर हम इस तथ्य को साइंटिफिक और लॉजिकल इंटरप्रिट करें सच निचोड़ निचोड़ के आपके सामने होगी बस आप के दिमाग को उस लेवल तक लेना पड़ेगा और सत्य आप के जीभ के आगे होगा । पहले आते हैं कौनसा भाषा का प्रभाव किसके वजह से किस काल खंड में पड़ा और उनके सोर्सेस असलियत में कौन है । इसको जानने केलिए आप को थोड़ा घालमेल इतिहास को वैज्ञानिक तार्किक पर्यवेक्षण और विश्लेषण करना पडेगा; कुछ वर्चस्ववादी अपना इतिहास खुदके सपक्ष में और अपना विरोधी का इतिहास बिपक्ष में लिखते हैं उसको भी आप को ध्यान देना पड़ेगा और इसके वजह से दूसरे भूखंड में जो इतिहास लिखे हैं उनकी तालमेल भी जरुरी है और उसके बाद लोजिकल और साइंटिफिक एनालिसिस करने का बाद नतीजे पे पहुंचना पड़ेगा । अतीत का कालखंड में, इंडिया में जो ज्यादा बड़ा अखंड राज्य बनाया होगा उसका ही चला होगा और वह जो विचारधारा और भाषा का प्रचार प्रसार किया होगा उससे ही आप को हिन्दू शब्द का चेकिंग करना पड़ेगा जिससे ये थोड़ा और भी सरल हो जायेगा; और ये भी बहुत सरल है। यहां सबसे बड़ा अखंड राज्य मौर्यन एम्पयार ने बनाया जो बौद्ध विचारधारा केवल अपने भूखंड में ही नहीं बिदेशी राज्य में भी फैलाया। अब प्रश्न उठता है बौद्ध विचारधारा किसने बनाया? कोई बाहर का इंसान ने तो नहीं बनाया? अगर विचारधारा विदेशी था तो रूलिंग क्लास कैसे इसको आडोप्ट किया? अगर इस भूखंड का था तो किसने और किस कालखंड में इसकी उत्पत्ति किया? अगर विचारधारा इस भूखंड का किसी भाषिय सभ्यता का मूलनिवासी से बना है तो वह कौनसा भाषिय सभ्यता था? यानि उनकी मातृ भाषा क्या था? ये आपको बहुत ईजी से पता चलजाएगा की बुद्ध अपना ज्ञान पाली भाषा में देते थे, यानि बुद्ध का मातृभाषा पाली था। अब प्रश्न उठता है इंडिया में ये पाली भाषा है कहाँ? हमारे एकाडेमिक्स में तो ये बताया ही नहीं ये भाषिय सभ्यता कब था और कहाँ था? यानी इसको हमेशा षड्यंत्र के तौर पर हमेशा पीढ़ियों को छुपाया गया; लेकिन क्यों? हमारे इतिहास में तो बुद्ध को नेपाल का बताया जाता है? क्या नेपाल का भाषा पाली है? इस का भी परिक्षण आप कर सकते हो। आप इसकी अगर परिक्षण करोगे इस नतीजे पर पहुंचोगे नेपाल का भाषा पाली भाषा नहीं है; ये भाषा पाली भाषा से भी कई शब्द अपनायी हुयी हैं; इसलिए ये अपभ्रंश के साथ मिलता जुलता है। नेपाल का भाषा पाली नहीं ये खास-कुरा या गोरखाली भाषा है । अगर ये भाषा पाली ही नहीं तो बुद्ध वहां कैसे पैदा हुए? अगर बुद्ध खास-कुरा या गोरखाली भाषी सभ्यता से थे तो उन्होंने पाली भाषा में क्यों बोलना पसन्द किया? यानि वह अगर खास-कुरा या गोरखाली भाषा के बोलनेवाले इंसान थे तो पाली में क्यों अपना ज्ञान बांटा? बौद्ध ज्ञानसम्पदा खास-कुरा यानि गोरखाली भाषा में क्यों नहीं रचा गया, पाली भाषा में क्यों रचा गया? तो ये साफ़ साफ़ खंडन हो जाता है बुद्ध वहां पैदा ही नहीं हुए थे; यानी ये साफ़ साफ़ प्रमाण हो जाता है इसका फ्याब्रीकेसन हुआ था; अगर ये हुआ था तो किसने और क्यों किया? और इसके पीछे कौन था?

नेपाल का इतिहास से ये पता चलता है की वहां कभी कोई बुद्धिस्ट राजा कभी राज ही नहीं किया; सब जातिवादी राजा थे यानि कास्ट सिस्टम को मानेवाले राजा। तो ये झूठ किसने बोला और क्यों बोला, और कब बोला गया? बुद्ध का जन्मस्थान इंडिया में नहीं नेपाल में है इसको बतानेवाला इंसान एक ब्रिटश जर्मन इंडोलॉजिस्ट था जिसने इंडियन पुरातत्व सर्वेक्षण के लिए काम किया था; जो 1896 में अपना फ्याब्रिकेट खनन और सबुत के साथ ये प्रमाण करने की कोशिश की वहां बुद्ध का जन्मस्थान है, क्यों की उसका ये कहना था उसको वहां उसको कुछ बुद्ध का जन्मस्थान के वारे में अशोक के शिलालेख मिले; जो ये साबित करता है वह जगह लुंबिनी है; इसलिए उसका ये कहना था

वह बुद्ध का जन्म स्थान है । जब की ये सब निराधार और प्लांटेड था; उसको लुम्बिनी बताने केलिए उस जगह का नाम भी उसने बदल दिया था । अगर राजा अशोक ने वहां बुद्ध का जन्म स्थान है बोलकर ढूंढ लिया था तो वह कई जगह स्मरणीय बौद्ध स्ट्रक्चर बनाये, तो वह वहां कई बुद्ध का स्तूप, विहार और स्तंभ क्यों नहीं बनाया? नेपाल को कोई भी इस्लामी या दुसरा आक्रांता कभी भी आक्रमण नहीं किया; तो, अगर अशोक का कालखंड का कोई बौद्ध स्ट्रक्चर वहाँ थे तो वहाँ के बौद्ध सम्पदा को तोडा किसने था? जिसका उत्तर के घर में जीरो बटा सन्नाटा है तो ये सब बुनियादी प्रश्न ये साबित करदेता है वह सबुत भी नकली था और क्यों के बुद्ध का मातृभाषा पाली था और नेपाल में कोई भी पाली लिंगुइस्टिक रेस ही नहीं था इसलिए बुद्ध वहां कभी पैदा ही नहीं हुए थे; इसलिए नेपाल कभी बुद्ध का जन्मस्थान ही नहीं था। प्रमाण प्लांट करना फैब्रिकेसन का हिस्सा था और वह जर्मन इंडोलॉजिस्ट ये फैब्रिकेसन क्यों किया होगा जाहिर है इंडिया में बौद्ध विरोधी उसका इस्तमाल किया होगा जो नहीं चाहते थे की ये प्रमाण हो या दुनिया जानें बुद्ध इंडिया की नहीं बिदेशी है! यानि बौद्ध विरोधी विचारधारा ही ये काण्ड किया होगा; अब प्रश्न उठता है बौद्ध विरोधी विचारधारावाले लोग इंडिया में हैं कौन जो ये सब गेम सदियों खेलते आ रहे हैं? ये कोई और नहीं जातिवादी प्रचारक और प्रसारक ही हैं । जातिवाद का ओरिजिन जानने से पहले हम ये जान लेते हैं बुद्ध असलियत में पैदा कहाँ हुए थे और हिन्दू शब्द का ओरिजिन क्या है । बौद्ध ज्ञानसम्पदा से ये पता चलता है बुद्ध कपिलवस्तु, लुम्बिनी में पैदा हुए थे । कपिलवस्तु, लुम्बिनी जितना महत्वपूर्ण नहीं है, उतना महत्वपूर्ण उनका मातृभाषा बोलनेवाले सभ्यता इंडिया में कहाँ है? वह है । इसको परिक्षण करने केलिए आपको इंडिया में पाए जानेवाले भाषाओँ के साथ पाली भाषा की म्याच करना पड़ेगा की कौनसा भाषा इसका ज्यादा करीब है और उसका शब्द सही उच्चारण और सही अर्थ के साथ म्याच करता है । इसकेलिए आप गूगल ट्रांसलेटर और अन्य ट्रांसलेटर का भी मदद ले सकते हो । परिक्षण के बाद आप को ये पता चलेगा की इंडिया में एक भाषा जिसका नाम अब ओड़िया है, उससे ये पाली 50% से भी ज्यादा सही उच्चारण सही अर्थ के साथ बिना अपभ्रंश से म्याच करते हैं । दुनिया में ओड़िआ को छोड़कर कोई और भाषा नहीं जो पाली के साथ इतना म्याच करता हो जिससे ये प्रमाणित होता है अतीत का पाली कोई और नहीं आज का ओड़िआ भाषा है। कुछ शब्दाबली इसलिए म्याच नहीं करते हैं क्यों की कुछ लोग इस भूखंड में नहीं चाहते थे की पीढ़ियां जानें ये ही पाली भाषा है क्यों की बुद्ध का जन्मस्थान का पता चल जाता; वही लोग इस भाषा में कई घालमेल किये होंगे ताकि असलियत को छुपाया जा सके। अगर आज का ओड़िआ अगर अतीत का पाली है तो निसंदेह ये साबित हो जाता है बुद्ध ओडिशा के हैं और कपिलवस्तु और लुम्बिनी ओडिशा में ही है जिसको छुपाने में बौद्ध विरोधी कोई कसर नहीं छोड़ा होगा और यहाँ के बौद्ध विरोधी बेईमान ओड़िआ पूर्वज ही इसको अंजाम देने केलिए मदद किया होगा । क्यों के बौद्ध विचारधारा पाली भाषा से सम्बंधित था और इसके शास्त्र पाली में रची गयी थी और मौर्यन एम्पायर का राजा अशोक ने इसकी प्रचार प्रसार अपना अखंड राज्य में किया था तो इसलिए पाली भाषा के शब्दावली भी दूसरे भाषिय सभ्यता में दिखने लगे और ये कभी सही सही या अपभ्रंश के साथ दिखने मिलते हैं। पाली असलियत में "पल्ली" का अपभ्रंश है यानि "गाओं" की भाषा है जब की बौद्ध धर्म को प्रचार और प्रसार करने केलिए यहाँ के बौद्ध राजाओं ने पाली से प्रेरित अन्य भाषिय सभ्यता के समन्वय एक सम्मिलित भाषा की रचना किया जो बौद्ध विचारधारा को प्रसार करने में सहज हो जिसको ज्यादातर नगर में बोलने की कारण नगरी/नागरी बोला गया और क्यों के ये भाषा इस भूखंड में सबसे ज्यादा बोलेजानेवाले भाषा बनगया था इसलिए इस भूखंड का नाम से इसको हिंदी बोला गया। हिंदी शब्द पाली शब्द सिन्धु से पैदा एक शब्द है जिसका मतलब नदी, सागर या समुद्र होता है। इसको सप्तसिन्धु का देश भी कहाजाता था यानि सात नदियों का देश। वैसे ज्योग्राफिकली आप हमारे भूखंड को देखो तो ये सागरों से घिरा हुआ

नदियों का देश ही है। इसलिए पाली शब्द सिन्धु के अनुसार हिन्दू क्यों की एक इंसान की पहचान है इसलिए हिन्दू सागरों से घिराहुआ नदियों का अखंड भूखंड की निवासी है। ये याद रखना जरुरी है सिन्धु बौद्ध भाषा पाली से सम्बंधित है संस्कृत से नहीं। सिन्धुस्थान भी पाली शब्द है और ये सिन्धुथान का अपभ्रंश है। सिन्धुथान पाली का दो शब्द योग से पैदा एक शब्द है; वह है सिन्धु और थान; यहाँ थान का मतलव जगह या प्लेस होता है और ना ये कोई पर्सियन शब्द है ना आरबिक शब्द है जैसे कुछ लोग संदेह करते हैं, और प्लेस या जगह इनके शब्द कोष में कुछ और है; सिन्धुस्थान का अपभ्रंश हिन्दुस्तान है जैसे सिन्धुथान->सिन्धुस्थान->हिंदुस्थान; वैसे जाने अनजाने में सही ये "इंडिया" भी सिन्धु शब्द से पैदा एक शब्द है जैसे सिन्धु->शिन्धुस/शिन्धस->इंडस->इंडिया जो यूरोपियन अपभ्रंश है। अब आप को करीब 5 करोड़ ओड़िआ लोग मिल जायेंगे जो पाली भाषी सभ्यता को रिप्रेजेन्ट करते हैं पाली को ही “प्राकृत/प्रकृत” यानि “ପ୍ରକୃତ” कहा जाता था; इसके विरोधी इसका नाम क्यों ना कई नाम रख दें इससे मतलब कुछ नहीं होता, जब की उनके हिसाब से प्राकृत/प्रकृत का संस्कार करके इनलोगों ने अपना संस्कृत भाषा बनाया है और ये धूर्त उसको सब भाषा की जननी बोलकर प्रमोट करते रहे हैं । अगर संस्कृत इतनी पुरानी भाषा है तो ये भी बता दो तुम्हारा मातृ भाषा बोलनेवाले भाषिय सभ्यता कहाँ है? कौनसा प्रान्त में तुम्हारा सिभिलाइजेसन है और कौनसा माँ अपना बच्चा को संस्कृत आज़ ए मदर टोंग सिखाती है? संस्कृत कभी भी किसीका मातृभाषा इस भूखंड का नहीं रहा । ये भाषा का रचना लोगों को ठगने केलिए बनाया गया था जिससे की साधारण लोगों को ये समझ में नहीं आये और ये कुछ लोगों की समझने की भाषा अपने स्वार्थ के सिद्धि केलिए बनाया गया था। संस्कृत का कोई भाषिय सभ्यता नहीं ना कोई इतिहास है; इस भाषा को किसी कारण के उद्देश्य से कोई इसका अपभ्रंश या नष्ट किया था ना ये कभी लोकप्रिय भाषा था ना देश आजाद के बाद जातिवादी साशक इसको ऐकाडेमिक में अनिवार्य करने के बाद भी ये लोकप्रिय भाषा बनपाया । संस्कृत भी जातिवादियों के द्वारा बनाया एक फेक भाषा है जितना उनकी काल्पनिक देवादेवियाँ और जितना उनकी झूठा आर्यन रेस; उनकी वेद भी पाली भाषा “वेदना” शब्द से प्रेरित है और उनकी काल्पनिक रेस "आर्य" शब्द भी एक पाली भाषा शब्द है जिसका मतलब श्रेष्ठ होता है और उस शब्द का अपहरण या चोरी करके ये असामाजिक लोगों का जातिवादी प्रोमोटर क्लास खुद को पाखंडी रेस "आर्य" दिआ हुआ है । अगर झूठों की गपोड़वाज ठगों की गठबंधन करोड़ों काल्पनिक देवादेवियाँ बना सकते हैं उन केलिए एक काल्पनिक रेस बनाना कौनसा बड़ा बात है? कोई कोई मुर्ख जातिवादी इतिहासकार ये ईरान या इजिप्ट रेस का भी बताते हैं तो उनके इतिहास में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और अतिशूद्र का सत्ता भी तो दिखाओ? वह नहीं मिलेंगे क्यों के ये गोपडवाज हैं । ये आर्य रेस कहीं से भी नहीं आये अगर ये कहीं से आये होते तो उस भूखंड का हाल भी वही होता जो आज हमारा भूखंड का हुआ है; अगर है तो नाम भी तो बताओ? हम उसकी भी छानबीन करलेंगे! और अगर वह कोई दूसरी जगह से आए होते तो उनका रेस में भी जातिवाद दिखाना अनिर्बारय होगा जो है ही नहीं; जातिवादी हमारा भूखंड के बिना कहीं और नहीं दीखता और जातिवादियों ने जो हाल हमारा भूखंड का किया है उनका भूखंड का हाल भी वैसे होता जहाँ से ये आये हैं; इनकी इतिहास सब गपोड़वाज है और ये ठगों का गठबंधन है जो अपनेआप को आर्य बोलते हैं और ये यहीं ही का उपज ही हैं वह आप को आगे जाकर पता चलेगा। बौद्ध विचारधारा में अगर जातिवाद होता तो जो बौद्ध विचारधारा हमारे भूखंड से दूसरे भूखंड को प्रसारित हुआ उसके साथ जातिवाद भी चलागया होता और चाइना, जापान, साऊथ कोरिया जैसे बौद्ध विचारधारा अपनाया हुआ देश भी जातिवाद से ग्रसित होता जब की ऐसा है ही नहीं इससे ये प्रमाण होता है जब ये विचारधारा हमारे देश का प्रमुख विचारधारा था यहाँ जातिवाद ही नहीं था इसलिए ये उनके देश को प्रसारित नहीं हुआ इसलिए ये यह प्रमाणित करता है तब यहां बौद्ध विचारधारा होने के साथ साथ जातिवाद प्रमुख या

द्वितीय विचारधारा भी नहीं था और बाद में ये बौद्ध विचारधारा को ख़तम करके जातिवाद पैदा हुआ और यहाँ से बिदेश जा ही नहीं पाया; क्यों के इसका वर्चस्व बौद्ध उपनाम हिन्दू के तरह ही नहीं था । क्यों की पाली भाषा बौद्ध विचारधारा से सम्बंधित है और सिन्धु और हिन्दू, सिन्धुस्थान, हिंदुस्तान और इंडिया सब पाली से सम्बंधित है तो ये डाइरेक्ट प्रुभ करता है ये बौद्ध विचारधारा से सम्बंधित है जातिवाद से नहीं; इसलिए हिन्दू बौद्धवादी है जातिवादी नहीं, जबकि जातिवाद ही बौद्धवाद उपनाम हिन्दू सभ्यता का हत्यारा है; और खुद की बहुदेववादी जातिवाद को हिन्दू नामसे प्रमोट करके सदियों इस भूखंड के लोगों को धोका देता आ रहा है । जातिवादी हिन्दू नहीं होते ये पाखंडी हिन्दू हैं यानि नकली हिन्दू हैं, अर्थात हिन्दू को जातिवादी बनाकर उसकी असली अर्थ का भी हत्या करिदया है । अब आते हैं जातिवाद क्या है। पहले जाती क्या है जानते हैं। जाती भी एक पाली शब्द है जिसका सम्बन्ध जीब के जन्म से है पेशे से नहीं। जैसे घोड़े का बच्चा घोडा होता है, गधे का बच्चा गधा होता है और हाथी का बच्चा हाथी होता है वैसे इंसान का बच्चा भी इंसान होता है ये है बौद्ध भाषा पाली शब्द का जाती का मतलव । यानि आप गाय, हाथी या बकरी का मल देख कर भी पहचान लोगे किस जीव का कौनसा मल है, यानि कौनसा मल किस जीव से जुड़ा है; जाती जीव का जन्म से जुड़ा है कर्म से नहीं; क्या आप इंसानों के मल से ये पता कर सकते हो कौन किस धर्म या वर्ण का है यानि कौनसा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, अतिशूद्र, मुस्लिम, ईसाई, जैन या सिख विचारधारा अपनाया इंसान का है? नहीं ना? क्यों के इनके जात एक है वह है इंसान। लेकिन यहाँ के कुछ धूर्त्तों ने कर्मों की आधार पर अलगाओवाद की रचना किया और लोगों के प्रोफेसन यानि कर्म के आधार पर क्लास की परिकल्पना की यानि इन अलगाओवादी धूर्त मूलनिवासियों ने पेट पालनेवाले कर्मों को लेकर इंसान की अलगाओबाद श्रेणी बनायीं जो की गपोड़वाज कहानी के उपर आधारित था यानि इन लोगोंने चार प्रमुख कर्मों के श्रेणी बनाकर उसके आधारपर कर्म श्रेणी यानि बृत्ति सरंक्षण की ब्यवस्था बनायीं जो की कास्ट सिस्टम उपनाम जातिवाद उपनाम वर्ण ब्यवस्था है; जिसका मकसद ये था कुछ संगठित मतलवीवाद निवासी अपना सामाजिक जीविका केलिए अपनाया हुआ कर्म उनके और उनके पीढ़ियों कलिये सरंक्षित है; यानि विचारधारा का पिंजरे में बृत्तियों को कैद करदिया गया है, और एक पिंजरे से दुसरा पिंजरा का एक्सेस ब्यान करदिया गया; यानि जीविका केलिए जो कर्म की स्वाधीनता था उसको कुछ मतलवादी मुलनिवाशी अपना संगठित और सामूहिक लाभ केलिए इस विचारधारा की रचना की और पेशे की स्वतंत्रता को हमेशा केलिए ब्यान करके कुछी ही वर्ग उस जीविका कर्म का लाभ हमेशा उठाया और इसको GOD और धर्म के आड़ में छल बल, धन और नारी प्रलोभन, हिंसा और कपटता का सहारे बौद्धवादी हिन्दू समाज से जातिवादी को कन्वर्ट किया गया और इसके जरिये इनलोगों ने प्राकृतिक सम्पदा, संसाधनों और सामाजिक और आर्थिक हर चीज को इन्होने अपने कब्जे में करलिया । जातिवाद इम्प्लीमेंट होने से यह हुआ काल्पनिक गपोड़वाज पुरुष शुक्त का कहानी के आधार पर वर्ण के नाम से चार जात बनाकर क्लास में ही उसकी प्रोफेसन को कैद करदिया गया ताकि जाती के नामपर वह दुसरा प्रोफेसन करनासकें यानि ये एक तरह का प्रफ़ेसन की सरंक्षण विचारधारा के साथ साथ फ्रीडम ऑफ़ प्रोफेसन को ब्यान करने की विचारधारा था जिसको ये नाम दिए जातीयव्यबस्था यानि वर्ण जो ये अपना ऋग वेद में लिखा हुआ बताते हैं । वेद और वर्ण अगर पुराने होते तो पुराने ज़माने में बौद्ध विचारधारा नहीं जातिवाद देखने मिलता जो है ही नहीं; बौद्ध विचारधारा को नष्ट, भ्रष्ट और अपभ्रंश करके ही जातिवाद बना है । इनके जातिवाद का प्रमुख देवादेवि ब्रह्मा, विष्णु और महेश सब काल्पनिक चरित्र हैं और ये भूखंड जब बौद्ध हिन्दू राष्ट्र था तब इनका नामो निशान ही नहीं थे; ये सब चरित्र 900AD के बाद ही पैदा हुए हैं क्यों के बौद्ध विचारधारा का स्तूप, चैत्य, विहार, अशोका पिलर सब आपको बिफोर ख्रायेष्ट का भी मिल जायेंगे लेकिन इनका एक भी प्रतिक उस अबद्धि में नहीं मिलेगा बाद में बौद्ध धर्म की सम्पदा को ये अपना बताते हुए दिखेंगे

और वह भी अपभ्रंश करके जो ये प्रमाण करता है यहाँ के जितने अच्छे रेसियोनाल विचारधारा थे उसको बिगाड़ते, फ्याब्रिकेट करते और नष्ट और ध्वंश करते हुए आगे बौद्धविरोधी जातिवादी प्रमोटर्स ही नजर आएंगे । अब आते हैं किस प्रबृत्ति के मूलनिवासियों ने ये विचारधारा बनाया? आजका सो कल्ड हिंदुइज्म को जरा साइकॉलोजिकली स्टडी करें सच्चाई आपको साफ़ साफ़ नजर आयेगा । जातिवाद के साथ साथ ये अपना बहुदेववाद को भी जोड़ा हुआ है और कोई कोई इसको सनातन धर्म भी कहता है । बहुदेववाद यानि पोलिथेइजिम क्या है? ये बहुदेववाद के अनुयायी अनेक देवादेवियों को अपना मालिक यानि बॉस मानते हैं; जो की अपनी श्रद्धा और भक्ति के बदले खुश हो कर कुछ देने का क्षमता रखते हैं जो पुरुष एंटिटी डिजायर सफल करने का योग्यता रखता है, वह देव है; और जो नारी एंटिटी सफल करने का योग्यता रखती है, वह देवी है; वह काल्पनिक हो या जीबित एंटिटी हो या जीबित एंटिटी मरने का बाद उस आस्था से प्रतिष्ठित हुआ हो; ऐसे ही इनकी देवादेवियों का भ्रम का झूठा मायाजाल बनाया हुआ है, और ये सब अंधविश्वास और अंधभक्ति के आस्थापर चलता है । इन में कितने देवादेवि काल्पनिक है कितना जीबित इंसान के एंटिटी पर बनाये गए है उनका असित्व था या नहीं वह बाद में बात करेंगे बस इनका प्रैक्टिस की साइकोलॉजिकल एनालिसिस करते हैं। भक्त का अपना अपना समस्या या खुसी होता है जिसके वजह से वह मंदिर को जाता है। मंदिर में तरह तरह का देवादेवियां हैं और वहां भक्त जाकर अपना मन की बात उस एंटिटी जो पथर या मेटाल या लकड़ी या फोटो इत्यादि के माध्यम में होता है उससे सम्बाद करता है । आप बताओ कोई भी निर्जीव पदार्थ से बनाया स्कल्प्चर का क्या इन्द्रियां यानि कान, आँख होता है जो उसको भक्त की मन की बात सुनाई देगा? और ये बात तो वह अपना घर में भी कर सकता है तो वहां जाने की क्या जरुरत है? यहाँ आता है एंटिटी का स्थापना, आस्था और उसको सम्बाद करके आप की समस्याओं का हल करनेवाले रिप्रेजेन्टिभ यानि पुजारी जो आपका बात उस देवादेवी तक पहुंचा देगा और आप की बात बनजाएगी; ये प्रोफेसन आता है एक पुजारी का जो संस्कृत से ही निर्जीव मूर्त्तियों या प्रतीकों से सम्बाद यानि कम्युनिकेसन कर सकता है; और एक बात ये देवादेवियाँ केवल संस्कृत ही समझते हैं और आम आदमी को तो संस्कृत आता नहीं; तो वह पुजारी के सहारे ये काम करवाएगा और काम देवादेवी ऐसे ही नहीं कर देते, उस केलिये कुछ बिद्धि और दान भी देना पड़ता है यानि बिना रिस्वत के काम नहीं होगा तो यहाँ आता है दान दक्षिणा देना । इस साइकोलॉजिकल मेकानिजम के उपर ही सम्पूर्ण आजके गोड इंडस्ट्री टिका हुआ है और इंडिया का ये देवादेवियों का गोड इंडस्ट्री करीब $7000 बिलियन डोलार है यानि आज का डेट (20 अक्टूबर 2021) इंडियन रूपया में करीब Rs.52,58,73,95 करोड़ रूपया से भी ज्यादा बड़ा है । जो लोग बैठ बैठ के पथर दिखाकर पैसा, इज्जत और आपके जिंदगी को GOD के नाम पर नियंत्रण करेंगे तो क्या आप को वह प्रोफेसन में घुसने देंगे? इससे ही पैदा होता है प्रोफेसन की रिजर्भेसन । आप सोचो ऐसे सोच समाज के किस प्रबृत्ति के लोगों का हो सकता है जो लोगों को ठग के उनको झूठ के आधार पर नियंत्रण भी करे और उन से बैठ बैठ के इज्जत और धन भी कमाए? क्या ये कभी एक ज्ञानवान का विचार हो सकता है? कभी नहीं; ये एक होनेश्ट रोबेरी है जो दीखता नहीं लेकिन आस्था के नामपर चलता है, क्यों की मूर्त्तियों को दिया गया दान मूर्त्ति नहीं उस विचारधारा को चलानेवाले लोगों का पास चला जाता है । अब आते हैं उनका जातिवाद डेफिनेशन कहाँ मिलता है और ये कहता क्या है। जातिवाद वर्ण का डेफिनेशन का प्रमुख सोर्स ऋग वेद का पुरुष शुक्त 10.90 है और कुछ शास्त्र हैं जो बोलता है ब्राह्मण ब्रह्मा से पैदा हुए हैं। हम ये दोनों की ही एनालिसिस करेंगे । पहला आते हैं ऋगवेद का पुरुष शुक्त 10.90 का डेफिनेशन को। विकिपीडिया लिंक इस आर्टिकल में एम्बेडेड है क्लिक करके पढ़ लीजिये। ये यह कहता है की एक "लौकिक पुरुष" था । पुरुष शुक्त 10.90 में "लौकिक पुरुष" को एक आदिम विशालकाय पुरुष के रूप में वर्णित किया गया है, जिसका एक हजार सिर और

एक हजार पैर थे। जिसको देवताओं के द्वारा बलि दिया गया जिस को पुरुषमेध कहते हैं और जिस के शरीर से ये संसार यानि ये दुनिया और वर्ण (जाति) बने हैं । जिस में बायोलोजिकल प्रिंसिपल ऑफ़ मेकिंग लाइफ यानि पुरुष और नारी के सम्भोग से बना जीबन की तरिका को नकारा गया है । पुरुष को बलि देने के बाद उसके शरीर के खंडित टुकड़े से पहले वैदिक मंत्रों की रचना हुई । घोड़ों और गायों का जन्म हुआ, ब्राह्मण पुरुष के मुख से पैदा हुए यानि वर्णवादी समाज के पुजारी वर्ग पुरुष के मुख से पैदा हुए, भुजाओं से पैदा हुए क्षत्रिय यानि क्षेत्र से आय करनेवाले मालिक यानि टैक्स कॉलेक्शन करके राज करने वाले लोग यानि जातिवादी राजा वर्ग, जांघों से बने वर्णवादी बनिया क्लास और जितने अलग पेशे के लोग पैदा हुए वह सब पुरुष के पैरों से बने और उनको कहा गया शूद्र (OBC) जो ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य के गुलाम बनें । चंद्रमा उसकी आत्मा से, उसकी आंखों से सूर्य, उसकी खोपड़ी से स्वर्ग पैदा हुआ । इंद्र और अग्नि उसके मुख से निकले । क्या आप को ऐसा लगता है ये सच में ऐसे हो सकता है? कोई जीव को बलि देकर यानि मरे हुए जीब का शरीर की टुकड़े से कई तरह का जीबन पैदा हो सकता है? आप को ये क्या लगता है, ये वैज्ञानिक और तार्किक है! या कोई झूठ, अज्ञानता, तर्कहीनता, भ्रम, मूर्खता, धूर्तता और अंधविश्वास के नशे में सत्य, तर्क, ज्ञान, बिज्ञान यानि बुद्धि को बली देकर ही ये विकृत सोच पैदा किया है? अगर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र प्राकृतिक होते तो ये दुनिया के हर समाज में दीखते और जब वह पैदा होते उनके शरीर में अपना ब्रांड छपवाकर आते जैसे ब्राह्मण अपने शरीर में पुरुष का मुख का चिह्न लेकर पैदा होता, क्षत्रिय भुजाएँ का चिह्न लेकर पैदा होते, बनिया यानि वैश्य पुरुष का जांघ चिह्न लेकर पैदा होता और शूद्र पुरुष का पैर का चिह्न लेकर पैदा हुए होते । क्यों के ऐसा नहीं होता ये प्रमाणित हो जाता है ये एक विकृत सोच है और ये प्राकृतिक नहीं है । अगर आप को कोई इंसान या विचारधारा GOD के नाम पर गधा या सूअर बोले, तो क्या आप खुद का अक्ल की बत्ती बुझाकर, अंध बनकर खुद को इंसान से गधा या सूअर मानलोगे, इसलिए क्यों के बोलनेवाला विचारधारा ये GOD के नामपर बोल रहा है? शूद्र(OBC) और अतिशूद्र(Sc & ST) जो जातिवाद में सबसे बड़ा सामाजिक वैचारिक क्लास है जिनका जन संख्या करीब 90 करोड़ को भी पार कर जायेगा इन को जातिवाद विचारधारा ने मानसिक, शाररिक, सामाजिक और आर्थिक रूपसे इतना कमजोर करदिया; ना ये कभी युनाइटेड हो सके ना ये इनकी विचारधारा के पिंजरे से खुद को आजाद कर सके; और ये वह मानलिया जो ये मानसिक विकृत असामाजिक बौद्ध विरोधी उनको पहचान दिया था; ये किस तरह की मानसिकता है? अब आते हैं ब्राह्मणों की ब्रह्मा से पैदा हुआ पार्ट को । पहले ब्रह्मा के बारे में जानते हैं । ये है कौन, और कहाँ रहते हैं; इस चरित्र कभी एक्जिस्ट करता था या बस एक काल्पनिक चरित्र है जैसे स्पाइडरम्यान और सुपरम्यान के जैसे? और अगर ये एक काल्पनिक चरित्र है तो वह काल्पनिक चरित्र कब बना और ब्राह्मण इस चरित्र से कैसे पैदा हुए? ब्राह्मणों के शास्त्रों के अनुसार ये कभी स्वयंभू है तो कभी मानस पुत्र हैं । स्वयंभू का मतलब खुद अपने आप पैदा एक चरित्र है जो प्राकृतिक बाइओलजिकाल प्रिंसिपल से बना नहीं है लेकिन वह इंसान का जैसा दीखता है लेकिन अजीब है क्यों की ये अक्सर बूढ़ा और चार सर और चार हाथ वाला चरित्र है जो की बाइओलॉजिकल इम्पोसिबल है जो की केवल कल्पना में ही सम्भब है और काल्पनिक चीजों को इंसान इजी में चित्र या मूर्त्ति में रूपांतर कर सकता है; दूसरा पार्ट है की कुछ शास्त्र इस चरित्र को मानस पुत्र बताते हैं यानि मन से पैदा हुआ पुत्र यानि काल्पनिक यानि उनकी शास्त्र खुद ही बोलता है ये चरित्र काल्पनिक है । अगर ब्राह्मण इस काल्पनिक चरित्र से बने तो वह भी काल्पनिक होना चाहिए लेकिन वह है नहीं इसका मतलब ये खुद को काल्पनिक चरित्र से बना बताकर दुनिया को बेवकूफ और धोका दे रहे हैं और उस में स्वार्थी चीजें जोड़कर उसका लाभ और उसका मजा ले रहे हैं, यानि दुनिया को बेवकूफ बना के चुना और ठग रहे हैं । और मजे की बात ये है की ये बिना माँ के अपना एक बेटी सरस्वती पैदा करदिया और उसकी सुंदरता से मुग्ध हो कर उसको दौड़ा दौड़ा के उनसे जबरन शादी किया। अब

आते हैं इस चरित्र का लोजीकल एनालसिस पार्ट को; ये काल्पनिक चरित्र है, ये उनकी शास्त्र बोलता है; अगर इसको उसके अंधभक्त नहीं समझ सकते हैं तो वह उनका प्रॉब्लम है; ये चरित्र अगर काल्पनिक है तो ये काल्पनिक चरित्र कौन पैदा किया और ये चरित्र किस समय अबद्धि में पैदा हुआ? उदहारण के तौर पर स्पाइडरम्यान को लेते हैं । दुनिया में ब्रह्मा को जितना नहीं जानते होंगे उससे कहीं ज्यादा लोग स्पाइडरम्यान को जानते होंगे । अब अगर कोई बोलेगा स्पाइडरम्यान सच में एक्जिस्ट करता था और ये कई हजारों साल पहले पैदा हुआ था; तो क्या आप इसको स्वीकार करेंगे? सरल विश्वासवाले लोगों को कुछ भी बोल दो वह क्यों के सरल विस्वाशी होते हैं वह सायद विश्वास करलें; लेकिन इसको परिक्षण करने केलिए तार्किक प्रोसेस क्या है? पहले स्पाइडरम्यान की इन्फर्मेशन देनेवाले चीजों को इकठा करोगे । उस के स्टोरी से भी आप को उसकी टाइम लाइन का पता चल जायेगा जैसे स्पाइडरम्यान क्या यूज करता था; वह यूज करता चीज का आविष्कार कब हुआ था इत्यादि इत्यादि बस बिना सर्कमस्टान्सिअल येभीडेन्स से भी तार्किक यानि लॉजिकल इंटरप्रिटेशन से भी आप उस चरित्र का टाइम लाइन ढूंढ सकते हो और सबसे इजी तरिका है स्पाइडरम्यान की रचनाकार कौन है और वह कब पैदा हुआ था। अगर रचना कार का इतिहास जान लोगे तो वह कब पैदा हुआ था पता चल जाएगा; और ये समझना बहुत ही इजी है जब रचनाकार पैदा होगा उसके बाद में ही तो उसका काल्पनिक चरित्र पैदा होगा? आप उसके बाद स्पाइडरम्यान की कल्पनाकार को ढूंढोगे और इतिहास सही लिखी हो तो आपको हर आर्टिकल में सेम इन्फॉर्मेशन मिलेगा अगर गलत होगा अलग अलग मिलेगा और ऐसे हुआ तो आप उसके स्टोरी से ही उसकी टाइम लाइन का अंदाजा लगाना पड़ेगा; ये भी बहुत इजी है । स्पाइडरम्यान का केस में ये तो बहुत ही इजी है यानी आप कोई सर्च इंजिन में "क्रिएटर ऑफ़ स्पाइडरम्यान" सर्च करो आप को आराम से इसकी रचनाकार का नाम मिल जायेगा। स्पाइडरम्यान लेखक-संपादक स्टेन ली और लेखक-कलाकार स्टीव डिटक द्वारा बनाया गया एक काल्पनिक सुपरहीरो है जो 1962 में लोगों के सामने आया । अगर इस चरित्र को इससे ज्यादा अगर कोई बताता है तो वह झूठ बोल रहा है और एक धूर्त ठग है । मान लो आप को उसका कल्पनाकार यानी रचनाकार की इतिहास नहीं मिला आप उस चरित्र रचना का टाइम लाइन कैसे पता लगाओगे? वह भी आसान है स्टोरी में स्पाइडरम्यान कौनसा कौनसा चीजें इस्तेमाल करता है और उनका अबिष्कार कब हुआ था जानकर । वही लॉजिक ब्रह्मा के उपर डालते हैं। ब्रह्मा का इन्फर्मेशन आप ढूंढोगे तो आप को हजार तरह की एक्सप्लनेशन मिलेंगे क्यों की इसकी कभी सचाई का एक सोर्स ही नहीं है । एक ठग ने चरित्र पैदा करदिया दूसरे ने उसको बढ़ा चढ़ा के लिख दिया और असली चरित्र बनानेवाले का नाम आप को कहीं नहीं मिलेगा । इसका चित्र और मूर्त्तियां 900AD के बाद में ही मिलेंगे यानी ये चरित्र 900AD के बाद में ही जोरशोर से प्रचलन में आया । अब आप उसकी भेषभूषा और आभूषण से पता कर सकते हो इस काल्पनिक सोच का कालखंड क्या हो सकता है; हालां की उसके प्रचारक प्रेजेंट टाइम के हिसाब से उस को बढ़ा चढ़ा के दिखाते हैं; जैसे ब्रह्मा का किताब और पेन यूज करना, यानि मेटल और पेपर जब पैदा हुए होंगे उस कालखंड के बाद ही उसका कोई यूज कर सकता है। इस तरह उनकी अगर पहनाव को अगर डिकोड करो आप को उस चरित्र का एज लगभग पता चल जाएगा । यानि उनकी मेटाल/धातु का लोटा, रेशम के रंगीन कपडे, सोना का सुन्दर कारीगरी किया गया अलंकार इंसान किस काल खंड में इस्तमाल करता था उसका एज अगर आप पता कर लोगे वह काल्पनिक चरित्र उसी कालखंड में ही बना है; यानि ये चरित्र हाल ही कुछ सदियों पहले बना चरित्र है और ज्यादा पुराना नहीं है, जब की बुद्ध की प्रतिमा और उनकी विचारधारा इनसे कई ज्यादा पुरानी है । ब्रह्मा के हाथ में लोटा है यानि ये पानी का इस्तमाल करते थे यानि ये पानी पिने केलिए या शौच करने केलिए भी हुआ होगा ना? तो ब्राह्मण ये भी बता दो ब्रह्मा उन के चार हाथों में से कौनसा हाथ में अपना मल धोया करते थे? मल धोना तो शूद्रों का काम हैं ना? क्या अपना मल वह पैरों से धोया करते थे? क्यों

के इंडिया के ब्राह्मण ही इस काल्पनिक देवादेवियां और जातपात सोच का विचारधारा को ज्यादा फैलाते हैं बिना सक में हम कह सकते हैं ये धूर्त कोई और नहीं ये ब्राह्मण ही हैं । ब्राह्मण का असली अर्थ "बलि देने वाले लोग" है । कुछ मुर्ख वैदिक विद्वान बोलते हैं ब्राह्मण वह है जिसको ब्रह्म यानि जीवन या आत्मा का बोध हो, अगर ऐसा होता ये ब्राह्मण नहीं "ब्रह्मोध" कहलाते । ब्राह्मण ब्रह्म और हण सब्द योग से पैदा एक सब्द है; ब्रह्म का मतलब जीवन या आत्मा; और हण का मतलब हत्यारा होता है; यानि ब्राह्मण का असली अर्थ जीव हत्यारा या जीव को बलि देनेवाले लोग होता है । इसका प्रमाण खुद पुरुष सूक्त 10.90 है; क्यों के बली देनेवाली सोच वैदिक विचारधारा की है और पुरुष की बली से उनकी जात और जातिवादी समाज बनी है; वह ब्राह्मण खुद पुरुष के मुख से बने है ये उसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। ये केवल जीव या इंसानों को बलिदेनेवाले धूर्त नहीं है, ये इंडिया का सबसे पुराना प्रमुख विचारधारा बौद्ध धम्म और उनके सन्यासों का वली देने वाले हत्यारे हैं । हर भाषिय सभ्यता के धूर्त्तों का गठबंधन यानि धूर्त्तों की संगठित ठगबंधन ही ब्राह्मणवाद है । आर्य एक पाली शब्द है जिसका मतलब श्रेष्ट होता है, इस शब्द का कोई रेस से कुछ भी समबन्ध या मतलब नहीं; लेकिन धूर्त्तों ने आर्य का मतलब को कहीं दूसरे भूखंड से आये महान रेस खुद को बताकर लोगों में भ्रान्ति/भ्रम भरी हुयी है । जिसको उनके द्वारा बनाये गए भिक्टिम यानि बकरे/भेड़ जिनका नाम वह शुद्र और अतिशूद्र रखा है वह हमेशा उनको दुशरा भूखंड का बताकर हमेशा गाली देते रहते हैं; लेकिन उनको क्या पता ये धूर्त बिदेशी नहीं देशी शातिर धूर्त है । अगर ये बिदेशी होते ये उस भूखंड का भी इस भूखंड का जैसे सत्यानाश नहीं करदिया होता? जो करोड़ करोड़ झूठी काल्पनिक देवादेवियां बना सकते हैं, जो बौद्ध धर्म और बुद्ध को बदनाम करने केलिए उनका जैसे एक नंगा काल्पनिक चरित्र महावीर और जैन धर्म पैदा कर सकते हैं उन जैसे धूर्त्तों कलिये एक झूठा रेस यानि आर्य रेस खड़ा करना कौनसा मुश्किल बात है? जो की असलियत में हमारा देश का देशी ठगों और धूर्त्तों का रेस है । गोबर की प्याकेट को आप अमृत बोलकर मार्केटिंग करना और उसकी पॉपुलरिटी को 100% लोगों में भरदेना जो बात है वही बात इन ठगों और धूर्त्तों ने खुद को इलाइट ग्रुप यानि आर्य रेस बताकर लोगों को अच्छी तरह से चुना लगाया है, और लगाते आ रहे हैं; और अंधभक्त उनकी चुना लगाने को धर्म, संस्कार और संस्कृति कहते हैं । वंशवाद वृत्तिवादी मनसा रखनेवाले मूलनिवासी जो चाहते थे अच्छे अच्छे वृत्तियाँ वह और उनके पीढ़ियाँ ही करें और समाज का शासक बर्ग वह और उनके पीढ़ियाँ ही कोई प्रतियोगिता के बिना, सदियों बने रहे वही मानसिकतावाले स्वार्थी, झूठे, मक्कार, ठग, चाटुकार, पाखंडी, चोर, धूर्त, कपटी, उपद्रवी, बाहुबली, बेईमान, अपराधी श्रेणी के मूलनिवासी के पूर्वजों ने ही बहुदेववाद मूर्त्तिपूजा और वर्णवाद का विचारधारा बना के यहाँ का असली प्रमुख विचारधारा बौद्ध धर्म को ध्वंस किया और अपने ही भोले भाले मूलनिवासियों के उपर अपने स्वार्थी उपद्रवी वैदिक विचारधारा थोपके उनको अपना गुलाम बनाया । जातिवाद विचारधारा को बिभिन्न भाषिय सभ्यता का स्वार्थी, शातिर, कपटी, चतुर, चमचे, झूठे, मक्कार, ठग, चाटुकार, पाखंडी, चोर, धूर्त, उपद्रवी, बाहुबली, बेईमान, अपराधी श्रेणी के मूलनिवासी ही अपना चरित्र के हिसाब से इसको अपनाकर ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य में बंटे हुए है और अपना अपना एक उप संप्रदाय कर्मजीविका का काल्पनिक श्रेणी के आधार पर विचारधारा का वर्ग बनाया हुआ है । वैदिक जातिवादी विचारधारा सम्पूर्ण रूप से बृत्ति सरंक्षण, तुष्टिकरण और छल बल से मासूम लोगों को गुलाम बनाकर सदियों डाइनेस्टी संप्रदाय राज करने की सोच का एक विचारधारा है यानि एक साम्प्रदायिक पोलिटिकल सोच है जो बौद्ध धर्म को पतन करके यह लोग धर्म के नाम में फैला के अबतक ये स्वार्थी, झूठे, मक्कार, धूर्त, ठग, चाटुकार, पाखंडी, चोर, कपटी, उपद्रवी, बाहुबली, बेईमान, अपराधी श्रेणी के मूलनिवासी ही आजतक राज करते आ रहे हैं । वैदिक धर्म में सबर्ण यहाँ पर कोई विदेशी नहीं सब स्वार्थी, झूठे, मक्कार, धूर्त, ठग, शातिर, चाटुकार, चोर, कपटी, उपद्रवी, बाहुबली, बेईमान, अपराधी श्रेणी के मूलनिवासी पूर्वजों के वंशज है । हो सकता है इन के अबकी पीढ़ियों को ये पता नहीं लेकिन

सचाई यही है । भ्रष्ट इतिहासकारों और साहित्यकारों ने देश की पीढ़ियों का अपनी घटिया सोच से हमेशा झूठ बोला और आजतक इस सच्चाई को छुपाया हुआ है और असली बात कभी बताया ही नहीं । प्राचीन इंडिया के असामजिक मूलनिवासी जैसे डाकू, चोर, शातिर, धूर्त, ठग और बेईमान किसम के लोग बौद्ध धर्म में घूसे और पाखंडी धर्मवादी बनकर उसको शातिरानापन से तोडा । बहुत सारे सच्चे बौद्ध सन्यासों की हत्या की और कुछ बेईमान बौद्ध सन्यासों ने अपनेआप अपना हाथ उठालिया और उनके विचारधारा के दास बनगए और जातिवादी पुजारीवर्ग बनकर बौद्ध धर्म को नष्ट भ्रष्ट करने में मदद किया । जातिवाद को प्रमोट करनेवाले ब्राह्मणों में 3 तरह का मूलनिवासियों का संगठित गठबंधन हैं; 1-जिन्होंने ये विचारधारा बनाया यानि डाकू चोर लुटेरे ग्यांग, 2-जो बौद्ध सन्यास मौत के डर से या लोभ से इसमें शामिल हुए और इस विचारधारा को शेप एंड साइज देकर बौद्ध धर्म को ही ख़तम करने की मदद किया जिस केलिए आग की तरह बौद्ध धर्म नष्ट हुआ और जातिवाद फैलता गया; और 3- धूर्त मूलनिवासी जो चोरीछुपे ब्राह्मण क्लास में इसलिए शामिल हुए ताकि इस क्लास का पाये जानेवाले फ़ायदा उठाया जा सके। उनके अब के पीढ़ियों को इसलिए पता नहीं क्यों के विचारधारा उनके पूर्वजोंने बनाई और अपनाई थी वह नहीं । अगर इस विचारधारा को क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र बनाते तो वह अपने आप को श्रेष्ट में रखते; इसलिए ब्राह्मण कहेजाने वाले लोग ही सबसे बड़ा धूर्त हैं और क्यों के उनकी विचारधारा जातीय व्यबस्था पर आधारित है इशलिये उनका धर्म को जातधर्म/ब्राह्मणवाद/जातिवादी धर्म/मिनातन/वैदिक धर्म कहना चाहिए हिन्दू धर्म नहीं । पाली शब्द शिन्दु से बना हिन्दू सामाजिक पहचानवाला मूलनिवासी का, पेशे करनेवाला बच्चे की जात यानि जन्म के साथ पेशे से कोई सम्बन्ध नहीं; सीबाये पाली शब्द जात यानि जिसका अर्थ जन्म है यानि इंसान का बच्चा; और बौद्ध धर्म से यानि ये धर्म अवर्ण यानि बिना जातीय व्यबस्था का धर्म है; यहाँ पेशा का स्वतंत्रता है, और कोई भी इंसान अपने बुद्धि यानि शिक्ष्या, काबिलियत यानि योग्यता के द्वारा कोई भी पेशा कर सकता है । कोईभी पेशा करनेवाला इंसान के घर में पैदा इंसानी बच्चा अपना पिता का अपनाया हुआ पेशा ही वंशवादी पेशा के तौर पर करेगा इस जैसे घटिया विचारधारा की कोई स्थान नहीं । ब्राह्मणों ने अपना पेशा को बंशवादी इसलिए बनाया क्यों के वह और उनके पीढ़ियां बिना योग्यता के लोगों को पत्थर का काल्पनिक मूर्त्ति दिखाके जो पैसा कमाना था? जिसकेलिए वह योगता को अपने जन्म से जोड़ा जिस केलिए उनके बच्चों को प्रतियोगिता का सामना करना नहीं पड़े, और सिक्ष्या को अपने हाथ में रखा ताकि उनको छोड़ कर कोई दुसरा क्लास उनसे ज्यादा पढ़ालिखा नहीं बनजाये; पेशा की स्वतंत्रता को इसलिए रोका ताकि कोई और उनके प्रोफेसन में घुस नहीं पाए; कभी अपने देखा है कोई ब्राह्मण की बच्चा कोई परीक्षा के कसौटी पर अपना प्रोफेसन करते हुए? 99.99% अंधभक्त तो उनकी संस्कृत ही समझ नहीं सकते; में तो 100% निश्चित हूँ ब्राह्मणवाद एक काल्पनिक सोच की वीचारधारा है और तरह तरह के भाषिय सभ्यता के जातिवाद पुजारी बर्ग इन भाषिय सभ्यता के शातिर ठगों का सामूहिक गठबंधन है; ये धूर्तों की ठगबंधन ही समूह स्वार्थ केलिए इस वीचारधारा का प्रमोसन करते रहते हैं और उन में ज्यादातर पुजारी जिनके लिंगुइस्टिक रेस अलग होने के कारण उनकी मातृभाषा अलग अलग है वह संस्कृत समझे बिना इसका रट्टा लगाते हैं; सायद इन में से 99% लोगों को पांच मिनिट संस्कृत में अपना भाव व्यक्त करना भी नहीं आएगा और उस में सायद 99.99% ब्राह्मणों को अपनी देवादेवियों का भाषा संस्कृत ही समझ में नहीं आएगा । तथा कथित सरकारी आंकड़े के अनुसार 2001 का जनगणना में करीब 14,135 लोगों ने संस्कृत को अपनी मूल भाषा बताया; लेकिन में स्योर हूँ आंकड़े इससे भी कम होंगे । अगर आजका डेट में इसको 30 हजार भी मान लिया जाये तो ये इंडिया का 140 करोड़ जनसँख्यावाले देश में ये केवल 0.002% हैं यानि इंडिया का 99.99% लोग इस भाषा को समझ ही नहीं पायंगे । अगर हमारा देश का आज की ब्राह्मणों की जनसँख्या को करीब 6 करोड़ मानलिया जाये तो उनके क्लास से ही केवल 0.05% इस भाषा को कुछ हद तक बोल पाएंगे

बाकि का 99.95% तथा कथित ब्राह्मण ना इस भाषा को ठीक से समझ पाएंगे ना बोल पाएंगे । अगर आप आपकी जातिवादी देवादेवियों का भाषा संस्कृत समझ ही नहीं पाते हो; तो आप सब नकली हो; इस केलिये कोई बड़ी तर्क नहीं चाहिए इन धूर्त्तों को झूठा साबित करने केलिये! क्यों के उनका संस्कृत को नहीं समझना और नहीं बोलपाना ही प्रमाण कर देता है की ये सब झूठे और ठगों की पीढ़ियां हैं । रट्टा लगाकर चीजें याद रखी और पुनराबृत्ति किया जा सकता है; इससे बुद्धिवान बना नहीं जा सकता, ऐसे ज्ञान के बातें तोता को सीखा दो वह भी रट्टा हुआ ज्ञान के बातें करलेगा; लेकिन क्या वह उसको समझ सकता है? यही है इनके पीढ़ियों का साथ; इनके 1% भी से कम, जो इस विचारधारा के प्रोग्रामर हैं उनका पास इसका असलियत का नोलेज है, बाकी के सब रट्टामार तोता हैं । अगर उनके हिसाब से पुजारी का बच्चा अगर पुजारी बनेगा; डॉक्टर, इंजीनियर क्यों बनते हैं? उन मूर्खों की विचारधारा के अनुसार एक डॉक्टर का बच्चा डॉक्टर ही बनना चाहिए और एक इंजीनियर का बच्चा इंजीनियर; अगर वह पढ़ के इंजीनयर या डॉक्टर नहीं बन पाया क्या उसके बच्चे का नाम के पीछे का सरनेम डॉक्टर या इंजीनियर लगाओगे? क्या मूर्खता है! ब्राह्मण बस वही करते आ रहे हैं सरनेम में झूठी सामाजिक सर्बश्रेष्ट होने का रिज़र्वेशन रखी हुयी है और उसका वंशवादी फायदा आजतक उठाके दूसरों को उल्लू बनाते आ रहे हैं जब की सबसे ज्यादा ठग, धूर्त अयोग्य और निक्क्मे यही हैं । क्यों के धूर्तता से उनकी वर्चस्व सबके उपर है इसलिए हर चीज पर अपनी पहला अधिकार पकड़ी हुयी है । अगर किसीका पिता हत्यारा या बल्तकारी है ये जरुरी थोडिना है उसके संतान या उसके पीढ़ियां वही करेंगे और उसके जैसे ही होंगे और उनके सरनेम में हत्यारा या बलत्कारी का कोड लगाकर पीढ़ियों का बताते चलेंगे उनका पूर्वज कोई हत्यारा या बलत्कारी था? अगर नहीं तो इस जातिवाद को ये तथाकथिक जातिवादी छोड़ते क्यों नहीं है? हिन्दू महासभा, RSS, ABVP जितने भी सो कॉल्ड आज के हिन्दू संगठन हैं ये सब जातिवादी संगठन हैं यानि ये नकली हिन्दू हैं । हिन्दू महासभा और RSS के इन्ट्रैक्चुअल्स मुर्ख हैं और उनको हिन्दू का मतलव भी पता नहीं है और ये बनादिये स्वयंघोषित हिन्दुओं का ठेकेदार का संगठन; ये असलियत में हिन्दू संगठन नहीं जातिवादी संगठन हैं; ये असलियत में हिन्दू राष्ट्र नहीं जातिवादी राष्ट्र बनाना चाहते हैं; हिन्दू शब्द का ऑरिजिन और उसका अर्थ इनके कुछ पूर्वज इंटेलेक्चुअल्स को भी पता ही नहीं था और ये सावर का लेख "हिन्दुत्व: में हिन्दू क्यों हूँ" से स्पष्ट पता चलता है, क्यों के उस में उन्होंने ना उस शब्द के उत्पत्ति के वारे में बताया है, ना उसकी सही अर्थ बताया; खुदका एक काल्पनिक अर्थ बताकर अपना मतलव की बात बताई जब की ये ठेकेदारी असलियत में जातिवाद का करते हैं । RSS और BJP का पिता सावरकर का "हिन्दुत्व: में हिन्दू क्यों हूँ" में कहना है की ब्राह्मण और वेद यानि ऋगवेद में जो पुरुष शुक्त 10.90 में जातिवाद क्या है बोला गया है उसकी सरंक्षण जरुरी है; यानि वर्ण के साथ साथ ब्राह्मणों की सुरक्षा भी जरुरी है उसका उपर जोर दिया हुआ है और ये है उनकी हिन्दुत्व । इंडिया का कांग्रेस हमेशा जातिवादियों प्राधन्य पोलिटिकल पार्टी रहा और इस पार्टी से निकले धर्मान्ध, कट्टर रूढ़िवादी अलगाववाद और जातिवादी विचारधारा के पोलिटिसियन्स ही हिंदूमहासभा और RSS जैसे संगठन बनाया जिसका पोलिटिकल विंग BJP है । इसलिए उनके मकड जाल से अगर निकलना है तो उन की जातधर्म बनाम जातिवादी धर्म बनाम ब्राह्मणधर्म को छोडो और खुद को हिन्दू कहो लेकिन अवर्ण हिन्दू, पाखंडी हिन्दू नहीं यानि कहने का मतलब खुद को हिन्दू का मतलब सागरों से घिरा हुआ नदियों की भूखंड का निवासी बताओ और खुद को सत्य, वास्तबता, तर्क, विज्ञान, इंसानियत और नैतिकता यानि सही और गलत का ज्ञान से जोड़ो; इस केलिए कोई विचारधारा का गुलाम बनना जरुरी नहीं; वैसे असली हिन्दू उपनाम वौद्ध विचारधारा; विचारधारा की गुलामी से कैसे आजाद हो उसका ही विचारधारा है, ये गुलाम बनानेका विचारधारा ही नहीं है; इसलिए गुलाम करनेवाले विचारधारा इसका खात्मा छल और बल से करदिया । जिनके दिमाग में गोबर भरा हो यानी गौब्रान्डु वाले जिनको हिन्दू का मतलब पता नहीं वह बन बैठे हैं स्वयंघोषित जातिवादियों का

ठेकदार और मकसद ब्राह्मणों का रूलिंग राष्ट्र बनाना है; जिस में कौन असली ब्राह्मण है और कौन नकली उसपर भी एक बड़ा प्रश्न है। इनका असली मकसद जातिवाद राष्ट्र है हिन्दू राष्ट्र नहीं, ये हिन्दू के नाम पर वर्णवाद बनाम जातिवाद का सामाजिक सरंक्षण करना चाहते हैं । अगर हिन्दू का असली अर्थ इनको बताओगे और हिन्दू को बौद्ध विचारधारा से जोड़ोगे में 100% कन्फिडेंट हूँ ये खुद को हिन्दू कहना भी छोड़ देंगे; क्यों के इन को जातिवाद का लाभ उससे नहीं मिलेगा, इसलिए ये कोई और चालाकी का गेम खेलके आप को उल्लू बनाएंगे । ये याद रखियेगा ये खुदको जितना भी शातिर बनाते चलेंगे वह अपनी और अपनी पीढ़ियों को उतना ही मानसिक विकृत बनाते जायेंगे । कहने का मतलब ये है के ये धूर्त जितने भी शातिर बनें ज्यादा नुक्सान खुदका और अपने पीढ़ियों के साथ साथ भूखंड में रहनेवाले गैरजातिवादी और गैरब्राह्मणों का ज्यादा करते हैं । वह ऐसे; समय के साथ साथ इनकी पीढ़ियां उनके धूर्त पूर्वजों का झूठ, भ्रम, अज्ञानता, अन्धविश्वाश, तर्कहीनता, इंसानी भेदभाव और हिंशा जैसे प्रमुख विचार से बनाया हुआ अपनी काल्पनिक देवादेवियों का विचारधारा जातिवादी धर्म को जितना बढ़ाचढ़ा के फैलाएंगे वह और उनके पीढ़िया उनके ही विकृत सोच का दुनिया का ज्यादा शिकार होते चले जायेंगे और समय के साथ ये और भी ज्यादा मानसिक विकृत बनते जायेंगे यानि ASPD यानि Antisocial Personality Disorder अर्थात असामाजिक व्यक्तित्व विकार का शिकार बनेंगे यानि ये उतना ही झूठ, भ्रम, अज्ञानता, अन्धविश्वाश, तर्कहीनता, इंसानी भेदभाव और हिंशा जैसे प्रमुख विचार का शिकार बनेंगे जिससे समाज और भी विकृत होता चला जायेगा जिससे उनके विचारधारा को नहीं माननेवाले लोग भी प्रभावित होंगे । ये हमेशा याद रखना ब्राह्मणवाद बनाम जातिप्रथा/जातिवाद एक वैचारिक श्रेणी का विचारधारा है कोई DNA रेसिअल श्रेणी नहीं; ये आप आजके डेट में DNA टेस्ट करके भी प्रुभ कर सकते हो । कश्मीर ब्राह्मण का साथ केरला या तेलुगु ब्राह्मण का कोई DNA रेस का कनेक्शन नहीं; वैसे ही कश्मीर क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र का साथ केरला, तेलुगु अन्य कोई भी भाषिय सभ्यता के क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र का कोई DNA रेस का कनेक्शन नहीं । बस ये एक गन्दी सोच का डेल्युजनाल वैचारिक श्रेणी है; जो अपने क्लास की भाषा को भी समझ नहीं सकते; यानि कहने का मतलब पंजाबी भाषी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र केरला की ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र अपने अपने क्लास का भाषा को भी समझ नहीं पायेगा तो इनका क्लास सोर्स एक कैसा होगा? हर जाति का क्लास एक एक वैचारिक सोच का पिंजरा है और हर वैचारिक सोच के पिंजरें में रहने वाले इंसान को दूसरा वैचारिक पिंजरें में प्रबेश मना है। हमारे देश में कई भाषिय सभ्यता हैं; और उनके ही धूर्त, ठग और चालाक/शातिर मूलनिवासियों का गठबंधन ही ब्राह्मण समाज है जिसको साथ दिया हर भाषिय सभ्यता के उपद्रवी और बाहुवली श्रेणी मूलनिवासियों का गठबंधन जिसको हम क्षत्रिय कहते है और जो बेईमान, चालाक/शातिर और ठग श्रेणी बहु भाषिय ब्योपारी मूलनिवासियों का गठबंधन था उन्होंने अपने आप को वैश्य बताया और ऐसे ही असामाजिक श्रेणी के पूर्वज जो ज्यादातर झूठे, मक्कार, बेईमान, उपद्रवी या बाहुवली श्रेणी के लोग थे उन्होंने वैदिक विचार का जातिप्रथा अपनाके बौद्ध धर्म को नष्ट किया और वैदिक समाज के शासक वर्ग बनगए । उन्होंने हर चीज, संशाधन और ऑपर्च्युनिटी पर उनका वर्चस्व कायम किया और आजतक यहाँ के बौद्ध सभ्यता को गुलाम बनाके रखा है । अपना घर की सत्रु यानि देशी दुश्मन ही बाहरी आक्रांताओं से कई ज्यादा खतरनाक है जो धर्म के चादर में अपने आपको ढका रखा है । इन असामजिक मूलनिवासियों ने इस धरती का असली मूल विचारधारा बौद्ध विचारधारा को नष्ट भ्रष्ट करके लोगों को झूठ, अंधविश्वास और अज्ञानता का मानसिक बीमार और उनकी गुलाम बनादिया । अपनी काल्पनिक भ्रम वाला झूठी धर्म को बौद्ध धर्म से ज्यादा पुरानी बताकर यहाँ के लोगों को सदियों मानसिक विकृत बनाया और आजतक धर्म को धंदा बनाकर इसको एक पोलिटिकल टूल के तरह यूज करके “फुट डालो राज करो” गेम खेलते आ रहे हैं । लोग जितने सेक्ट और सब सेक्ट में बंटेंगे उतना ही उनका गठबंधन यानि एकता कमजोर होगा जिसका फ़ायदा

उठाया जा सकता है । यही कारण है की हमारा देश बौद्ध विचारधारा के राजाओं के अधीन से राज जाने के बाद असामाजिक मूलनिवासियों के द्वारा बनाया गया स्वार्थी वर्णवाद का शिकार हुआ और ये विचारधारा अपने ही बुद्धिजीविओं को ख़तम करता गया और असामाजिक मूलनिवासी सभ्यता के शासक वर्ग बन बैठे । इसलिए कुछ लोग बोलते है देश की अबके शासकों में 100 में 99 बेईमान फिर भी मेरा देश महान; क्यों के इनके विचारधारा फुट डालो राज करो था इसलिए एक बड़ा वर्ग कभी भी संगठित हो नहीं पाया और ये भूखंड बाहरी आक्रांताओं का शिकार हुआ । घरके दुश्मन ही बाहरी आक्रांताओं से बड़ा खतरनाक निकले । जातिवाद विचारधारा को तरह तरह की इंडियन भाषिय राजाओं का सभ्यता ठीक उसी तरह अपनाया होगा जैसे एक विचारधारा या पॉलिटिकल पार्टी दूर कहीं दिल्ली में बनता है और उसके प्रसार होने का बाद देश का हर कोने में उसके पोलिटिकल नेता, उनका कार्यकर्ता और भोटर बनजाते हैं । ब्राह्मणवाद यानि वर्णवाद ही हमारा देश का असली दुश्मन और सबसे बड़ा अंधविस्वास है । जितना जल्दी हो इस दुश्मन का खात्मा करना जरुरी है और ये चीज सत्य को उजागर यानि थिओफिलिआ और थिओप्लेसिबो क्या है उसको लोगों को समझाकर; और वर्णवादियों को अवर्ण बनाकर किया जा सकता है । ये याद जरूर रखें ब्राह्मण एक विचारधारा है यानि एक सोच है; इसका कोई भी DNA वाला रेस नहीं है; ये लोग हमारे भूखंड के ही अपने लोग हैं और ये पीढ़ीगत मानसिक विकृति से ग्रसित हैं इनकी रिकोभरि भी जरुरी है; क्यों के वैदिक पुरुष शुक्त १०.९० का वर्णवाद एक इंसान को एक विशिष्ट इंसान का प्रमाणपत्र देता है ये प्रमाण पत्र वही हथिया लेता है जो बड़ा धूर्त हो । इसलिए ज्यादातर धूर्त, कपटी और बेईमान किसम के मूलनिवासी ही ब्राह्मण बने हुए हैं । ब्राह्मण होनेका कोई बायोलोजिकल जन्मगत प्रमाण नहीं होता है लेकिन सामाजिक जन्मगत प्रमाण होता है यानि जो पहले से ब्राह्मण का सर्टिफिकेट हथिया लिया है वह उस समाज में अपने आपको ब्राह्मण बोलकर प्रतिष्ठित करता है; ऐसे कोई भी रेजिस्टर मेंटेन नहीं होता है असलियत में कौन बायोलॉजिकली ब्राह्मण है; और, बायोलॉजिकली सब इंसान होते है कोई जातिवादी या मुस्लिम, बौद्ध, सिख, ईसाई, जैन या ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और अतिशूद्र नहीं; ब्राह्मण इंसान की बनायी एक सामाजिक पहचान है । कोई भी भाषिय सभ्यता का धूर्त दूसरे क्षेत्र और भाषा का आडॉप्शन करके और ब्राह्मणवाला सरनेम अपनाके खुद को ब्राह्मण घोषित करके उस विचारधारा को आगे बढ़ा सकता है, और वैसे ही होता आ रहा है । बेईमान बौद्ध सन्यासों के कुछ पीढ़ियां जो शादिशुदा दाम्पत्य जीवन अपनाके ब्राह्मण बने हुए थे और उनके वजह से ही इंडिया में आग का जैसे बौद्ध धर्म गायब हो गया है उनके पीढ़ियों को सुधरना जरुरी है; उसके इलावा ब्राह्मणो में किसी भी तरह के विचारधारा या भाषिय सभ्यता के छद्मधारी लोग जो इस में घुले हुए हैं और उनका ही प्रभाव ज्यादा है, उनको भी सुधरना है और सबसे बड़ी बात इनकी एक्सपोज होना सबसे बड़ा जरुरी काम है । इंडिया का करीब 6 करोड़ ब्राह्मणों में कई लोग गरीब हैं जो कभी पुजारी का काम करते है तो किसीका घर में रसोई करते हैं या कोई दूसरे काम करते हैं, क्यों के ये जरुरी नहीं हर धूर्त पूर्वज का पीढी धूर्त ही निकले; वही कारण है जो धूर्त नहीं बन पाते वह गरीब बनजाते हैं और उनके पूर्वजों की बनायी गयी मायाजाल का शिकार भी वह बन जाते हैं; लेकिन जो देश को रूल करते हैं वह ब्राह्मण असली है या नकली हैं या मौकापरस्त ठगों का बंसज है जिन्होंने कभी इस कुलीनवर्ग होने का फ़ायदा उठाया होगा वह जांच का बिषय है; इसलिए ब्राह्मण वर्ग कुलीन वर्ग के नामपर सबसे बड़ा धूर्त गठबंधन हैं । आप को निचे दिए गए लेख में कुछ ऐसे सिंपल टिप्स मिलजाएँगे जिससे की आप उनके सरनेम से ही पता लगा पाएंगे कौन असली है कौन नकली है और कौन बौद्ध धर्म से रूपांतरित ब्राह्मण हैं । वेद के अनुसार चार वर्ण है; वह है ब्राह्मण यानि पुजारी वर्ग जो खुद को ब्राह्मण बोलकर संस्कृत में निर्जीब मूर्त्तियों को सम्बाद करते हैं यानि असलियत मैं बौद्ध विरोधी धूर्त ठग मूलनिवासी हैं, और मिनातन धर्म यानि वैदिक धर्म या वैदिक विचारधारा का सृष्टिकर्त्ता और प्रचारकर्त्ता हैं । हां, आप को ये भी बतादूँ वेद भी पाली शब्द

वेदना से पैदा एक सब्द है जिसका मतलब भावना, संवेदना, अनुभूति, पीड़ा इत्यादि होता है । यानि वेद शब्द भी उनकी नहीं बौद्ध भाषा पाली से पैदा हुआ एक सब्द है । जैसे की मैने बताया ब्राह्मण ब्रह्म+हण शब्द योग से पैदा एक शब्द है ब्रह्म का मतलब जीवन या आत्मा यानि जीव से सम्बंधित है और हण का मतलब हत्यारा होता है; यानि ब्राह्मण का मतलब असलियत में जीव हत्यारा यानि बलि देनेवाले लोग होते हैं जो उनके कपोल कल्पित देवादेवियों के सामने इनोसेंट आनिमल का बलि देते हैं; और उनके विचारधारा में भी इंसानो की बलि देने का सोच है, क्यों के पुरुष के बली से ही ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र पैदा हुए हैं ये उसका प्रमाण है; और बलि वेदना यानि पीड़ा से सम्बंधित है । वैदिक विचारधारा बनानेवाले धूर्त मुलनिवाशी बौद्ध विरोधी थे क्यों के बौद्ध विचारधारा जीब बलि का बिरोधी, गॉड/सृपासं विरोधी और मानव समानता और इंसानियत का विचारधारा/सोच था और वैदिक विचारधारा उसका उलट जीब को बलि देनेवाला, काल्पनिक गॉड/सृपासं को माननेवाला, लोगों में भेदभाव यानि असमानता पैदा करके वर्चस्व कायम करना जैसे असामाजिक सोच/विचारधारा था; यानि ब्राह्मण मतलब बुद्धि का हत्यारा यानि बुद्धि का दुश्मन इसलिए असली ब्राह्मण बुद्धि/वौद्ध विरोधी मुलनिवाशी ही थे जिन्होंने अपने आपको सबसे ऊँचा रखा और आपने स्वार्थ हित को सर्बोच्च रखकर ही विचारधारा की रचना की; जो सरनेम वेद से जुड़े हुए मिलेंगे वह ही असली गद्दार बेईमान धूर्त मक्कार बौद्ध विरोधी मूलनिवासी ब्राह्मण हैं और उनका पीढ़ियों के नाम ही वेद से ज्यादा जुड़ा हुआ मिलेंगे जैसे त्रिवेदी और चतुर्वेदी इत्यादि; और ये भी ध्यान रखें सरनेम आडोप्ट भी किया जा सकता है, और जिन्होंने आडोप्ट की होंगी या विवाह के कारण सरनेम आडोप्ट की होगी आपको उस ही हिसाब से उनकी लाइनेज को भी सोचना होगा । पूर्वज धूर्त थे इसका मतलब ये कतई नहीं उनका हर पीढ़ी के बच्चे सब धूर्त ही निकलेंगे । में बार बार कह दूँ ब्राह्मणवाद एक काल्पनिक विचारधारा की वर्ग है, जो इस सोच या विचारधारा से बाहर या विरोधी है वह हो सकता है सरनेम के कारण ब्राह्मण का सामाजिक पहचान पाया हो, लेकिन चरित्र से ब्राह्मण नहीं है । देश में पायेजानेवाले करीब 6 करोड़ ब्राह्मणों में, इसमें कौन असली विचारधारा की असली वाहक ब्राह्मण हैं, कौन जबरन ब्राह्मण बनने को मजबूर हुए या बनादिये गए और कौन धूर्त मूलनिवासी, ब्राह्मणों को मिलती सामाजिक लाभ से प्रलोभित हो कर मौका देख कर चौका लगाया और खुद को ब्राह्मण बनालिये इसका पहचान उन की सरनेम डिकोड करके करनी है । क्यों के इंडिया बौद्ध धर्म का जन्मदाता और बौद्ध भूखंड रहा यहाँ करोड़ों में बौद्ध सन्यास और उनका प्रमुख प्रमोटर्स रहे होंगे और जब ब्राह्मणवाद विचारधारा फैला इन में से कई खुद को कनभर्ट किया होगा और जो नहीं हुए होंगे उनकी हत्या या उत्पीड़न किया गया होगा; इसलिए उन में से कुछ जबरन अपने आपको ब्राह्मणवाद का हिस्सा बनाया होगा। ब्राह्मणवादी सोच बौद्ध धर्म में घुसे होंगे और बौद्ध धर्म को फ्याबरिकेट और नष्ट किया होगा और बेईमान बौद्ध प्रमोटर्स जो की ज्यादातर बौद्ध सन्यास ही थे वह उनका साथ दिया होगा जिसलिये वैदिक धर्म आग के जैसे इंडिया में फ़ैलगया होगा और बौद्ध धर्म नष्ट, भ्रष्ट और खतम हो गया होगा । आप पूछ सकते हो में किस आधार पर ये बोलता हूँ जातिवादी विचारधारा में प्रमुख किरदार बेईमान बौद्धों का भी है? वह इसलिए इनके कुछ प्रैक्टिस पैटर्न और मोटिभ से; वह ऐसे वेद बलि यानि जीव हत्या करने का सपोर्टर है; और इनके वर्ण यानि चार कॉस्ट भी पुरुष को बलि देकर ही पैदा किया गया है। बलिदेने का प्रथा वेद में दीखता है जैसे गोमेध यानि गाय को बलि देना, अश्वमेध यानि घोड़े को बलि देना और पुरुषमेध यानि इंसान को बलिदेना इत्यादि इत्यादि और तो और वेद में यहाँ तक भी लिखा है देवताओं का राजा इंद्र को सोमरस यानि सराब पिने के साथ साथ सांढ़ और बछड़े का मांश अच्छा लगता था; तो ये गायों को बचाने की मुहीम क्यों छेड़े हुए हैं? यानि इनमें से कुछ बलि या जीव हत्या का विरोधी भी हैं यानि इनमें से कई पुजारी बौद्ध विचारधारा की पंचशील निति का पालन करते हुए साफ़ साफ़ नजर आ जायेंगे लेकिन प्रमोट बौद्धविरोधी जातिवाद को करते हुए नजर आएंगे जो की पैटर्न मिसमैच है; इनका कईओं का पूर्वज

बौद्धों के जैसे भिक्ष्या करके पेट पालना का प्रथा भी किया करते थे; विष्णु का दश अवतार में मछली, कछुआ, जंगली सूअर को इसलिए विष्णु का अवतार बताया होगा ताकि अनुयाई इनके हत्या ना करें क्यों की इन में विष्णु बसते हैं जो की वेद विरोधी और बौद्धवादी विचारधारा है जिससे ये पता चलता है कुछ इन में प्रच्छन बौद्ध भी शामिल थे जो गंदे कुएँ में रहकर भी उसको साफ़ करने की कोसिस किया । 800AD के बाद केरल का जातिवादी प्रमोटर आदि शंकराचार्य ने भी गुंडागर्दी, छलबल, कपट, नारी और धन प्रलोभन, मौत के भय पैदा करके ही जातिवाद को फैलाया था और इंडिया में चारों मठों और कई अखाडाओं का स्थापना की जिससे वह बौद्ध विचारधारा को खात्मा और जातिवाद को प्रचार और प्रसार करने में सफल रहे; ये सब भगवा भेष में जातिवादी गुंडे थे और इनके अबके प्रमोटर्स असलियत में वही हैं और पाखंडी हिन्दू है । भगवा भी एक पाली शब्द है और बुद्ध का नाम है; भगवा का मतलव भग्न यानि नष्ट करना है; क्यों के बुद्ध अपने आष्टांगिक मार्ग से लोगों की मन और चरित्र की बुराइयां को नष्ट और ध्वंश यानी जला देते थे इसलिए उनको भगवा कहा जाता था और कुछ काल खंड में बौद्धों का बस्त्र आग का रंग का था जो बुराइयों को जलाने का प्रतिक था लेकिन ये आदि संकराचार्य के अनुयाई जातिवादी प्रसारक पाखंडी भगवा योगी, योगी नहीं सब भोगी हैं इनके इतिहास ढूंढो इनके कई कारनामे अपराध से लिप्त मिलेंगे । ये लोग कभी जनेऊ पहनते हुए नजर नहीं आएंगे क्यों के ये ब्राह्मणों से भी ऊंचा है; क्यों के ये उनके सरदार हैं । सो कल्ड प्रथा के अनुसार जनेऊ ये इसलिए पहनते हैं क्यों के उनको वेद पढ़ने का सबुत के तौर पर इस्तमाल होता है यानि इसको पहने से उनको वेद पढनेका प्रतिष्ठा प्राप्ति होती है और उनका द्वितीय बार जन्म होता यानि एक बार माँ की योनि से और द्वितीय बार वेद को पढ़कर ज्ञान की जन्म होने से; इसलिए उसको पहनकर उनको द्विज का सामाजिक पहचान दिया जाता है; लेकिन ध्यान देना ये जंगल में जो दश्यु या चोर लुटेरे ग्यांग होते थे और उनके शरीर पे जो हमेशा तीरों को रखने केलिए एक जगह यूज करते थे उसका ही प्रतिक है; यानि शिकारी का प्रतिक है यानि ये इनोसेंट लोगों को ही अपने विचारधारा से शिकार करते हैं । जनेऊ का वेद से क्या रिस्ता है! और ये प्रतिक वेद से जोड़ने का मतलब क्या है? ब्राह्मण होने का मतलव समाज में कुलीन प्रतिष्ठा के साथ साथ समाज को रूल करना है; और इसका कई लाभ है इसके वजह से इसमें कई नकली ब्रह्मण जो की मौका फरोश धूर्त ठग हैं जिन्होंने केवल ब्राह्मणों की पानेवाले सामाजिक लाभ केलिए अपनाया हुआ है; वह ही ज्यादा अब वैदिक धर्म को कंट्रोल करते आ रहे हैं । वर्णवाद का दुशरा वर्ग क्षत्रिय यानि जिसको क्षेत्र से आय मिलता हो यानि पूरा क्षेत्र का यानि कुछ भूखंड का एक मालिक हो और उसके क्षेत्र में रहनेवाले उसको रहने की तरह तरह की ट्याक्स देते हो यानि केवल राजा वह जातिवाद का ताकत भरा प्रचारक और प्रसारक है । तीसरा है वैश्य यानि बैठ बैठ के सप्लाई चेन से ब्योपार करके पैसा कमानेवाला ब्यापारी; इन तीन प्रमुख प्रफेसन को छोड़कर और जितने भी प्रोफेसन है वह सब शूद्र हैं यानि सेवक यानि गुलाम वर्ग । कुछ अगड़ी शूद्र खुद को शूद्र कहने से शर्म आति है; तो इन में से कुछ अपने आप को क्षत्रिय में अप्लिफ्टेड कर दिये हैं पतानहीं इनका कौनसा राज दरवार है; कुछ लोगों के घर में चूल्हे जलते नहीं होंगे लेकिन खुद को क्षत्रिय कहने में उनको बड़ा गर्व महसूस होता है; पता नहीं उनकी कौनसा राज्य है जो खुद को राजा का प्रतिक मानते हैं; धूर्त्त उनको क्षत्रिय यानि वीर पूर्वजों की पीढ़ियां बताकर उनसे अपनी स्वार्थ और धर्म की रक्षा के आड़ में तरह तरह के अपराध भी करवा लेते हैं और वे बेवकूफ खुद को क्षत्रिय प्रमाण करने केलिए अपराध में शामिल हो जाते हैं और अपराध करके उनका क्षत्रिय होनेका झूठी सामाजिक प्रतिष्ठा अपनाते हैं । कुछ तो एक पांचवी वर्ण बनाडाला है कायस्थ का; यानि ब्रह्मा के काया से बना वर्ण, यानि ब्रह्मा के नाभि से और एक वर्ण जो खुदको कायस्थ बोलकर बढ़ाचढ़ाके अपना वर्ण का प्रमोसन करते रहते हैं । जाट और राजपूतना ये दो भी ट्राइब अतिशूद्र यानी अछूत हुआ करते थे और ये वर्णवाद के चाहत में खुद को क्षत्रिय अपलिफ्टेड कर चुके हैं । राजपूतना यानि राजाओं की पूत/पुत्र;

अरे भाई क्या सारा ट्राइब राजाओं से भरा हुआ था! तो प्रजा कौन था? यानि ये ट्राइबवाले जातिवाद का लम्बा पारी मारी और पूरा ट्राइब को ही क्षत्रिय डिक्लर करदिया यानि आत्मघोषित क्षत्रिय ट्राइब; इस ट्राइब को जातिवाद का कितना प्यास था इस बात से आप अंदाजा लगा सकते हो; क्यों! दूसरे भूखंड में गैरजातिवादी वीर या राजा नहीं हुआ करते थे? क्या वह खुद को क्षत्रिय बोलकर रिप्रेज़ेंट करते थे? ये जातिवादी प्रमाणपत्र इस्यु करनेवाले इस्लाम राजाओं को क्यों ये क्षत्रिय का पहचान नहीं देते? प्रोफेट मुहम्मद तो बड़े क्षत्रिय थे क्यों के आज का डेट में उनका विचारधारा का 180 करोड़ से भी ज्यादा अनुयायी हैं? तो जातिवादी क्षत्रिय उनको अपना प्रेरणा मानकर क्यों नहीं गर्व करते? क्यों के वह वेद का जातिवादी समर्थक नहीं है इसलिए? इस्लाम, इस्लाम राज में इसलिए यहाँ ज्यादा फैला क्यों के उस में जातिवाद नहीं था । जाट भी पाली शब्द जात से बना एक शब्द है और ये भी अपने आप को आत्मघोषित क्षत्रिय ट्राइब बताते हैं और खुदको जमीनदार और क्षत्रिय से जोड़ते हैं । यानि ब्राह्मणों ने काल्पनिक जाती का नशा ऐसे पैदा किया की हर कोई ऊंचा होने का नशा रखना सुरु कर दिया ये बिना सोचे के जाती की आड़ में वह अपना विचारधारा के पिंजरे में वह उनको अपने इस्तमाल करने केलिए बकरा बनाकर अपने विचारधारा के पिंजरें में कैद कर रहे हैं; और देखने वाली बात ये है की बकरे को पिंजरें में होने का बड़ा गर्व है; ऐसे ही अनेक ट्राइब अपलिफ्टमेंट और सप्रेस्ड की काहानी है, आप ढूंढ़ते रहो बहुतसारे मिलजाएँगे; ये जातिवादी पिंजरे से खुद को निकाल कर मुक्त करेंगे क्या पिंजरे में रहना और उससे भी ऊंचा इज्जतवाली पिंजरें में कैद होने को गर्व की बात मानते हैं; ये एक मानसिक विकृति नहीं तो क्या है? अब आप 1947 के बाद में जो जातिगत रिजर्वेसन मिल रहा है उसको छोड़ दें ये अबकी क्लासिफिकेशन हैं । अब आप को हर किसी की सरनेम डिकोड करना है की वह सरनेम का सोर्स और उसका अर्थ क्या है और वैदिक वर्णव्यबस्था के कौनसा प्रोफेसन का साथ ये मेल खाता है; अगर ये मिसमैच होंगे तो उस में भी घालमेल है । उदाहरण के स्वरुप "दाश" सरनेम को लेते है; इसका लिपिगत अर्थ लोग दूसरा बनादिये हैं लेकिन शाब्दिक अर्थ "गुलाम/नौकर/चाकर/भृत्य" होता है लेकिन अबकी वर्णवादी सामाजिक व्यबस्था में ये ब्राह्मण कहलाते हैं; तो ये असली या नकली आप खुद सोचो, और ये सोचो असलियत में ये किसके गुलाम है? दुशरा उदहारण "मिश्र" को लेते है जिसका मतलब "मिलावट" ये चार वर्ण में किससे सम्बंधित है आप खुद सोच सकते हैं और ये किस तरह की ब्राह्मण है आप खुद सोच लो । और एक उदाहरण "नेहरू" को लेते है जो की नहर सब्द से पैदा एक सरनेम है जिसका मतलब "नाली/नाला" होता है; वेद तो कहता है ब्राह्मण पुरुष का मुख से बने हैं, ये नाली से कैसे बने आप खुद सोचो। ये कौनसा टाइप का ब्राह्मण है आप खुद पता कर सकते हो। पण्डित एक पाली सब्द है जिसका मतलब ज्ञानी या विद्वान व्यक्ति होता है जिससे पांडे, पंडा, पांडियन और पंडित जैसे सरनेम पैदा हुए हैं लेकिन ये सरनेम चार वर्ण में किससे मेल खाता है आप मेल कर सकते हो और अंदाजा लगा सकते हो ये किस तरह का ब्राह्मण हैं । जातिवादी ठगों ने राम चरित्र जिस "दशरथ जातक" कथा से चुरा के अपना जातिवादी रामायण बनाया है उस बौद्ध ज्ञानसम्पदा में राम को "राम पण्डित" बोलकर भी सम्बोधन किया गया है । ऐसे आप उनकी सरनेम की डिकोड करते चलो और मजा लेते चलो कौन किस तरह का धूर्त है । आप को कई सरनेम ऐसे मिलेंगे ये ब्राह्मण वर्ग का ही नहीं है लेकिन ये ब्राह्मण बने हुए हैं यानि छुपेरुस्तम रस्ते का मौका का चौका मारा और बन बैठे ब्राह्मण और मार ली ब्राह्मण होनेका सामाजिक फायदा यानि धूर्तों का भी ये बाप हैं । और एक सरनेम लेते हैं "झा" जो खुदको ब्राह्मण कहते हैं । "झा" सरनेम "झार" से पैदा हुआ है, झार का मतलब "Bush" यानि जंगल या झाडी । झार का भूखंड को झारखंड भी कहते है। अब बताओ वेद तो कहता है ब्राह्मण पुरुष का मुख से पैदा होता है ये झार से कैसे पैदा हुए आप खुद सोचो! यानि ये है मौका परस्त नकली ब्राह्मणों की वंसज । इंडिया के बहुत सारे सरनेम पाली भाषा से जड़ित हैं । उदाहरण के स्वरुप "मोदी" को ही लेलो । मोदी एक पाली सब्द है जिसका अर्थ "खुस होना" है । खुश होना तो कोई वैदिक

वर्ण व्यबस्था के अंदर ही नहीं आता यानि ये सरनेम अवर्ण है यानि ये कभी वर्णवादी ही नहीं थे । लेकिन हमारा देश का प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ब्राह्मणों की RSS की संगठन का चमचियत और गुलामी करके जातिवाद सोच का गुलाम बनकर जातिवाद को फैलाते नजर आ जायेंगे; इसलिए ब्रह्मणों ने इस शूद्र(OBC as Oil-presser community by Jativadi) को अपना बाप भी बनालिया है क्यों के ये उनकी जातिवाद को और भी मजबूत करने में मदद कर रहे हैं । ये PM ये कभी नहीं सोचा वह जिस विचारधारा का चमचियत करते हैं उनके पूर्वजों ने एक "खुश रहना बौद्धवादी" परिवार को जातिवाद में केवल तेल निकालना प्रोफेसन तक ही सिमित रखा; उनके पूर्वजों की बृत्ति की स्वंत्रता को छीनकर कभी आगे बढ़ने की मौक़ा भी नहीं दिया। लेकिन जिस बुद्धिवादी भीमराव आम्बेडकर के पूर्वज कभी जातिविरोधी हुआ करते थे जिसके वजह से जातिवादियों ने उनके पूर्वजों को दलित बनाडाला था उनके बनाया संबिधान ही उनको PM कुर्सी तक ले गया; जब की जातिवादी RSS उनको अपलिफ्ट करनेका मकसद उनको केवल जातिवादी राष्ट्र बनाने केलिए इस्तेमाल करना था और इतिहास में ये लिखवानी थी देश को जातिवादी राष्ट्र ब्राह्म्णों ने नहीं शूद्र और अतिशूद्र ने बनाया क्यों के प्रेसिडेंट को भी ये एक कटपुतली अतिशूद्र वर्ग का ही बनाया । भीमराव आम्बेडकर बेसक ग्रेट इंटेलेक्ट थे लेकिन कभी ये जान कर नहीं मर पाए के उनके पूर्वज भी जातिवाद विरोधी बौद्धवादी हुआकरते थे जिसका सजा उनको मिला; अनजाने में सही वह अपना पूर्वजों का असली विचारधारा बौद्धविचारधारा को अपनाके ये दुनिया छोड़े । PM मोदी का गाओं "वडनगर" बुद्धनगर का अपभ्रंश है इसे आनंदपुरा के नाम से भी जाना जाता था; 640AD में चाइना का बौद्ध परिब्राजक Xuanzang भी यहाँ भ्रमण करने आये थे और यहाँ पुराना बौद्ध मठ का ध्वंशाबसेष भी देखने मिलते हैं जो जातिवादियों का काल्पनिक देवादेवियों का मंदिरों से कइयों साल पुरानी स्ट्रक्चर है । ऐसे ही आप सरनेम को डिकोड करते चलिए और मिलाते चलिए कौनसा वर्ण के साथ ये म्याच करते हैं आप को यहाँ भी घालमेल और कई तरह की हेराफेरी मिलेंगे । उदहारण के तौर पर "तिवारी" सरनेम को ही लेलो । तिवारी का कोई भी सीक्वेल जैसे वारी, दुवारी, चौवारी जैसे सरनेम देखने नहीं मिलते यानि ये बौद्ध धर्म त्रिपिटक से जुड़ा हुआ नाम हो सकता है; त्रिपिटक से तिवारी और त्रिपाठी सरनेम पैदा हुए हैं; त्रिपाठी सरनेम का कोई सीक्वेल जैसे पाठी, द्वीपाठी या चौपाठी देखने को नहीं मिलता इसलिए ये भी बौद्ध धर्म का त्रिपिटक से जुड़ा सरनेम हो सकता है। आप को खुछ लोगों की नाम पूरी तरह से बौद्धवादी मिलेंगे लेकिन वह जातिवाद को प्रचार और प्रशार करते हुए नजर आएंगे उदहारण के तौर पर "अंजना ॐ कश्यप" नाम को ही लेलो; "अंजना" नाम बौद्ध जातक कथा का एक चरित्र का नाम है । ॐ एक पाली बौद्ध लिपि (ओड़िआ/पाली ॐ= ଓ + ଁ + ୦୫) है जिसको बौद्ध सन्यास अपने ध्यान केलिए इस्तेमाल किया करते थे और वर्णवादी धूर्त उसको अपना बोलकर दावा ठोकते हैं; और लास्ट नेम कश्यप एक बौद्ध सन्यास का नाम है जिसको वर्णवादी धूर्त अपना एक ऋषि मानते हैं । यानि "अंजना ॐ कश्यप" सम्पूर्ण रूपसे बौद्ध विचारधारा का नाम है यानि कुछ जातिवाद ब्राह्मणवादी के पूर्वज कनभर्टि थे और बौद्ध धर्म के साथ बेईमानी की और जातिवाद का बेईमानी एजेंडा में ये अब अंधभक्ति से शामिल हैं । आप बिहार का नाम तो सूना होगा क्यों के ये एक इंडिया का प्रदेश है; बिहार नाम इस प्रदेश का इसलिए है क्यों के ये प्रदेश बौद्ध बिहारों का भूखंड था; अब सोचो जो प्रदेश को बौद्ध बिहारों का भूखंड कहा जाता था वहां जातिवादी प्रजा कहाँ से आये? क्या ये इसारा नहीं करता यहाँ के लोग बौद्धवादी से जातिवादी को कनभर्ट हुए हैं? बौद्ध विहार का भूखंड में बसनेवाले लोगों को ही बिहारी कहते है । जो बौद्ध विहार में रहता होगा वह बौद्धवादी होना चाहिए और क्यों के बौद्ध धर्म में वर्णवाद/जातिवाद नहीं है तो बौद्ध बिहार के भूखंड में कोई जातिवादी नहीं होना चाहिए लेकिन अब की बिहार का भूखंड का हालत ऐसे नहीं है क्यों के अब की वहां के जेनेरेशन सब जातिवादी बनचुके हैं । इस बात से पता लगा सकते हो ब्राह्मण झूठ फैलाने में कितना माहिर शातिर धूर्त हैं । बुद्ध ओडिशा का भूमिपुत्र हैं और में दावे से कह

सकता हूँ 99.99% ओड़िआ लोग नहीं जानते होंगे की बुद्ध ओड़िआ थे और उनकी भाषा को कभी पाली कहा जाता था; इस बात से पता कर सकते हो ब्राह्मण कितना ब्रेनवाश करने में माहिर शातिर धूर्त खिलाड़ी हैं । और एक उदहारण "सिंह" सरनेम का लेते हैं; बौद्ध धर्म में “सिंह” का महत्व हमेशा रहा है यानि ये बौद्ध धर्म को रक्षा करनेवाले क्लान से बिलोंग्स करते हैं । किसी भी बौद्ध मंदिर का सामने आप को सिंह का मूर्त्ति मिलेंगे; ॐ, 卍, 卐, ☸️, कमल , सिंह और हाथी बौद्ध विचारधारा का प्रमुख प्रतिक हैं; हमारा न्यसनाल सिम्बोल भी अशोका का चार सिंहवाला प्रतिक है । इंडिया जब बौद्ध विचारधारा से प्रभावित था बौद्ध विचारधारा को सुरक्षा देनेवाले पूर्वजों की सरनेम सिंह होता था। असोक का स्तम्भ में भी आप को बौद्ध धर्म के प्रतिक के रूप में आप को सिंह का प्रतिक मिल जायेंगे; क्यों के सिंह सरनेम वाले इंडियन निवासियों का पूर्वज बौद्ध धर्म से जुड़े हुए थे वह अवर्ण ही थे लेकिन अब सिंह सरनेमवाले कोई कोई खुद को ब्राह्मण बताते हैं, कोई क्षत्रिय तो कोई शूद्र यानि कोई शेड्यूल्ड कास्ट या शेड्यूल्ड ट्राइब बताते हैं, लेकिन “सिंह” सरनेम वैदिक वर्णवाद का कोई भी वर्ण में मेल नहीं खाता इसलिए ये स्वयं अप्लिफ्टेड हैं; जो अप्लिफ्टेड हो नहीं पाए वह शेड्यूल्ड हैं । ऐसे ही सरनेम डिकोड करते चलिए आपको कई तरह की हैरानी होगी और कौन असली और कौन नकली और घालमेल का थोड़ा बहुत आकलन करपाएंगे । इंडिया को एक सोने की चिड़िया कहा जानेवाला देश कहा जाता था जब यहां का विचारधारा बौद्ध विचारधारा था; जातिवादी विचारधारा नहीं । बौद्ध धम्म/धर्म ही इंडिया का सबसे पुराना प्रमुख विचारधारा है क्यों के इंडिया और इंडिया के आस पास किसी भी भूखंड में भी आप को बौद्ध सम्पदा से ज्यादा पुराना चीजें यानि सर्कमस्टान्सिअल एभीडेन्स आपको किसी और प्रमुख विचारधारा के नहीं मिलेंगे । बौद्ध धर्म समानता और इंसानियत का धर्म है । बौद्ध धर्म क्या है? बुद्ध/बौद्ध शब्द बुद्धि शब्द से पैदा एक शब्द है यानि बौद्ध धम्म इंसान का सत् बुद्धि को मानेवाला धर्म है जिस में सत्य, तर्क, खोज, परिक्षण, अवलोकन, प्रयोग और व्याख्या मुख्य विचार हैं; इसलिए मनुष्य का केवल मस्तिष्क का भाग की स्ट्रक्चर को ही चैत्य या स्तूप के सक्ल में दिखाया गया है । अबके बुद्ध की मूर्त्तियां भी एक काल्पनिक चित्रण है क्यों के असली बौद्ध विचारधारा में मूर्त्ति नहीं केवल इंसान की बुद्धि का भाग को ही प्रेरणा के तौर पर इस्तेमाल किया जाता था और बौद्धवादियों के गुरुओंका कुछ रेलिक्स यानि अवशेष उस में रख दिया जाता था जो उस इंसानी गुरु/गुरमाता/सन्यासन का चेतना जगाता था; बाद में बुद्ध के चरित्र को ध्यान में रखते हुए काल्पनिक बुद्ध मूर्त्ति का निर्माण किया गया और वही स्कल्प्चर यानि मूर्त्ति को बौद्ध विचारधारा के प्रेरणा केलिए पीढ़ी दर पीढ़ी नक़ल होता रहा । बौद्ध विचारधारा में कोई सेंट्राल कंट्रोलिंग गॉड नहीं है गुरु सिद्धार्थ गौतम उपनाम बुद्ध का दियागया कुछ ज्ञान हैं यानि चार श्रेष्ठ सत्य हैं और अच्छे चरित्र निर्माण और इंसान की दुखोँ से निर्वाण या मुक्ति पाने केलिए आठ मार्ग बताये गए हैं और ये ही बौद्ध विचारधारा की मूलविचारधारा है; और उसके बेस पर ही उनके डिसेडेंट प्रमोटर्स बुद्धिजीवी सन्यास का पीढ़ियां लोगों को ज्ञान देते और ज्ञान के खेती करके बौद्ध शास्त्र पैदा करके एक अच्छे सामाज का निर्माण केलिए योगदान देते हुए दीखते हैं । बाद में इसके विरोधी निकलते हैं और बौद्ध विचारधारा को दो भाग में तोड़ते नजर आते हैं और ये “हिनजन” यानि घृण्य लोग यानि नीच लोग और “महाजन” ऊँचे लोग या महान लोग नाम से पहले बंटते नजर आते है; और ये हिनजन बाद में हीनयान यानि निम्न मार्ग या निम्न वर्ग या छोटी गाड़ी या नीच मार्ग या हीनसांधिक और महाजन से ये महायान या उर्ध मार्ग या श्रेष्ठ मार्ग या या बड़ी गाड़ी या उच्च वर्ग या उच्च मार्ग या महासांधिक नाम से बदलते हुए नजर आते हैं यानि अलगाओवाद की निम्ब पड़जाति है । राजा असोक के समय में बौद्ध विचारधारा टूटते हुए नजर नहीं आता और राजा अशोक बौद्ध धर्म का मूलविचारधारा को ही प्रमोट किया था; क्यों के उनका बेटा महेंद्र जिन्होने श्रीलंका में बौद्ध विचारधारा को फैलाया था आज के डेट मैं इसको हिनयान या थेरवाद कहाजाता है, जो ये प्रमाण करता है राजा असोका कभी महायान के वारे में जानते ही नहीं

थे और उनके कालखंड में बौद्ध विचारधारा में कोई फुट ही नहीं पड़ा था; क्यों के राजा अशोक बौद्ध विचारधारा को फ़ैलाने केलिए स्तूप/चैत्य, बौद्ध विहार और हजारों अशोक स्तम्भ बनाते हुए नजर आते हैं लेकिन बुद्ध का मूर्त्ति को प्रोमोट करते हुए नजर नहीं आते, जो की बौद्ध विचारधारा का मूल विचारधारा था । 'थेरवाद' शब्द का अर्थ है 'बड़े-बुजुर्गों का कहना' । राजा असोक ने अपने कालखंड में अपना भूखंड में मूल बौद्ध विचारधारा को ही फैलाया था यानि बौद्धवादी अलगाववाद के नजर में ये हीनयान का समर्थक थे । हीनयान संप्रदाय के लोग मूल विचारधारा के परिवर्तन अथवा सुधार के विरोधी थे और यह बौद्ध धर्म के प्राचीन आदर्शों का ज्यों त्यों बनाए रखना चाहते थे; हीनयान संप्रदाय के सभी ग्रंथ पाली भाषा मे लिखे गए हैं । हीनयान बुद्ध की पूजा या उपासना प्रतिमा या देवता या GOD के रूपमें नहीं करके बुद्ध को केवल महापुरुष मानते थे । थेरवाद अनुयायियों का मानना था कि इस से वे बौद्ध धर्म को उसके मूल रूप में मानते हैं । इनके लिए गौतम बुद्ध एक गुरू एवं महापुरुष अवश्य हैं लेकिन कोई अवतार या श्रुष्टिकर्ता नहीं । वे उन्हें पूजते नहीं और न ही उनके धार्मिक समारोहों में बुद्ध-पूजा होती है । थेरवादियों का मानना था कि हर मनुष्य को स्वयं ही अपना निर्वाण का मार्ग ढूंढना होता है । थेरवादियों के समुदायों में युवकों के भिक्षु बनने को बहुत शुभ माना जाता है और यहाँ यह प्रथा भी है कि युवक कुछ दिनों के लिए भिक्षु बनकर फिर गृहस्थ में लौट जाता है । जबकि महायान बौद्ध विचारधारा में पहले उनका मूर्त्ति बनाकर उस प्रतिमा को विचारधारा का प्रेरणा के रूप में इस्तेमाल करते नजर आते हैं; और अंत में उनको देवता रूप से पूजा करने की पक्ष में नजर आते हैं और विचारधारा में कई तरह की तर्कशून्यता/तर्कहीनता, झूठ और भ्रम समावेश होने लगता है । इसी विचारधारा के प्रभाव से बुद्ध की कई काल्पनिक मूर्तियों का निर्माण आंरभ होने लगता है । महायान ने बौद्ध धर्म में बोधिसत्व की भावना का समावेश किया जो विचारधारा के अनुसार 'बुद्धत्व' की प्राप्ति सर्वोपरि लक्ष्य था । महायान बौद्ध परम्पराओं में बहुत से दिव्य जीवों और काल्पनिक चरित्र को बौद्धिस्त्व के तौरपर माना जाता है जैसे अब जातिवादियों कई काल्पनिक देवी-देवताओं को पूजा होती है ठीक उस ही तरह; जब की थेरवाद बौद्ध परम्पराओं में ऐसी किसी हस्ती को नहीं पूजा जाता । मूल बौद्ध ज्ञान सम्पदा में नैतिकता सीखाने केलिए जो काल्पनिक चरित्रों का उदहारण दिया जाता था उसको बाद में बोधिसत्त/बोधिसत्त्व में बदल दिया जाता है यानि जो चरित्र में बुद्धि का अस्तित्व यानि सत्ता या सत्व होता है, और बाद में उसकी भी उपासना होना सुरु हो जाता है उदहारण के तौर पर "दशरथ जातक" कथा का राम चरित्र; जो की बाद में ब्राह्मणवाद का जातिवादी राम यानि विष्णु का अवतरा बनादिया जाता है । महायान बौद्ध धर्म के अनुयायी का कहना था ज्यादातर मनुष्यों के लिए निर्वाण-मार्ग अकेले ढूंढना मुश्किल या असम्भव है और उन्हें इस कार्य में सहायता लेने केलिए बोधिसत्त्वों का सहारा लेना चाहिए; महायान शाखा में ऐसे हज़ारों बोधिसत्त्वों को पूजा जाता है और उनका इस सम्प्रदाय में जातिवादियों के जैसे देवादेवियों के जैसा स्थान है । बुद्ध के साथ साथ तथा बोधिसत्वों की मूर्तियाँ बनाई जाने लगीं और उनकी पूजा भी की जाने लगी । यानि ये इन्डियन पोलिथेजिम की शुरुआत था । इन बोधिसत्त्वों में कुछ बहुत प्रसिद्ध हैं, उदाहरण के लिए अवलोकितेश्वर (अर्थ: 'दृष्टि नीचे जगत पर डालने वाले प्रभु'), अमिताभ (अर्थ: 'अनंत प्रकाश', 'अमित आभा'), मैत्रेय, मंजुश्री और क्षितिगर्भ इत्यादि इत्यादि । हीनयान विचारधारा के समर्थक केवल महात्मा बुद्ध को ही सर्वोच्च स्थान देते हैं और केवल उन्ही की उपासना करते थे । परन्तु महायान विचारधारा के समर्थक बुद्ध के अतिरिक्त अन्य बौधिस्त्वों की भी उपासना करते थे । इसका बाद ये विचारधारा मूल विचारधारा से दूर समय के साथ और भी कई सेक्ट में बंटते गए, उदहारण के तौर पर जैसे वज्रयान, तंत्रयान, कालचक्रयान, सहजयान, उड़डीयान, जेन बौद्ध धर्म और तिब्बती बौद्ध धर्म इत्यादि इत्यादि; मूल विचारधारा को नष्ट भ्रष्ट करने केलिए इस में कई इस विचारधारा विरोधी विचारधाराओं की समावेश हुआ और एन्ड में ये भूखंड बौद्धराष्ट्र से पोलिथेइजिम यानि बहुदेववाद

जातिवादी ब्राह्मणवाद में कन्वर्ट हो गया और आज के कालखंड में बुद्ध को ब्राह्मणवाद में विष्णु का दशवाँ अवतार बताया जाता है जब की वह कोई देवादेवी विचारधारा को ना सपोर्ट करते नजर आएंगे ना खुद को कभी **GOD** या गॉड का पुत्र बताया, ना ये अपने आप को कोई **GOD** को दूत या अवतार प्रमोट करते नजर आएंगे । इतिहासकारों की घालमेल वाले इतिहास जरूर पढ़ें लेकिन उस में से सच्चाई निकालने की कोसस जरूर करें । किस कालखंड में क्या क्या हो गया था उसको नजर अंदाज करके मजूदा कालखंड में हमारे समाज केलिए क्या सही है उस को ध्यान देना जरुरी है; हम इतिहास में नहीं बर्तमान में जीते हैं, और इतिहास का रचना कर रहे हैं । इसलिए हमारे समाज और पीढ़ियों केलिए क्या सही है उस पर ध्यान देना जरुरी है; हमारे सभ्यता और हमारे पीढ़ियों को केवल तार्किक न्यायवाद यानि सही गलत का पहचान, इंसानियत और विज्ञान से ही जोड़ें; ये तीन मूल विचार एक अच्छा चरित्र और स्वस्थ समाज बनाने कलिये काफी है और इसके इलवा कोई अन्य विचार की गुलाम होना जरुरत ही नहीं है । धर्म शब्द पाली शब्द धम्म से पैदा एक शब्द है धर्म/धम्म का मतलब जिस विचारधारा को हम सामाजिक और नैतिक ब्यक्तित्व केलिए मन में धारण करते है यानि "धारोती ती धम्मो" एक ब्यक्ति का विचार, स्वभाव और लक्षण ही उसका धर्म है । विचारधारा यानि आईडोलोजी क्या है? आईडोलोजी इज ए सेट ऑफ़ आइडिआज होता है यानि विचारधारा विचार का एक समूह होता है जो की अच्छी समाज को बनाने का उद्देश्य से बनाया जाता है; साहित्य को अस्त्र के रूपसे इस्तेमाल करने को शास्त्र कहा जाता है और साहित्य क्या है समाज के हित केलिए जो रचना किया जाये वह है साहित्य । जातिवादीयों का शास्त्र और साहित्य लोगों को वैचारिक गुलाम, उत्पीड़न, शोषण और ठग ने केलिए है; समाज के कल्याण केलिए नहीं जिस में वह समाज में झूठ, भ्रम, अज्ञानता, अन्धविश्वाश, छुआछूत/अस्पृश्यता, भेदभाव और हिंशा जैसे प्रमुख सोच फैलाते हैं; क्या ये समाज के हित मैं है? फिर से में आप की याद को ताजा करदूँ; हिन्दू पाली शब्द शिन्दु से बना एक शब्द है और शिन्दु का मतलब नदी, सागर या समुद्र होता है । क्यों के हिन्दू शिन्दु से बना एक शब्द है इसका असली अर्थ के अनुसार हिन्दू का मतलब नदी, सागर या समुद्र भूखंड का निवासी होता है जात और काल्पनिक देवादेवियों को माननेवाला अनुयाई नहीं; क्योंके पाली बौद्ध धम्म से जुड़ा भाषा है इसलिए हिन्दू जातिवादी नहीं बौद्धवादी होता है यानि बुद्धि को फलो करनेवाला अनुयाई होता है; हिन्दुस्थान भी एक पाली शब्द है जिसका मतलब नदी, सागर या समुद्र का भूखंड होता है । हमको भ्रष्ट इतिहास और साहित्य जो की ज्यादातर धूर्त बौद्ध विरोधियों से लिखागया साहित्य और इतिहास है हमेशा भ्रम में डालते आ रहे हैं। मुझे तो ऐसा लगता था हिन्दुस्थान मुस्लिम राजाओं के द्वारा दिया गया नाम है और स्थान एक पर्सियन या अरबिक शब्द है जिसका मतलब जगह/place होता है । लेकिन इसका परिक्षण करने के बाद पता चला ये पाली भाषा है और अरबिक में place को مكان (makan) कहते हैं जब की पर्सियन भाषा में محل (mahalun) कहते हैं । यानि हिन्दुस्थान/हिन्दुथान एक पाली शब्द है जिसका मतलब बौद्ध अनुयायिओं का नदी, सागर या समुद्र का भूखंड है । पाली में प्लेस(Place) को thāna(थान) बोलते हैं और थान का अपभ्रंश स्थान है । इंडिया भी शिन्दु से पैदा एक युरोपियन अपभ्रंष है जैसे शिन्दु->शिन्दुस->शिन्दस->इंडस->इंडिया, जिसका मतलब वही नदी, सागर या समुद्र का भूखंड ही है। हमें सदियों हिन्दू का मतलब गलत बोला गया है क्यों की इंडिया के देशी धूर्तों ने हमें हमेशा भ्रमित भ्रष्ट इतिहास पढ़ाते आ रहे हैं । असलियत में हिन्दू का मतलब नदी,सागर या समुद्र का भूखंड की बौद्ध विचारधारा माननेवाला निवासी होता है। इंडियन बौद्ध विचारधारा फॉलोअर को ही हिन्दू कहा जाता था जातिवादीयों को नहीं । जातिवादीयोंने बौद्ध धर्म को नष्ट करके इस भूखंड का सत्यानास किया है। बौद्ध धर्म को नष्ट करके जातिवादी ब्यवस्था यहाँ के समाज के उपर थोपा गया है। तो ये लोग कौन हैं? ये लोग कोई और नहीं हमारे ही देशी बौद्ध विचारधारा विरोधी मुलनिवाशी हैं जिन्होने जातिवादी विचारधारा और काल्पनिक देवादेवियों का दुनिया बनाया ताकि उनके अनुयायिओं को

अपना वैचारिक गुलाम बनाकर उनको कंट्रोल और उनकी शोषण कर सके । बुद्धि से इंसान का दिमाग ज्यादा काम करता है ज्यादा तार्किक बनने के कारण सवाल ज्यादा करता है जिससे की एकतंत्र तानाशाह को नुक़सान पहुंचाता है और ठगना थोड़ा मुश्किल हो जाता है; इंसान अगर बुद्धिवान बनजाये तो धूर्त, ठग, बेईमान, बाहुवली और उपद्रवियों केलिए खतरा बनजाता है और ये लोग भ्रष्ट लोगों को आसानी से ख़तम करते हैं । यही कारण है की समाज के धूर्त, बेईमान, शातिर, बाहुबली और उपद्रवी मुलनिवाशी जातिवाद धर्म का रचना किया और क्यों की बुद्धि का धर्म बौद्ध धर्म उनका विरोधी था तो उन्होंने बौद्ध धर्म को ही तोडा नष्ट और भ्रष्ट किया लोगों को बुद्धि यानि ज्ञान यानि सत्य और तर्क से दूर रखा ताकि उनको मुर्ख रखने से उनकी कंट्रोल इजी हो सके। अपने काल्पनिक देवादेवियों की दुनिया और गोपडवाज शास्त्र बनाके ज्यादा से ज्यादा झूठ, भ्रम और अंधविश्वास फैलाया ताकि वह अपने विचारधारा के पिंजरें में कैद रहे और बुद्धि से दूर होते रहे। अगर ब्यक्ति सामर्थ्यवान बनेगा तो शिक्ष्या से बुद्धिवान बन सकता है इसलिए ये जातिवाद यानि वर्णवादी समाज बनाके ये असामाजिक श्रेणी के मुलनिवाशी लोग कुछ लाभ दायक पेशे को वंशवादी बनादिया और दूसरों को वह पेशा करने से रोका और इस तरह प्राकृतिक रिसोर्स को उनसे छीनकर बर्चस्ववादी रूलिंग क्लास बनगए यानि सबर्ण यानि वर्णवादी समाज के अगड़ी वर्ग बनगए । हर भाषिय सभ्यता समाज के धूर्त, बेईमान, शातिर, बाहुबली और उपद्रवी जैसे असामाजिक श्रेणी के मूलनिवासी संगठित रूपसे अपनाके इस जातिवाद विचारधारा को संगठित स्वार्थ केलिए फैलाया और इंडिया का बौद्ध धर्म को नष्ट करके जातिवादी काल्पनिक देवादेवियों छुआछूत धर्म फैला दिया । ये उनको अछूत बोले जो इनका विचारधारा का विरोध किया । यानि इनके विचारधारा को न माननेवाले पूर्वजों को ये आउट कास्ट यानि उनके वर्णागत समाज के बाहर यानि अजाती बताया और उनको अछूत बोलकर सामाजिक घृणा पैदा किया जिसका सजा उनके पीढ़ियों को आजतक भुगतना पड़रहा है; यानी जिनके पूर्वज बौद्ध कालखंड में सामर्थवान हुआ करते थे उनके पीढ़ियों को साजिशन नर्क बनादिया गया है, और आजतक उनके उपर तरह तरह की उत्पीड़न और पाशविक अत्याचार किया जा रहा है; आपने TV में देखा होगा आज इस दलित का रेप करदिया गया उस दलित का हत्या करदिया गया और मगरमच्छ के आँसुओं और सहानुभूति से जातिवादी पोलिटिशियन्स उसपे पॉलिटिक्स करते नजर आते होंगे । जो बन जंगल में बसते थे और उनके विचारधारा से बाहर थे उनको भी ये आउट कास्ट, अजाती, असवर्ण यानि अछूत बताया । यानि उनकी विचारधारा को जो ना मानें वह सब आउटकास्ट ही हैं; इसलिए विदेशी और गैरजातिवादियों को जातिवादियों के मंदिर प्रवेश मना है, क्यों के वह सब अछूत हैं । इस तरह इंडिया का धूर्त, बेईमान, शातिर, बाहुबली और उपद्रवी मुलनिवाशी पूर्वजों ने बौद्ध धर्म को नष्ट करके जातिवाद फैलाई और उसमें सबसे आगे खुद को इलाइट कहनेवाले ब्राह्मण ही थे जो की असलियत में ये इंडिया के धूर्त बौद्ध विरोधी पूर्वज ही थे और अब की उनकी पीढ़ियां सायद जाने अनजानें में उस विकृति को फैलाते आ रहे हैं । जब की सबसे ज्यादा मानसिक विकृति के शिकार ब्राह्मण वर्ग ही हैं क्यों की उनकी वैचारिक दुनिया झूठ, भ्रम और अन्धविश्वास पर कायम है और इस दुनिया को चलानेवाले सियार वही हैं जबकि शूद्र ज्यादा सामाजिक और आर्थिक उत्पीड़ित भेड बकरी वर्ग है लेकिन मानसिक विकृति का शिकार उनसे कम है और उनकी सहन शक्ति इनसे कई ज्यादा है । ब्राह्मणों की जातिवाद से इंडिया का बौद्ध(हिन्दू) भूखंड जातिवादी और जातिविरोधी वर्ग में बंट गए। बौद्ध धर्म इंडिया का सबसे पुराना विचारधारा है वैदिक विचारधारा का वर्णवाद नहीं । अगर वैदिक विचारधारा यहाँ का पुराना विचारधारा होता तो यहाँ से बौद्ध विचारधारा दूसरे भूखंड को फैला जातिवाद क्यों नहीं? यहाँ जितने भी परिब्राजक आये वह उनका देश की इतिहास में उसका जिक्र जरूर करते वह बौद्ध धर्म का जिक्र किया जातिवाद को क्यों नहीं? अगर इंडिया से बौद्ध धर्म फ़ैल के जापान तक चलागया तो तब अगर जातिवाद होता वह भी चलागया होता? चीनी बौद्ध भिक्षु, विद्वान, यात्री और अनुवादक जिन्होंने सातवीं

शताब्दी में इंडिया की यात्रा की और हर्ष के शासनकाल के दौरान चीनी बौद्ध धर्म और इंडियन बौद्ध धर्म के बीच बातचीत का वर्णन किया क्या वह जातिवाद की कोई पुष्टि उनके लेख में किया है? इंडिया में जातिवाद हमारे देशी धूर्त्तों ने बौद्ध धर्म को ख़तम करके ही इम्प्लीमेंट किया है। जातिविरोधी पूर्वजों की पीढ़ियां उनकी उत्पीड़न के कारण ही दूसरे विचारधारा को अपनाया हुआ है। जो जातिविरोधी पूर्वजों की पीढ़ियां दूसरे विचारधारा नहीं अपनाया वह अब Sc और ST यानि अतिशूद्र बनकर उनकी जातीय व्यवस्था का हिस्सा हैं और तथाकथिक सवर्ण उनके घर में खाकर अपना सम्बेदना व्यक्त करते हैं जब की असलियत में उनकी पूर्वज इन सवर्ण के पूर्वजों से ज्यादा सक्षम और काबिल वर्ग थे क्यों की उन्होंने इनकी विकृत जातिवाद जैसे घिनोना ब्यवस्था का विरोध किया था । RSS एक जातिवादी संगठन है और उनकी पोलटिकल विंग BJP एक इंडियन जातिवादी पोलिटिकल पार्टी है । इन मूर्खों को ये पता नहीं उनका "कमल" प्रतिक जातिवादी नहीं बौद्धवाद का प्रतिक है, इस बौद्ध प्रतिक का भी ये चोर हैं । इनके जो मानसिक और चारित्रिक प्रबृत्ति है इनकी प्रतिक सियार या भेड़िया होना चाहिए क्यों ये लोगों को भेड बनाकर उसकी शिकार करते हैं । बुद्ध को हमेशा कमल के आसन में बैठते हुए कई मूर्त्तियां आप को मिलजायेंगे । कमल इस्तमाल करनेवाली कल्पनावाज धर्म काल्पनिक ब्रह्मा और लक्ष्मी से कमल आसन में बैठनेवाला बुद्ध बहुत पुराना है । एक भी पुराना लक्ष्मी या ब्रह्मा मूर्त्ति बुद्ध के मिलनेवाले पुराना मूर्त्ति से पुराना नहीं है । कमल बौद्ध विचारधारा की प्रतिक है । हमारे भूखंड के जातिवाद विरोधी मूलनिवासियों ने ही इस्लाम विचारधारा अपनाये हुए हैं । देश जब बिभाजन हुआ पंजाब और बांग्ला भाषी भूखंड का बिभाजन भी हुआ। पाकिस्तान में सायद पंजाब का 75% से ज्यादा प्रतिशत हिस्सा पाकिस्तान में रह गया और 25% इंडिया में; पंजाब के ज्यादातर भाषिय मूल निवासी अब इस्लाम कबुल लिया है, कुछ सिख बनगए हैं और कुछ जातिवादी हैं । ज्यादातर प्रशिद्ध बौद्ध सम्पदा आपको उन 75% से ज्यादा प्रतिशत पाकिस्तान का पंजाब के हिस्से में मिल जायेंगे; अगर पंजाबी भाषिय सभ्यता के भूखंड में इतना नष्ट और भ्रष्ट करने के बाद भी बौद्ध सम्पदा भरपूर है, क्या उनकी पूर्वज इस विचारधारा से बंचित रहे होंगे? यानि पंजाबी भाषिय सभ्यता भी एक कालखंड में बौद्धवादी था । विश्व प्रसिद्ध बौद्ध विश्वविद्यालय तक्षशिला उस भूखंड का भी अंश विशेष है । उनके सरकारी डाटा के अनुसार करीब 22 करोड़ वाली पाकिस्तानी मुल्क में 8.5 करोड़ लोग पंजाबी बोलते हैं जब की सचाई ये है की ये पाकिस्तान का रूलिंग भाषिय सभ्यता हैं और मेरे हिसाब से ये 12 करोड़ से भी ज्यादा होंगे, और उनकी प्रशासन और आर्मी में इनके ही दबदबा है। क्या जहाँ इस्लाम विचारधारा पैदा हुआ वहां कोई पंजाबी में बोलता है? वैसे बांग्ला भाषी भूखंड बारहवीं शताब्दी तक बौद्ध धर्म से जुड़ा रहा और यहाँ सब बारहवीं शताब्दी तक बौद्ध विचारधारा वाले अनुयायी थे । जातिवाद ने भी इन को नहीं छोड़ा और इनके जातीवादी और जातिविरोधी मूलनिवासी का बिभाजन के कारण जातिविरोधी पूर्वजों की पीढ़ियां इस्लाम कबुल लिया और देश बिभाजन के बाद बांग्लादेश का 17 करोड़ पॉपुलेशनवाली देश में करीब 90% यानि 15.3 करोड़ लोग अब इस्लाम विचारधारा अपनाया हुआ है। क्या जहाँ इस्लाम विचारधारा पैदा हुआ कोई वहां बंगाली में बोलता है? इनका जो लोकप्रिय संगीत धुन को अब रबिन्द्र संगीत धुन के नाम में नामकरण करदिया गया है, ये इनकी बहुत पुरानी बौद्ध संगीत धुन है जिसको बौद्ध विचारधारा फ़ैलाने केलिए कियाजाता था और अब जातिवादी धुन हो गया है । प्रीपार्टिसन इंडियान ऑरिजिन का अब करीब 56 करोड़ से ज्यादा इंडियन भूखंड का मूलनिवासियों का पीढ़ियां अब इस्लाम विचारधारा अपनाये हुए हैं जिनके कइयों के पूर्वज कभी जातिवाद बिरोधी पूर्वजों की बौद्ध विचारधारा अपनाया हुआ पीढ़ियां हुआ करते थे; जिस में 3% से भी कम बाहरी मुल्क के इस्लामी पूर्वज थे जिनका इस भूखंड के साथ संकरण के कारण उनकी सत्ता भी हमारे इस भूखंड के मिट्टी में लीन है; क्यों के हमारे भूखंड से पैदा अनाज से उनका शरीर बना, हमारे ल्यंगुऐज को वह अपना मातृभाषा बनाया और मरने के बाद इस मिट्टी में ही उनका शरीर घुल गाया

। इनकी उर्दू भी पाली से बना हिंदी में 1% अरबिक और पर्सियन मिलाके बना हुआ है। बौद्ध विचारधारा की रचना ज्यादातर पाली भाषा में था और जब इंडियन भूखंड में बौद्ध विचारधारा लोकप्रिय था तो बौद्ध विचारधारा को अन्य भाषीय सभ्यता में सरल से संचार केलिए पाली से प्रेरित दुषरे लोकप्रिय प्रादेशिक भाषा के मिश्रण से हिंदी की रचना हुयी । इसलिए पाली के थोड़ा सा अपभ्रंश में हिंदी का मिलता जुलता शब्द आप को मिलेंगे । हिंदी ज्यादातर नगर में इस्तेमाल किया जाने वाला भाषा था तो इसलिए इसको नगरी/नागरी कहा जाता था; धूर्त ब्राह्मणों ने अपने राज में इसके आगे देव लगाके इसको देवनागरी बताया और इस्लाम के राजाओंने फ्याब्रीकेसन में थोड़ा और भी आगे बढ़ गए इस भाषा में 1% अरबिक और पर्सियन शब्द मिलाके उसका नाम उर्दू रखदिया और इसका लेटर पर्सियन लेटर से इन्स्पायर्ड लेटर बनाके मदरसे के माध्यम से इंडियन मुस्लिमों का मातृभाषा बनादिया; लेकिन जो जितना शातिरपन क्यों ना करे सत्य कभी छुपता नहीं एक ना एक दिन ये सामने आ ही जाता है; देर से सही; इनकी मातृभषा उर्दू की जननी भी बौद्ध भाषा पाली ही है । ये हैं देशी लोग विदेशी सोच/विचारधारावाले लोग । जातिवादियों का अक्ल का घर में गोबर है लेकिन इनका अक्ल का घर में तरह तरह की मल भरे पड़े हैं; ये इसलिए, खुद इस्लाम विचारधारा बोलता है, अल्लाह का कोई रूप नहीं होता है इसलिए वह निराकार है । अगर अल्लाह निराकार हैं तो मन में बुला लो अल्लाह हर जगह बिद्यमान है वह अंतर मन से कहीं भी सुन लेगा उसको दिन में पांचबार गला फाड़ फाड़ के माइक में बुलाने का जरुरत क्या है? अगर माइक में चिल्ला चिल्ला के गला फाड़ फाड़ के बुलाते हो, तो कहीं ना कहीं ये मानते हो अपना काल्पनिक एंटिटी अल्लाह का कान है, तभी तो सुनेगा? अगर इनका काल्पनिक अल्लाह का कान है जिसके वजह से वह गला फाड़ फाड़ के उनको ढूंढते रहते हैं तो वह निराकार कैसे हुआ? तो ये कहीं ना कहीं ये मानते हैं हम चिल्ला के अल्लाह को बुलाएँगे तो अल्लाह हमारा बात सुनेगा क्यों के उसका कान है, और अगर कान है तो अल्लाह का तो आकर है, वह निराकार कैसे हुआ? असलियत में इस्लाम विकृति फ़ैलानेवाले धूर्त्तों ने बशीकरण साइकोलोजी का सहारा लिया है और उनके फॉलोअरों की दिमाग को पोपट यानि तोते का जैसे बनाने केलिए उनके दिमाग में दिन में पांचबार अजान के थ्रू ये डाला जाता है की तू मुस्लिम है, प्रोफेट मुहम्मद मेसेंजर ऑफ़ अल्लाह है और अल्लाह एक ही सर्बश्रेष्ट गॉड है और उसके सिबा कोई गॉड एक्जिस्ट नहीं करता; यानि दिन में पांचबार हमेसा ब्रेनवाश होना जरुरी है ताकि हम हमेशा संगठित रहे । यानि जातिवादी धूर्त्तों से बचने के चक्कर में बिदेशी इस्लाम की कट्टर विचारधारा का पिंजरें में खुद को कैद करवाना पसंद किया । यानि शातिर भेड़ियों से बचने केलिए आदमखोर मगरमच्छ का शिकार होना ज्यादा पसंद किया लेकिन कभी भी विचारधारा की प्रीडेटरों से खुदको या अपने पीढ़ियों को बचाने की कोसिस नहीं किया । हमारे देश की जातिवादी काल्पनिक मूर्त्तिवादी लोग हैं देशी लोग विकृत सोच मुलनिवाशी और मुस्लिम हैं देशी लोग विदेशी विकृत सोच मुलनिवाशी । जातिवादी देशी बौद्ध विरोधी धूर्त मुलनिवासी ही इंडिया का बौद्ध धर्म को नष्ट और भ्रष्ट किया है। जातिवादी विरोधी पूर्वजों की पीढ़ियां ही अब मुस्लिम, सिख और इसाई इत्यादि विचारधारा अपनायी हुयी हैं। वर्ल्ड का तीन प्रमुख विचारधारा ख्रीष्टीयानिटी, इस्लाम और जातिवाद कौनसा काल खंड में दुनिया के सामने आये अगर उसकी बात की जाए तो दुनिया का सबसे पुराना प्रमुख लोकप्रिय विचारधारा बौद्ध विचारधारा ही था; वह ऐसे बुद्ध का जन्म 563BC में या उससे पहले हुआ था, जीसस का जन्म कुछ बोलते हैं 4BC में हुआ था तो और कुछ बोलते हैं 3AD में हुआ था। BBC के रिसर्च के अनुसार उनकी चाहनेवाले उनको क्रुसिफिक्सन से बचालिया था और बचने के वाद वह वहां से इंडिया के कश्मीर भूखंड को पलायन किया था जहाँ वह अपना बाकि का जीबन एक बौद्ध संन्यास के रूप में बिताया था लेकिन क्रुसिफिक्सन के बाद यानि जीसस का सामाजिक मृत्यु के बाद उनके करीबी 12 चेले उनकी नाम में ईसाई धर्म खड़ा किया और उसके बाद ये दुनिया का सबसे बड़ा धर्म बनगया । प्रोफेट मुहम्मद का जन्म 570AD में हुआ था और वह अपने एज चालिश के दसक

में एक गुफा में ध्यान लगाया करते थे जिसका नाम गुफा हीरा था जहाँ उनको अल्लाह की काल्पनिक दूत एंजेल गाब्रिएल उनका काल्पनिक GOD अल्लाह के बारे में बताया और 610AD में इस्लाम दुनिया के सामने आया। प्रोफेट मुहम्मद ने अपनी काल्पनिक अल्लाह नशा का खुजलीवाली विकृत बिमारी उनके अनुयायिओं में ऐसे फैलाया के इस बिना शरीर का काल्पनिक चरित्र को वह दिन में पांच बार माइक में गला फाड़ फाड़ के ढूंढ़ते हैं और उनका लक्ष्य जो मुस्लिम नहीं हैं उसका उत्पीड़न करें और सबको मुस्लिम बनादेना है । जातिवादी बौद्ध विरोधियों की काल्पनिक देवादेवियों का दुनिया बनना ज्यादातर 800AD के बाद ही जोर पकड़ा; गुरु नानक का जन्म 15 अप्रैल 1469AD को हुआ था, और उनका जातिवाद और इस्लाम विरोधी विचारधारा सिख धर्म उसके बाद ही बना; और इस तरह ये विचारधारा दुनिया के सामने आया और उनकी विचारधारा की अनुयायी लोग बनते गए । हमारे देश की जातिवादी काल्पनिक मूर्त्तिवादी लोग जो अपनेआप को अब हिन्दू कहते हैं वह हिन्दू नहीं पाखंडी हिन्दू जातिवादी लोग हैं या उनको हिन्दू की अर्थ से सदियों दूर रखा गया और हिन्दू का असली अर्थ वह नहीं जानते । इंडियन भूखंड का बौद्धवादी लोगों को ही हिन्दू कहाजाता था क्यों के हिन्दू बौद्ध भाषा पाली का शब्द शिन्दु से बना एक शब्द है । अतीत का पाली भाषा आजका ओड़िआ भाषा है। क्यों के वर्ल्ड में ऐसे कोई भाषा नहीं जो पाली के साथ 50% से ज्यादा सही अर्थ और सही उच्चारण के साथ मेल खा सके; इसलिए पाली ही ओड़िआ है और ओड़िआ ही पाली है; जिसका मुलनिवाशी आज करीब 5 करोड़ होंगे । पाली शब्दों का ओड़िआ के साथ परीक्षण केलिए आप कोई भी ओड़िआ भाषी इंसान का हेल्प ले सकते हैं और कोई भी इंग्लिश टू पाली डिक्शनरी के मदद से इस भाषा की म्याच को पुष्टि कर सकते हैं । उदहारण के तौर पर आप कुछ नित्य व्यवहृत शब्दों का चयन करें और पाली भाषा के साथ मिलान करें जैस ଆଖି (eye), କାନ (ear), ହାତ (hand), ନଖ (nail), ମୁଖ (face), ଆମ୍ବ (mango), କୁକୁର (dog), ଏକ (one), ଦୁଇ (two), ତିନି (three), man, body, skin, hair, teeth, nail, lip, nose, leg, finger, many, more... जैसे कई शब्द आपको बिना अपभ्रंश के सही अर्थ के साथ म्याच करते नजर आएंगे । मैंने जितने भी शब्द की परिक्षण किया वह सब 95% से ज्यादा म्याच किये क्यों के मैंने हर शब्दों को म्याच नहीं किया इसलिए में इसको 50% से ज्यादा बताया है। अगर कोई भाषा अतीत का पाली भाषा से सही सही म्याच करे वह वही भाषा नहीं है तो क्या है? पाली से ही हिंदी भाषा पैदा हुआ है संस्कृत से नहीं। संस्कृत भी पाली से बना एक भाषा है जिसका कोई सामाजिक भाषिय भूखंड ही नहीं है। उनकी काल्पनिक देवादेवियों की तरह इनकी संस्कृत भाषा भी नकली है। दुनिया की कोई माँ उसकी बच्चे को संस्कृत सिखाते हुए आप को नहीं मिलेंगे क्यों के ये कभी भी इंडियान भूखंड का ना सामाजिक भाषा रहा ना कीसिका मातृभाषा; ये ब्राह्मणों की बनायी हुयी उनके काल्पनिक देवादेवियों के सम्बाद करने केलिए भाषा है जिस को बोल के वह उनके फॉलोअर को चुना लगाते आये हैं और ये सब भाषा के जननी बोलके साहित्य और इतिहास पर वर्चस्व कायम करने की कोसिस करते हैं । आप बोल सकते हैं ये इंडियन देशी धूर्त्तों की ठगने की भाषा है जिसको 99% लोग समझ नहीं पाते और ये उस को बोलकर लोगों को चुना और उल्लू बनाते हैं और धोका देते हैं; क्यों के बुद्ध का मातृभाषा पाली था और वह अपना सिक्ष्या पाली में देते थे इससे ये प्रमाणित होता है बुद्ध ओड़िआ थे नेपाली नहीं । इंडियन बौद्ध विरोधी देशी धूर्त्तों ने बुद्ध को हमेशा इंडिया का बाहर बताने की कोसिस की और बौद्ध विरोधी सावरकर ने अपना "हिन्दुत्व: में हिन्दू क्यों हूँ" लेख में बुद्ध को विदेशी और बौद्ध विचारधारा को विदेशी विचारधारा बताया । ये धूर्त जातिवादी प्रमोटर लोग ब्रिटिश इंडिया में काम करता जर्मनीका पुरातत्त्वज्ञ यानि आर्कियोलॉजिस्ट एलोइस एंटन फ्यूहरर के द्वारा बुद्ध का जन्म भूमि नेपाल बताया और उसकी झूठी प्रोपेगंडा आज भी सारी दुनिया में जारी है; इसलिए आज भी लोग ये जानते हैं बुद्ध इंडिया की नहीं नेपाल के हैं। जब की छोटा सा तर्क ही बता देता है बुद्ध इंडिया और ओडिशा का हैं क्यों की उनकी मातृभाषा पाली था और अतीत का पाली आज का ओड़िआ है। नेपाल की भाषा को गोर्खाली,

गुरखाली या खशकुरा बोला जाता था पाली नहीं और नेपाल में कोई भी बौद्ध विचारधारावाला राजा नहीं था सीबाये जातिवादी के । हमारे भूखंड में सबसे बड़ा खतरनाक लोग देशी जातिवादी बौद्ध विरोधी मुलनिवाशी के पूर्वज और उनका पीढ़ियां हैं; जो विदेशी आक्रांताओं से भी ज्यादा खतरनाक हैं । इनलोगों ने ही देश का सत्यानाश किया हुआ है । बौद्ध धम्म/धर्म को ही सनातन धर्म कहते है जातिवाद को नहीं। जिसका सत्य से शना हुआ तन है वह है सनातन । बौद्ध विचारधारा हमेशा इंसान की मन और तन को सत्य के साथ जोड़ता है वैदिक जातपात छुआछूत और उनके झूठी भ्रम की काल्पनिक देवादेवियों की दुनिया नहीं । इनका विचारधारा इंसान की मन और तन को मिथ्या और भ्रम से जोड़ता है; इसलिए, क्यों के इनका मिथ्या से शना(भीगा) हुआ तन है इसलिए इनके विचारधारा को सनातन नहीं मिनातन धर्म कहना चहिये; यानि कोई भी विचारधारा जो सत्य के आधार पर बना हो उसको सनातन और जिसका आधार मिथ्या है उसको मिनातन धर्म या मिनातन विचारधारा कहाजाता है। अगर एक अनुयाई मिथ्या के बेस पर बना विचारधारा का अनुयाई है वह मिनातनि है और जो सत्य के बेस पर बना विचारधारा का अनुयाई है वह सनातनी है । जो सत्य का खोज करे वह है सनातन और ये लोग झूठ, भ्रम, अंधविश्वास और ठगने की तरिका का खोज करते हैं ताकि लोगों की शोषण और उत्पीड़न करसकें इसलिए उनके प्रचारक सब धूर्त, पाखंडी, ठग, ढोंगी और भोगी होते हैं; खुद मिनातनि होते हैं और खुद को सनातन बोलकर प्रमोट करते रहते हैं जबकि इसका अर्थ भी कइयों को पता नहीं होता है; सत्य के राह पर चलना ये सदियों कई सिभिलाईजेसन का नैतिक आधार बना हुआ है और ये विचार बहुत पुरानी है और सदियों से ये सोच का समर्थन हर कालखंड में होता आ रहा है । हमसे बौद्ध विचारधारा लेकर चाइना और जापान कहाँ है खुद सोचो और जातिवादी हम को बनाकर धूर्तों ने भूखंड का क्या हाल किया वह भी देखो। कुछ ब्राहमणों का कहना है वह इसलिए बड़ा हैं क्यों के उनके हिसाब से मुख ही शरीर का प्रमुख है लेकिन ये मुर्ख ये भूल जाते हैं उससे बड़ा मुख के उपर जो शरीर का बुद्धि है वह बड़ा है मुख को बुद्धि ही कंट्रोल करता है; सत् बुद्धि का अनुयायी बनो इस भूखंड का ही सबसे पुराना प्रमुख विचारधारा है जो है बौद्ध धर्म; धूर्त, चोर, ठग, उपद्रवी, बाहुवली, जंगल के दस्यु और डाकू, गुण्डे मवालियों का संगठित ठगों का गठबंधन ही ब्राह्मणवाद जातिवादी विचारधारा है, इसको कोई मनु या ब्रह्मा या GOD नहीं बनाया; धूर्त, कपटी, चोर, ठग, उपद्रवी, बाहुवली और डाकू, जंगल के दस्यु, गुण्डे मवालियों का भगवा पहनना या ऋषि या साधु के वेश में पाखंडता करना ये प्रमाणित नहीं करता उनका कर्म साधुओं के जैसे हैं । ये अगर जिन्दा रहा आनेवाला पीढ़ियों का क्या होगा उसको भी सोचो। इंडिया को अगर चाइना, जापान जैसे आगे बढ़ाना है तो लोगों को धर्मांध नहीं "नैतिकतावादी और विज्ञानवादी" बनाना जरुरी है; अंधभक्त नहीं । हम को ये भी याद रखना जरुरी है कोई भी विचारधारा को छल बल, हिंशा, कपटता, प्रलोभन यानि धन या नारी प्रलोभन से भी प्रचार प्रसार किया जासकता है; लोगों की अपनी अपनी स्वार्थ और मतलव होते हैं और उनका सामाजिक एक्जिस्टेन्स कलिये जो उनको अच्छा लगे अपने मतलव के हिसाब से भी विचारधारा अपना लेते हैं इसका सबसे बड़ा उदाहरण हमारा देश का पार्टिसन है । पाकिस्तान का स्पिरिचुअल फादर मुहम्मद इकबाल भी जानते थे उनका पूर्वज कश्मीर पंडित थे; ये जानते हुए भी पकिस्तान की रचना की । पाकिस्तान का संस्थापक मुहम्मद अली जिन्ना भी जानते थे उनका पूर्वज गुजराती बनिया थे; ये जानते हुए भी पकिस्तान की रचना की यानि मुहम्मद अली जिन्ना का पिता पुंजालाल ठक्कर उपनाम पूंजा जिन्ना का दादा जी प्रेमजीभाई मेघजी ठक्कर थे, वे गुजरात के काठियावाड़ में गोंडल राज्य के पनेली गाँव के एक लोहाना थे । उन्होंने मछली व्यवसाय में अपना भाग्य बनाया था, लेकिन उनकी लोहाना का मजबूत धार्मिक मान्यताओं के कारण उन्हें अपनी शाकाहारी लोहाना जाति से बहिष्कृत कर दिया गया था । यहांपर ध्यान देना लोहाना ट्राइब शाकाहारी था जो की बलिदेनेवाले वैदिक विचारधारा से दूर बौद्धवादियों का शाकाहारी होना या

जीव का हत्या नहीं करनेका विचारधारा को सपोर्ट करता था यानि प्रच्छन बौद्धवादी पूर्वजों की संतान थे। जब उन्होंने अपना मछली व्यवसाय बंद कर दिया और अपनी जाति में वापस आने की कोशिश की, तो जातिवादी धर्म के स्वयंभू रक्षकों के विशाल अहंकार के कारण उन्हें ऐसा करने की अनुमति नहीं थी । नतीजतन, उनके बेटे, पुंजालाल ठक्कर (जिन्ना के पिता), अपमान से इतने नाराज थे कि उन्होंने अपने और अपने चार बेटों के धर्म को बदल दिया और इस्लाम विचारधारा अपनालिया । जिन्ना के पिता पूंजाभाई जिन्नो पहली पीढ़ी के मुस्लिम थे । और यही दो सक्स यानि एक ब्राह्मण से बना मुस्लिम और दूसरा जातिवादी ब्योपारी से बना मुस्लिम जो अबके जातिवादी पीढ़ियों से कॉनवर्ट मुस्लिम थे पकिस्तान यानि इंडियन मुस्लिमों का देश पकिस्तान की रचना की जब की इस्लाम इस भूखंड में 700AD के बाद आया था और कई इस्लामी राजा और महाराजा की पीढ़ियां भी यहाँ बसते होंगे जो इनसे भी ज्यादा पुराना मुस्लिम हैं उन्होंने कभी इस्लाम विचारधारा के आधार पर देश बाँटने की बात नहीं की । बात धर्म की नहीं मतलव और संगठित मतलव की होता है । कुछ धर्म के आड़ में सिर्फ अपना मतलव की धन्दा ही करते हैं ।

ब्रिटिश इंडिया पार्टिसन होने का बाद ये स्वतंत्र इंडिया, पाकिस्तान और बांग्लादेश में बँट गया। इंडिया का नाम को लेकर भी बड़ी उलझन हैं; कुछ इसका नाम इंडिया रखना पसंद किया, कुछ हिन्दुस्थान रखने को कोशिस की तो कुछ भारत रखना पसंद किया । नाम रखने से पहले नाम की ओरिजिन और देश का नाम रखने केलिए ये नाम कितने काबिल हैं उसका विश्लेषण सायद कभी किया नहीं गया । हमारे देश का कुछ रूढ़िवादी जातिवादी मुर्ख देश को माता मानते हैं; ठीक है आप माता, पिता, दादा, दादी, मामा, मामी, भान्जा, भान्जी, भतीजा या भतीजी, बेहेन, भाबी या बीबी कुछ भी समझो क्यों की एंटिटी अगर एक नारी की है तो उसके कई रिस्तें हैं लेकिन नाम रखा एक पुरुष का ये कितना तार्किक है? अगर किसीका नाम "राम" है; आप इसको कोई भी लैंगुएज में बोलो नाम हमेशा राम ही रहेगा ना रहीम होगा ना श्याम होगा । इंडिया एक ऐसी देश है जिसका नाम इंडिया है लेकिन हिंदी में इसको "भारत" बोलते हैं; जब की ये एक अलग नाम है। इंडिया में ऐसे कोई भी लड़की नहीं जिसका नाम भारत हो । भारत दरअसल एक पुरुष का नाम है लड़की की नहीं । इंडिया का भूखंड हमेशा राजा महाराजाओं का भूखंड रहा ये कभी कभी अनेक राजाओं का भूखंड रहा तो कभी यूनाइटेड हो कर एक राजा का सबसे बड़ा अखंड भूखंड रहा । किंग अशोक ने सबसे बड़ा भूखंड बनाया जिसको हम असोका किंगडम कहते हैं जो की एक बौद्ध राष्ट्र था जातिवादी राष्ट्र नहीं । इंडिया के बौद्ध अनुयायों की ही हिन्दू कहा जाता था; तो इस हिसाब से आप इसको हिन्दूराष्ट्र या सिन्धुराष्ट्र भी कह सकते हो । बौद्ध धर्म में वर्णवाद नहीं होते इसलिए बौद्ध अनुयाई उपनाम "हिन्दू" अवर्ण होते हैं । जो चार वर्ण को मानने वाले लोग हैं वह असलियत मैं वर्णवादी यानि जातिवादी होते हैं और क्यों के वेद ही वर्ण का वर्णन करता है ये वैदिकवादी होते है हिन्दू नहीं । भारत/भरत चरित्र भी बौद्ध शास्त्र दशरथ जातक(Dasharatha Jataka) कथा और काठहारी जातक (Katthahari Jataka) कथा में देखने को मिलता है, जो के इस मोराल स्टोरी के एक एक पात्र यानि चरित्र है जिनका भूखंड वारणशी तक सिमित था और ये एक काल्पनिक कहानी हो सकता है जो बौद्ध अनुयायिओं को नैतिकता सीखाने केलिए इस्तेमाल किया जाता था। भारत नाम का कोई भी सम्राट कभी भी इतना बड़ा विशाल भूखंड का कभी भी राजा नहीं था ना कभी कोई भारत साम्रज्य कभी यहाँ बनाए; सब ये मुर्ख कपोलकल्पित धूर्त्तों का लिखा गया मान्यतावादी झूठी इतिहास है जो की बस उनकी धूर्त कल्पना से चलता है इसका कोई पुरातत्व साक्ष्य या असली इतिहास आपको नहीं मिलेगा । अगर भारत शब्द का आप पाली भाषा में खोज करोगे तो ये एक पाली शब्द निकलेगा जिसका मतलव जो "धारण और पालन" करता है वह है भारत । "भारत" शब्द सायद हिन्दू महासभा का बौद्ध विरोधी

जातिवादी सावरकर का अपना संगठन "अभिनव भारत" से प्रेरित था क्यों के इस जातिवादी बौद्ध विचारधारा विरोधी रूढ़िवादी चितपावन मराठी ब्राह्मण को ये पता नहीं होगा की भारत शब्द जिसको वह अपना ओरिजिन और प्रतीकात्मक नाम के तौरपर इस्तेमाल करना चाहता है उसको भी उनके ही विचारधारा की पूर्वजों ने कहीं से चुराया है । कांग्रेस हमेशा जातिवादियों का वर्चस्व पोलिटिकल पार्टी रहा ये बस प्रच्छन जातिवादी और पाखंडी सेकुलार है क्यों के इनका नेता पंच गौड़ ब्राह्मण मदन मोहन मालवीय (२५ दिसंबर १८६१ - १२ नवंबर १९४६) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के तीन बार अध्यक्ष रहे और अखिल भारतीय हिंदू महासभा के ये संस्थापक थे; हिंदू महासभा के अध्यक्ष राजेन्द्र प्रसाद और लाला लाजपत राय भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का भी अध्यक्ष रहे । 1937 से लेकर 1944 तक सावरकर हिंदू महासभा के अध्यक्ष रहे । गाँधी का हत्या गोडसे ने सावरकर के कहने पर किया और काँग्रेस हुकूमत उसका अभिनव भारत का "भारत" का नाम अपने शासन काल में ही "इंडिया दाट इज भारत" आडॉप्ट किया; 1947 से पहले कोई भी राज वह इस्लाम राज हो या ब्रिटिश राज; इस नाम का कभी भी इस्तेमाल नहीं किया ना इसका इतिहास कोई लिखा है । इसलिए गाँधी के हत्या में कांग्रेस निसंदेह शामिल था इसको भी नजर अंदाज़ नहीं किया जा सकता क्यों के सावरकर का संगठन का नाम देश के नाम केलिए क्यों चुना गया ये हमेशा एक संदेहस्पद प्रश्न बनके रहेगा; कांग्रेस से निकले रूढ़िवादी कट्टरवाद जातिवादी ही RSS और BJP जैसे संगठन बनाया हुआ है और ये RSS और BJP के अंधभक्त मुर्ख लोग उनका कमन सेन्स भी नहीं इनको पुलिंग और स्त्रीलिंग का फर्क क्या है । देश को माता मानते हैं और नाम एक पुरुष का रखते है और नारा लगाते हैं "भारत माता की जय?" अरे मूर्खों अगर माता मानते हो तो एक नारी का नाम रखो; बोलो "मा भारती की जय" या बोलो "भारत पिता की जय।" आप देश बदल लो, प्रदेश बदल लो, धर्म बदल लो, जात बदल लो या लिंगुइस्टिक रेस बदल कर दूसरा ल्यांगुएज को अपना मातृभाषा बनालो रहोगे वही इंसान ही; जितने भी अलगाओबाद का आप गेम खेलो आप इंसान को कोई दुसरा स्पेसिस से रूपांतरण नहीं कर सकते; हाँ चरित्र जरूर पशुओं के जैसे बना सकते हो लेकिन स्ट्रक्चर इंसान ही रहेगा, तो आप तय करो इंसान बनना है या जानवर या शातिर जानवर । अंत में बस यही कहना है जातिवादी हिन्दू नहीं हैं और ये बौद्धवादी होते हैं । अगर आप सच में हिन्दू पहचान चाहते हैं तो खुद को जातिवाद से अलग करें और जातिवादी के बदले खुद को अवर्ण बोलें; क्यों के हिन्दू अवर्ण यानि जातिविहीन और जातिविरोधी होते हैं; अगर जातिवाद पसंद हैं तो खुद को हिन्दू नहीं "जातिवादी" नामसे सामाजिक पहचान दें । सरकारी आधिकारिक दस्तावेजों में जो अब जातिवादी को हिन्दू कहा जाता है इसको हटा के इसका नामकरण जातिवादी होना चाहिए और अवर्ण इंडियन को ही हिन्दू पहचान दिया जाना चहिये; इससे में 100 % हूँ हमारे देश में सुधार की शुरुआत अवश्य हो जायेगी । -BNS

** लेख में रिपीटेसन, टाइपिंग और ग्रामेटिकल मिस्टेक्स को नजरअंदाज करें क्यों के में ना कोई लेखक हूँ ना मेरा पास पर्याप्त समय होता है एडिटिंग करने केलिए, हाँ समय देखकर सत्य की खोज जरूर करता हूँ; मेरे खोज के हिसाब से में लिखता चला जाता हूँ और उसको मिलाकर कम्पोज करता हूँ; जिस केलिए रिपिटेशन एक आम बात होगी । में हिंदी लिंगयुईस्टिक रेस से नहीं हूँ इसलिए मेरा ग्रामेटिकल मिस्टेक होगा इसलिए इन सबको नजर अंदाज करें ।*

Constable's Hand Atlas of India.

Plate 15

THE 1893 GENERAL POLITICAL MAP OF THE INDIAN EMPIRE

The Native & Protected States are coloured yellow.

1893

सृपासं

जिसको आपको भगवान या ईश्वर कहते हैं वह दरसल बुद्ध का नाम है और बुद्ध GOD ही नहीं एक इंसान थे । भगवान या ईश्वर ये दो शब्द इंडिया में गॉड (GOD) केलिए इस्तमाल होता है जो की बौद्ध विरोधियों यानि ब्राह्मणों की बजह से है; क्यों के ये बौद्ध धम्म को ख़त्म करते हुए उनके नाम को भी अपभ्रंश और भ्रष्ट किया हुआ है । GOD का कोई एकार्थ शब्द इंडिया में पैदा ही नहीं किया गया। चलो एक शब्द ही पैदा करदेते हैं।

G - Generator - सृष्टिकर्ता
O – Operator - पालनकर्ता
D – Destroyer - संहारकर्ता

GOD को सर्बोच्च रचनाकार के अर्थ में इस्तमाल किया जाता है और हमने देखा G, O, D को कौनसा मतलब से इस्तमाल कियाजाता है। इसी नियम को अनुकरण करते हुए हम प्रत्येक शब्द का पहला अक्षर योग करदेते हैं और ये बनजायेगा सृ-ष्टिकर्ता, पा-लनकर्ता, सं-हारकर्ता "सृपासं" ये है आपकी GOD की असली शाब्दिककरण । अजब लगेगा लेकिन ये GOD का ही शाब्दिक भाषान्तिकरण है जिसको कोई नहीं किया । बहुत सरल है; लेकिन कोई इसपे ध्यान ही नहीं दिया लेकिन ब्राह्मणों की द्वारा बुद्ध का नाम को अपभ्रंश करते हुए उसको ही GOD का आर्थिक शब्द बतादिया और बुद्ध का पहचान की हत्या करदिया । इसको कहते हैं पहचान की हत्या ।

आप Generator, Operator, Destroyer का अपने भाषा में अनुवादकरें और बस आपको उनके पहला अक्षर जोड़कर GOD का असली नाम बनायें।

Generator= जनक, जन्मदाता, उत्पन्न करनेवाला
Operator= प्रचालक, संक्रियक, पालनकारी
Destroyer= विध्वंसक, नाशक, विनाशक

तो अब आप को पहला अक्षर ही जोड़ना है और बनजाएंगे आपकी GOD का कई नाम जैसे जप्रवि, जसंना, उपावि, जप्रना, जसंवि इत्यादि इत्यादि।

क्या आपको पता है भगवान, का मतलब गॉड/देवता या देवादेवी/ख़ुदा नहीं होता? भगवान एक पाली शब्द है जो दो पाली शब्द का मिलान से बना एक शब्द है । भगवान पाली शब्द "भग्गो" और "वान" का मिश्रण से पैदा एक शब्द है । "भग्गो" का अर्थ विनाश करना या समाप्ति करना और "वान" का अर्थ इच्छा, कामनाओं, अभिलाषा या लोभ होता है; इसीलिए जो इच्छा, कामनाओं, अभिलाषा या लोभ की समाप्ति या विनाश करता है उनको ही भगवान कहते हैं । बुद्धि यानी ज्ञान की अनुयायी बनो की सन्देश देनेवाला बुद्ध ही चार आर्य सत्य और अष्टांगिक मार्ग से लोगों की मन की मैल यानी उनकी इच्छा, कामनाओं, अभिलाषा या लोभ की विनाश यानी

समाप्ति करते थे; इसलिए उनको ही केवल भगवान कहाजाता था । बौद्ध विरोधी देवादेवीवाद विचारधारावालों का गॉड/देवादेवी इच्छा, कामनाओं, अभिलाषा या लोभ की समाप्ति या विनाश नहीं करता है, बल्कि उन सबकी प्राप्ति करवाते है; इसलिए उनको देवादेवि कहते है यानी जो देते हैं या देने की मनसा से पूजा जाते हैं उनको ही देवता कहा जाता है । एक अपराधी मानसिकता रखनेवाला व्यक्ति की भी गॉड/देवादेवी/ख़ुदा उसकी मनसा की प्राप्ति करवाते हैं यानी चोर अगर देवताओंको चोरी की सफलता के लिए पूजा करता है वह उस को गलत समझ कर उस अभिलाषा की समाप्ति नहीं करते बल्कि उसकी कामनाओं की प्राप्ति करवाते हैं जिससे वह कामयाब होने के वाद अपने सर से पाप का बोझ उतारने के लिए गॉड/देवादेवी/ख़ुदा को दान से भर देता है और अपने आपको साफ़ और पाप मुक्त कर लिया सोचता है । यानी ये विचारधारा पाप करने को बढ़ावा देना और उनसे बैठ बैठ के कमाने के मक़सद से ही बनाया गया विचारधारा है । क्यों की बुद्ध GOD नहीं एक इंसान थे यानि ज्ञान देनेवाले गुरे थे; और उनका भगवान और ईश्वर नाम उनके देवादेवियों को छोटा करदेता था तो वह ये नाम ही चोरी करके अपने देवादेवियों केलिए अपना हिसाब से यूज करने लगे। बौद्ध विरोधी धूर्त्तों का फ्याब्रीकेसन प्याटर्न में एक सबसे बड़ा कमन प्याटर्न ये है, ये हमेशा अपना विचारधारा के पक्ष में नाम बदलते रहते हैं और जिसका नाम बदल नहीं पाते उसका अर्थ बदलकर अपना बताते हैं । बुद्ध को कई भाषिय सभ्यता में अपना अपना चाहिता नामसे बुलाया करते थे; बुद्ध का नाम ही गणेश, अष्टविनायक, विनायक, जगन्नाथ, भुबनेश्वर, विश्वनाथ, अमरनाथ, केदारनाथ, वद्रीनाथ, तिरुपति, अयप्पा इत्यादि इत्यादि था लेकिन बौद्ध विरोधियों ने इस नामको अपने काल्पनिक देवादेवियों केलिए इस्तेमाल करके बुद्ध का पहचान को ही हत्या किया है; इसको आप पहचान की चोरी यानि आइडेंटिटी थेफ़्ट भी बोल सकते हो, इसलिए ये विचारधारा का चोरी भी किया और उसको गन्दगी से भी भरा हुआ है । ये याद रखें "भगवान और ईस्वर" GOD नहीं होता और "भगवान और ईस्वर" केवल बुद्ध ही है, वैसे ही भगवा भी एक पाली शब्द है जिसका मतलब बुद्ध ही है । भगवा, भगवान और ईस्वर बुद्ध का नाम है; और इसका अर्थ GOD नहीं होता; इसका अर्थ बुरे कामनाओं की विनाश करने वाला होता है जो बुद्ध ही हैं । ये याद रखना में किसी के सपक्ष या बिपक्ष में बात करनेवाला नहीं हूँ; में एक प्रिंसिपल से इन सबकी ब्याख्या कर रहा हूँ वह है सत्य, तर्क, विज्ञान, वास्तवता, नैतिकता और मजूद पुरातात्त्विक प्रमाण और उनके लॉजिकल इंटरप्रिटेसन से; आप इसको खंडन करने का पूरा अधिकार रखते हैं मगर मूल आधार बस वही होना चाहिए । ईश्वर एक पाली भाषा शब्द है और ये दो शब्द योग से बना एक शब्द है । ईस + वर = शासक/अधिपति/प्रमुख + उत्तम/परम/महान/नायक = प्रमुख नायक, महान अधिपति, उत्तम शासक इत्यादि इत्यादि; जब इंडिया बौद्ध राजाओं का भूखंड रहा तब बुद्ध केलिए ही ये इस्तेमाल किया जाता था क्यों के उनके विचारधार से प्रेरित होकर राजाओं अपने शासन कार्य किया करते थे ।

Pali dictionary

Enter your English or Pali word for translation in the search box below and click 'SEARCH'. Dictionary search

Close Match and Related Words

Isabel : pītadhūsara .

chief : padhāna ; jeṭṭha ; mukhya . issara ; īsa ; adhipati ; nāyaka ; netu .

lord : adhipa ; adhipati ; inda ; issara ; īsa ; nātha ; nāyaka ; sāmī . issariyaṃ pavatteti . īsattaṃ pāpeti . pavattita-issariya ; īsattaṃ pāpita || Lord Chancellor: akkhadassāmacca .

ईस ; īsa ; a lord ; ruler .

Pali dictionary
Enter your English or Pali word for translation in the search box below and click 'SEAR
वर
Search
English to Pali translation
Pali to English translation [To type Pali words]
Browse for basic Pali vocabulary words :
All A B C D E F G H I J K L M N O P Q R S T U V W X Y Z
Pali translation from Modern English to Pali dictionary online for the word वर:
Close Match and Related Words
वर ; vara ; excellent ; noble . a boon ; favour .

Pali dictionary
Enter your English or Pali word for translation in the search box below and click 'SEARCH
vara
Search
English to Pali translation
Pali to English translation [To type Pali words]
Browse for basic Pali vocabulary words :
All A B C D E F G H I J K L M N O P Q R S T U V W X Y Z
Pali translation from Modern English to Pali dictionary online for the word vara:
[Click the audio icon to hear the pronunciation of English words.]
Did you mean : vary era arc arm art area van bar car
Close Match and Related Words
best : vara ; pavara ; seṭṭha ; uttama ; parama . yathāsattiṃ ; yathābalaṃ .
boon : vara ; anuggaha . pasādadāna . pamudita ; cāgasīlī .

भगवान भी एक पाली सब्द है जो दो शब्द योग से बना एक शब्द है। भग्गो + वान = भग्न या नष्ट करना + इच्छा या कामना = भग्गोवान = भगवान यानि भगवान वह है जो इच्छाओं या कामनाओं को भग्न करता है और वह हैं बुद्ध। बुद्ध अपना अष्टांगिक मार्गसे लोगों की इच्छा और कामनाओं को भग्न करने के कारण उनको ही भगवान कहते थे ।

Pali dictionary
Enter your English or Pali word for translation in the search box be
भग्गो
Search
English to Pali translation
Pali to English translation [To type Pali words]
Browse for basic Pali vocabulary words :
All A B C D E F G H I J K L M N O P Q R S T U V W X Y Z
Pali translation from Modern English to Pali dictionary online for t
Close Match and Related Words
भग्गो ; bhaggo ; Broken

Pali dictionary
Enter your English or Pali word for translation in the search b
वान
Search
English to Pali translation
Pali to English translation [To type Pali words]
Browse for basic Pali vocabulary words :
All A B C D E F G H I J K L M N O P Q R S T U V W X Y Z
Pali translation from Modern English to Pali dictionary online
Close Match and Related Words
वान ; vāna ; craving ; netting of a bed .
वान ; vānaṃ ; Desire , lust

सनातन वह है जिसका "सत्य से सना हुआ तन" हो ! बौद्ध धम्म ही इंसान का मन और तन को सत्य के साथ जोड़ता है; वर्णवाद या वैदिक विचारधारा नहीं; बौद्ध विचारधारा ही सनातन धम्म/धर्म है । वैदिक विचारधारा आपके तन और मन को झूठ और भ्रम के साथ जोड़ता है इसलिए इन के "मिथ्या से सना हुआ तन" होता है यानि ये असलियत में ये "मिनातन" धर्म है। -BNS

JAGANNATHA

ANTI CASTE IDOL

जगन्नाथ बुद्ध का नाम है जिसका शाब्दिक अर्थ है जगत (विश्व) + नाथ (गुरु) = विश्व गुरु.

बिना मुँह, का मतलब बिना ब्राह्मण के समाज

बिना जांघ, का मतलब बिना वैश्य के समाज

बिना भुजा, का मतलब बिना क्षत्रिय के समाज

बिना पाँव, का मतलब बिना शूद्र के समाज

वर्तमान जगन्नाथ की मूर्ति, वैदिक जाति व्यवस्था के विरुद्ध बनी एक मूर्ति है

वर्तमान जगन्नाथ की मूर्ति वैदिक जातिप्रथा के बजाय समानता के समाज को समझाता है

WHAT SHOULD BE THE PUNISHMENT FOR KILLING IDENTITY?

FROM THE 5TH CENTURY BEFORE CHRIST INDIA WAS A LAND OF BUDDHISM. BUDDHIST FOLLOWERS OF INDIA WAS CALLING HIM GANESHA; WHICH IS COMBINATION OF TWO PALI WORDS "GANA" AND "ĪSA;" GANA, MEANS A GROUP OR SECT; ĪSA, MEANS CHIEF. BUDDHA WAS THE CHIEF OF BUDDHIST MONKS; SO HE WAS NAMED AS GANESHA. GANA+ĪSA=GANAĪSA=GANESHA. AFTER THE DESTRUCTION OF BUDDHISM IN INDIA ANTI-BUDDHIST HAD MADE AN IMAGINARY HUMANOID ELEPHANT GOD AND NAMING IT GANESHA ASSASSINATED THE IDENTITY OF BUDDHA.

गण ; gaṇa ; a gang ; crowd ; sect ; a chapter of monks .

chief : padhāna ; jeṭṭha ; mukhya . issara ; īsa ; adhipati ; nāyaka ; netu .

lord : adhipa ; adhipati ; inda ; issara ; īsa ; nātha ; nāyaka ; sāmī . issariyaṃ pavatteti . īsattaṃ pāpeti . pavattita-issariya ; īsattaṃ pāpita || Lord Chancellor: akkhadassāmacca .

DO YOU KNOW WHO IS REAL GANESHA?

GANESH STREAMED FROM PALI WORD GANAISA (GANA+ISA) WHICH MEANT SANGHA PRAMUKHA I.E. GANA (SANGHA), ISA (PRAMUKHA). GANAISA/GANESHA WAS THE NAME OF BUDDHA. WHEN INDIA WAS THE LAND OF BUDDHISM THEN BUDDHA WAS IDENTIFIED AS GANESHA.
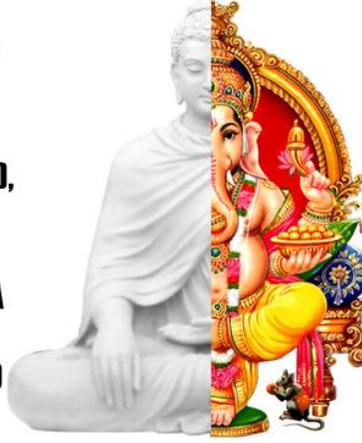
TO DESTROY IDENTITY OF BUDDHA AS GANESHA ANTI-BUDDHIST OF INDIA HAD MADE AN IMAGINARY HUMANOID ELEPHANTED CHARACTER TO DESTROY THE ORIGINAL ENTITY OF GANESHA I.E. BUDDHA. NOW YOU HAVE THE TRUTH CHOOSE ORIGINAL GANESHA OR FAKE.

गण ; gaṇa ; a gang ; crowd ; sect ; a chapter of monks .

chief : padhāna ; jeṭṭha ; mukhya . issara ; īsa ; adhipati ; nāyaka ; netu .

lord : adhipa ; adhipati ; inda ; issara ; īsa ; nātha ; nāyaka ; sāmī . issariyaṃ pavatteti . īsattaṃ pāpeti . pavattita-issariya ; īsattaṃ pāpita || Lord Chancellor: akkhadassāmacca .

MILLIONS HAS BEEN DIED WITHOUT KNOWING THE TRUTH

जातिवादियों ने बौद्ध ज्ञानसम्पदा दशरथ जातक कथा से राम चरित्र चुराकर अपना काल्पनिक वाल्मीकि जातिवादी रामायण की रचना किया और और उसमें कई तरह की काल्पनिक चरित्र भरकर जातिवादियों का जमकर ब्रेनवाश किया; 16 वीं शताब्दी में तुलसीदास उनसे भी एक कदम आगे बढ़ गए उनका खुद की वर्सन की रामचरितमानस और हनुमान चलिशा बनाकर जातिवादी प्रोमोटर्स ने जमकर इसकी प्रमोसन करके बौद्ध धर्म से कन्वर्ट हुए जातिवादियों का और भी ब्रेनरेप और ब्रेनवास किया जब की बौद्ध राम कथा इन से हजारों साल पुराना है और इस बात को ही इस सभ्यता से ही ये बौद्ध विरोधी पूरी तरह गायब करने की कोसिस किया ।

Buddhist temple
fabricated to Vedic
Vaishnavism after
820AD.
NEELA CHAKRA IS NOTHING
BUT BUDDHISM'S DHAMMA
CHAKRA THAT REPRESENTS
EIGHT FOLD PATH OF BUDDHA.
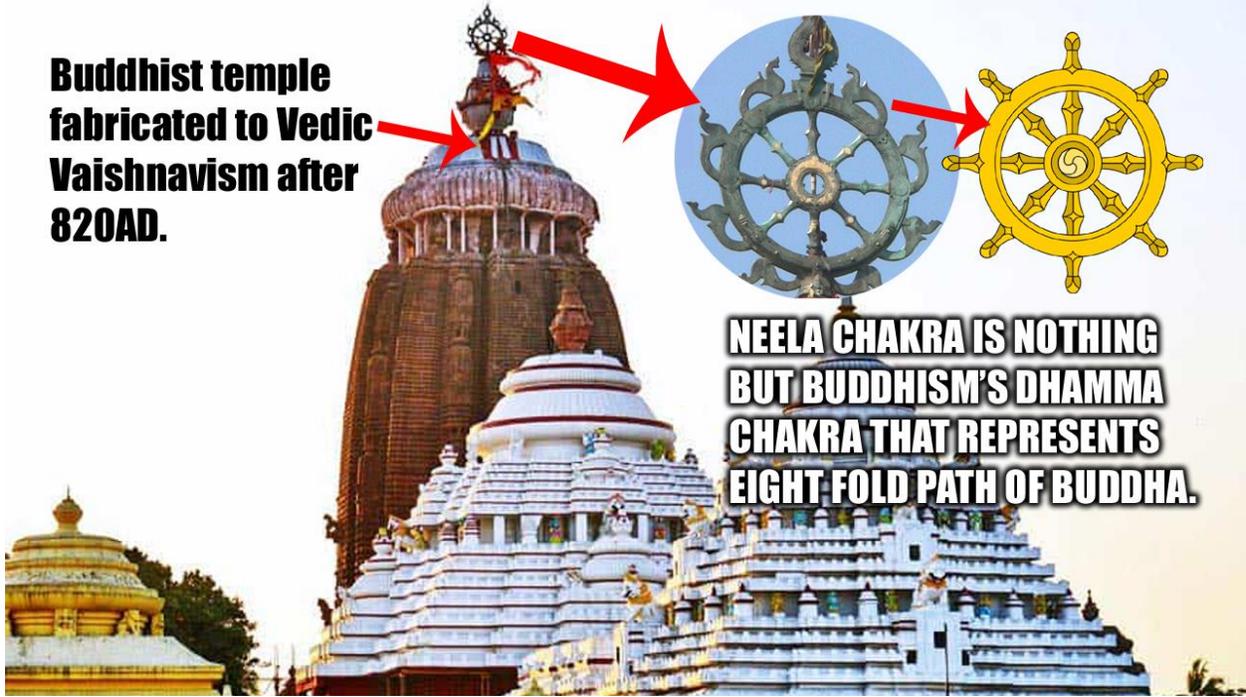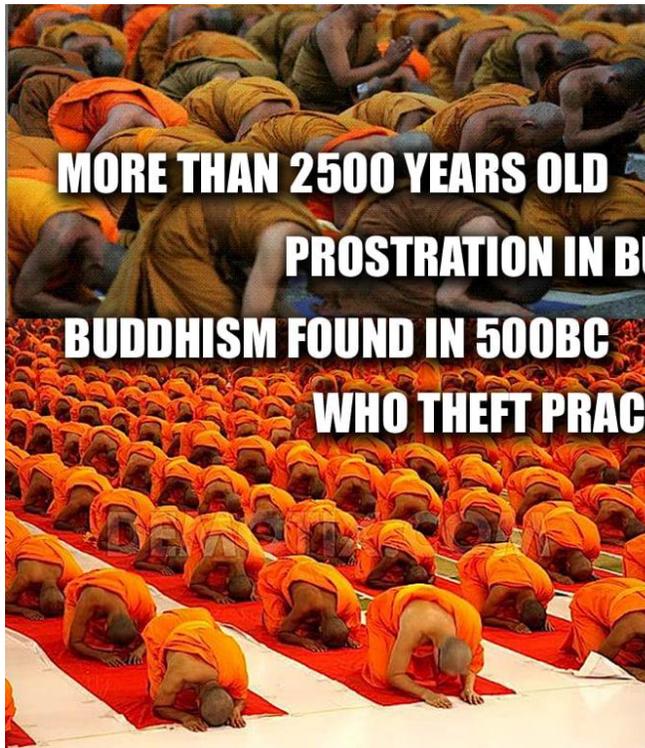
MORE THAN 2500 YEARS OLD
ONLY 1,411 YEARS OLD
PROSTRATION IN BUDDHISM AND ISLAM
BUDDHISM FOUND IN 500BC
ISLAM FOUND IN 610AD
WHO THEFT PRACTICES FROM WHOM?
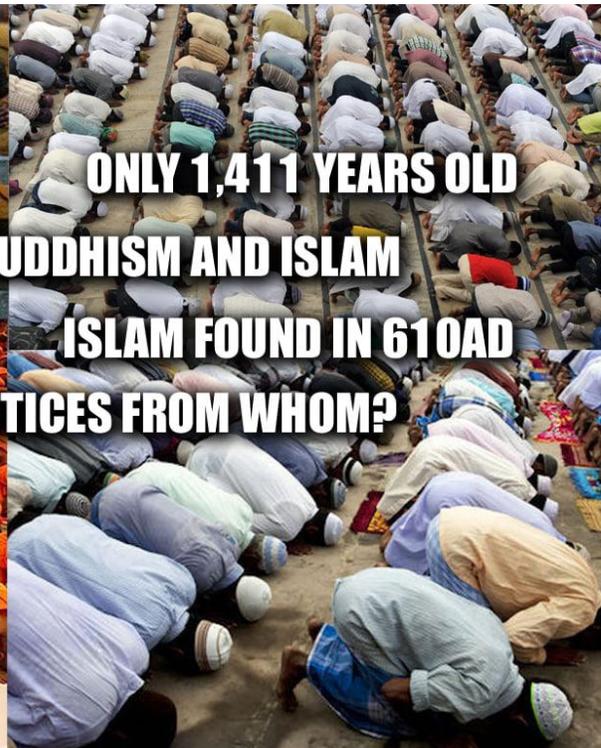
MUSLIM EMBLEMS ARE COPIED FROM BUDDHISM

BUDDHISM IS MORE THAN 1000 YEARS OLDER THAN ISLAM

SHRINE CONCEPT WAS A PART OF BUDDHISM WHERE FOLLOWERS OF BUDDHI OR WISDOM USED TO CONCENTRATE OR MEDITATE TO STABILIZE THEIR MIND WHICH WAS WITH OUT ANY GOD BELIEF SYSTEM; BUT THEIST THEFT THEIR CONCEPT TO VICTIMIZE THEIR FOLLOWERS TO RULE THEIR MIND PUTTING A GOD ENTITY IN THAT PLACE TO CONTROL THEIR BRAIN. THEISTS MADE A GOOD CONCEPT TO A BLIND BELIEF.

ALL MAJOR RELIGION THEFT SHRINE CONCEPT FROM BUDDHISM

CHRISTIANITY,CASTEISM AND ISLAM COPIED BUDDHIST ARCHITECTURE FOR THEIR GOD'S HOME
BUDDHISM WAS THE OLDER MAJOR FAITH THAN ALL MAJOR FAITHS WE HAVE NOW IN THE WORLD
Sanchi Stupa (3rd century BCE)
Sanchi Stupa (3rd century BCE)
Kanheri caves Believed 1st century BCE;
but it may older than 1BC)
Chetiyagiri Buddhist Temple
Puri Temple (1161 CE)
Buddhist structure converted to CASTEISM
Lingaraj Temple (11th century CE)
Buddhist structure converted to CASTEISM
Lalitgiri
Vatican City
Dome of the Rock (691 CE)
BRAHMANISM WORSHIPED ONLY FIRE BUT THEIR WAS NO CONCEPT OF TEMPLES IN THEIR FAITH. BUDDHISM HAD MADE STUPAS, BIHARAS AND SHRINES FOR BUDDHA IDOLS WHICH HAD DISPLACED BY IMAGINARY DEITIES OF BRAHMINS AFTER DECLINATION OF BUDDHISM IN INDIA, CHRISTIANITY CAME TO WORLD AFTER 33AD AND ISLAM AFTER 610AD. SO ITS WITHOUT ANY DOUBT THEY ALL COPIED BUDDHIST ARCHITECTURE FOR THEIR GOD'S HOME.
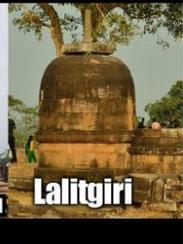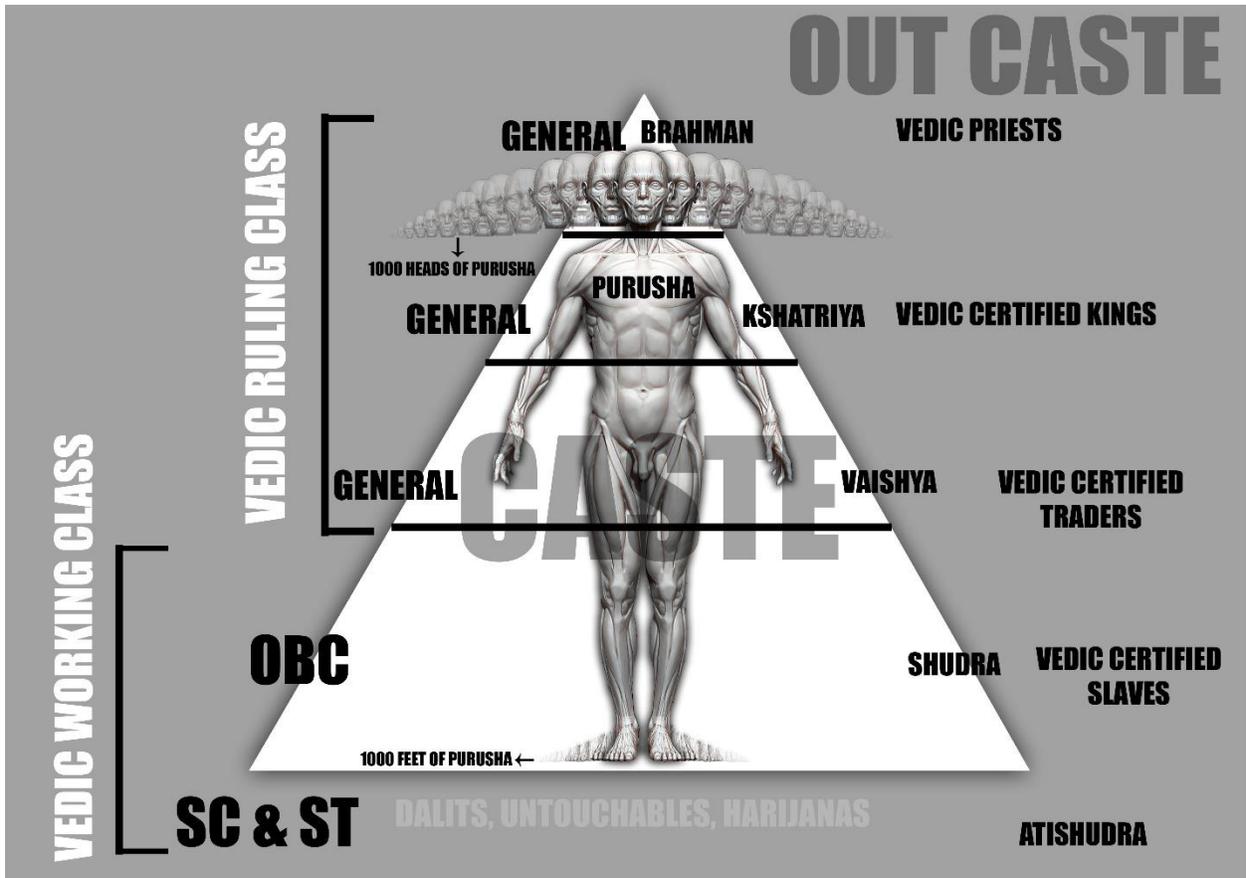
SC & ST + OBC = LOWER CASTES = EKAJA = VEDIC SLAVES = WORKING CLASS ROOT NATIVES

BRAMHAN + KSHATRIYA + VAISHYA = GENERAL CASTES = UPPER CASTES = DWIJA/DVIJA/TWICE-BORN

VEDIC CERTIFIED PRIESTS + VEDIC CERTIFIED KINGS + VEDIC CERTIFIED TRADERS = VEDIC RULING CASTES

VEDA ONLY BANNED FREEDOM OF PROFESSIONS TO ROOT NATIVES OF DIFFRENT LINGUISTIC CLANS IMPLEMENTING PURUSHA SUKTA'S VARNA SYSTEM TO THEIR ADMINSTERED DEMOGRAPHICS

THEOPHILIA CREATES LOGICAL BLINDNESS

IT IS BELIEVED IN HINDUISM HUMANS, ANIMALS, SUN, MOON, WIND, COW, HORSE AND ALL VEDIC CHANTS ARE MADE FROM BODY PARTS OF A SCRIFICED MALE HUMAN.

According to Rig. Vedic Purusha Sukta 10.90 Purusha is described as a primeval giant, not unlike Norse Ymir, that is sacrificed by the gods (Purushamedha) and from whose body the world and the varnas (castes) are built. He is described as having a thousand heads and a thousand feet. He emanated Viraj, the female creative principle, from which in turn the world was made. In the sacrifice of Purusha, the Vedic chants were first created. The horses and cows were born, the Brahmins were made from Purusha's mouth, the Kshatriyas from his arms, the Vaishyas from his thighs, and the Shudras from his feet. The Moon was born from his spirit, the Sun from his eyes, the heavens from his skull. Indra and Agni emerged from his mouth.

VEDA ADVOCATES HUMANS ARE MADE FROM SACRIFICED MALE
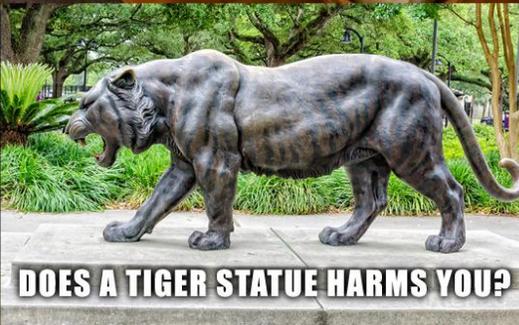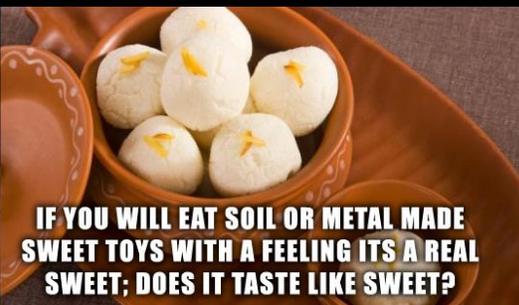
VEDIC CASTE SYSTEM IS A JOKE AND CRIME
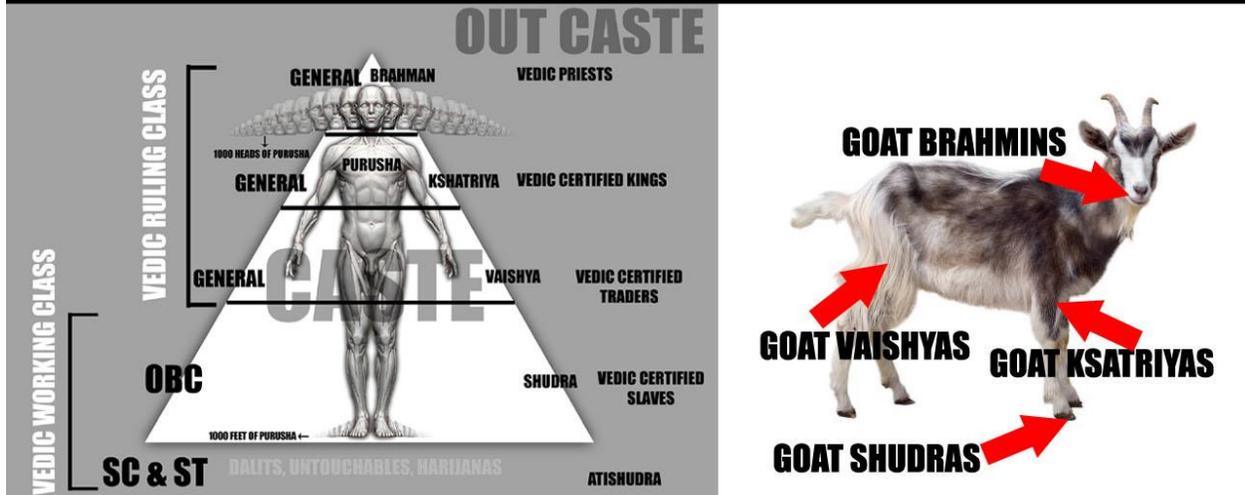
ACCORDING TO PURUSHA SUKTA 10.90 RIG.VEDA, CASTES ARE BORN SACRIFICING I.E. KILLING A COSMIC MALE HUMAN THAT HAD THOUSANDS OF HEAD AND FEET. FROM THE MOUTH PART OF THE SACRIFICED MALE (PURUSHA) BRAHMINS [CLERICS] BORN, FROM ARMS KSATRIYAS [KINGS] ARE BORN, FROM THE THIGH VAISHYAS [TRADERS] BORN AND FROM THE FEET SHUDRAS [WORKING CLASS I.E. SLAVES] BORN. IF SAME FORMULA APPLIED TO OTHER SPECIES THEY WILL HAVE EVEN CASTES.
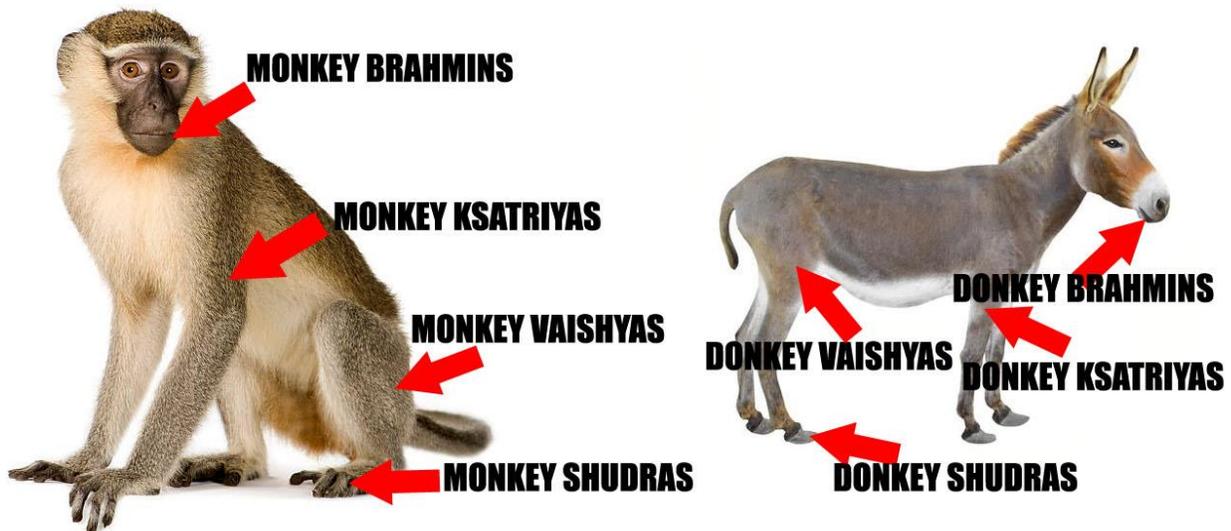
CRIMES IN THE NAME GOD AND RELIGION

GOD ADDICTION OR ADDICTION OF RELIGIOUS IDEOLOGY BY FOLLOWERS IS ONE KIND OF SLAVERY TO THAT IDEOLOGY. WHEN FAITH IDEOLOGY TOTALLY CONTROL THEIR MIND AND ENFORCES THEIR MIND TO COMMIT SOCIAL EVILS IN THE NAME OF THEIR IDEOLOGY, THEN ITS JUST A PSYCHOLOGICAL DISORDER. THEOPHILIA OR ABNORMAL LOVE TO IMAGINARY ENTITY GOD IS JUST A DISORDER.
MORE THAN $ 107,280 BILLION
MORE THAN $ 11,335 BILLION
MORE THAN $6,505 BILLION
THOSE RUN THE FAITH IDEOLOGY NOT ONLY CONTROLS THE BRAINS OF THE FOLLOWERS BUT ALSO MAKE HUGE AMOUNTS OF WEALTH WITHOUT ANY HARD PHYSICAL EFFORTS. ONE CAN SAY ITS JUST A HONEST ROBBERY IN WHICH ROBBERS DOES NOT ROB BY FORCE BUT FOLLOWERS GET ROBBED ITSELF JUST ADOPTING THEIR FAITH SYSTEM.
PROMOTING OR SELLING IDEOLOGY OF FAITH THEY INCOME HUGE AND CONTROL THE MASS FOLLOWERS; WHAT FOLLOWERS GET FROM THE IDEOLOGY OF FAITHS? IS IT LIES, DELUSION, IRRATIONALITY, IGNORANCE, LOGICAL BLINDNESS, BLIND BELIEFS, DISCRIMINATION, DISHARMONY, INEQUALITY, DISHONOR AND MANY MENTAL DISORDERS WITH SOCIAL EVILS?

BELIEVE OR NOT MORE THAN 1000 MILLION VEDIC FAITH FOLLOWERS CONTROLLED BY ONLY MIND BORN PSYCHOLOGICAL CHARACTERS AS THEIR DEITIES. THESE ENTITIES ARE SAME IMAGINATIVE CHARACTERS LIKE SPIDER MAN, SUPER MAN AND HULK ETC.
THOUSANDS OF MIND BORN SUPER CHARACTERS ARE THERE...
BIGGEST CHEATING IN HUMAN RACE
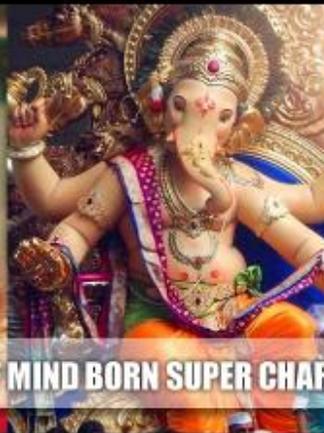
HUMAN MIND DIFFERENTIATE US FROM OTHER ANIMALS
STUPA/CHAITYA
HUMAN MIND
THIS IS THE EMBLEM OF BUDDHISM
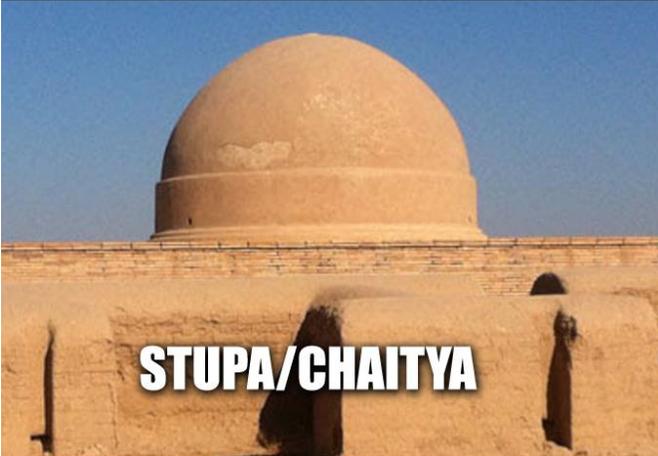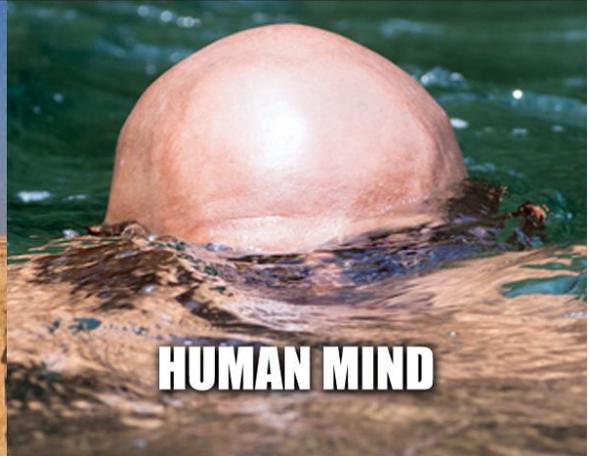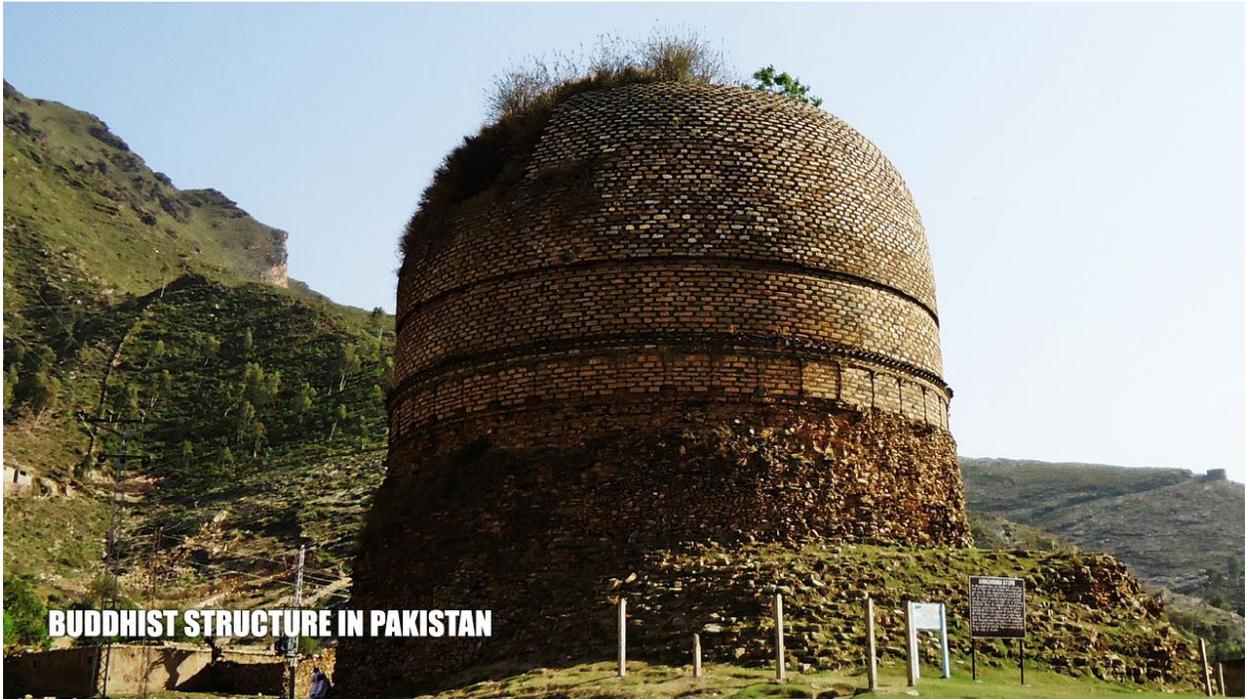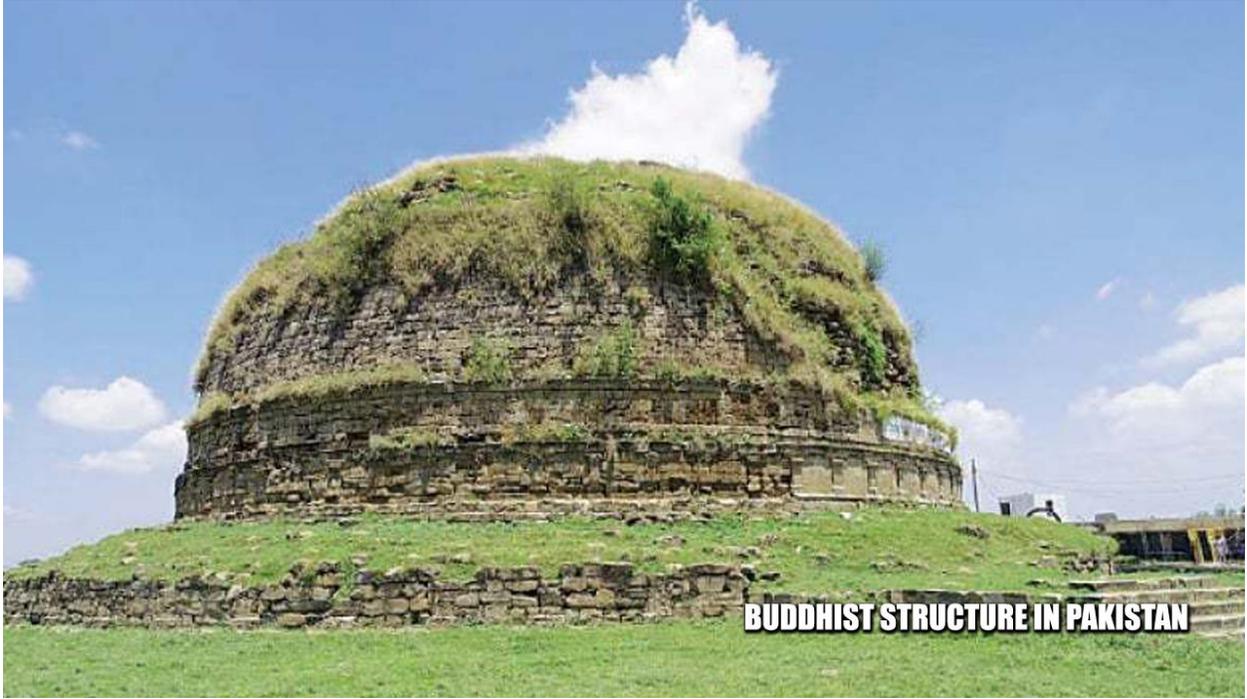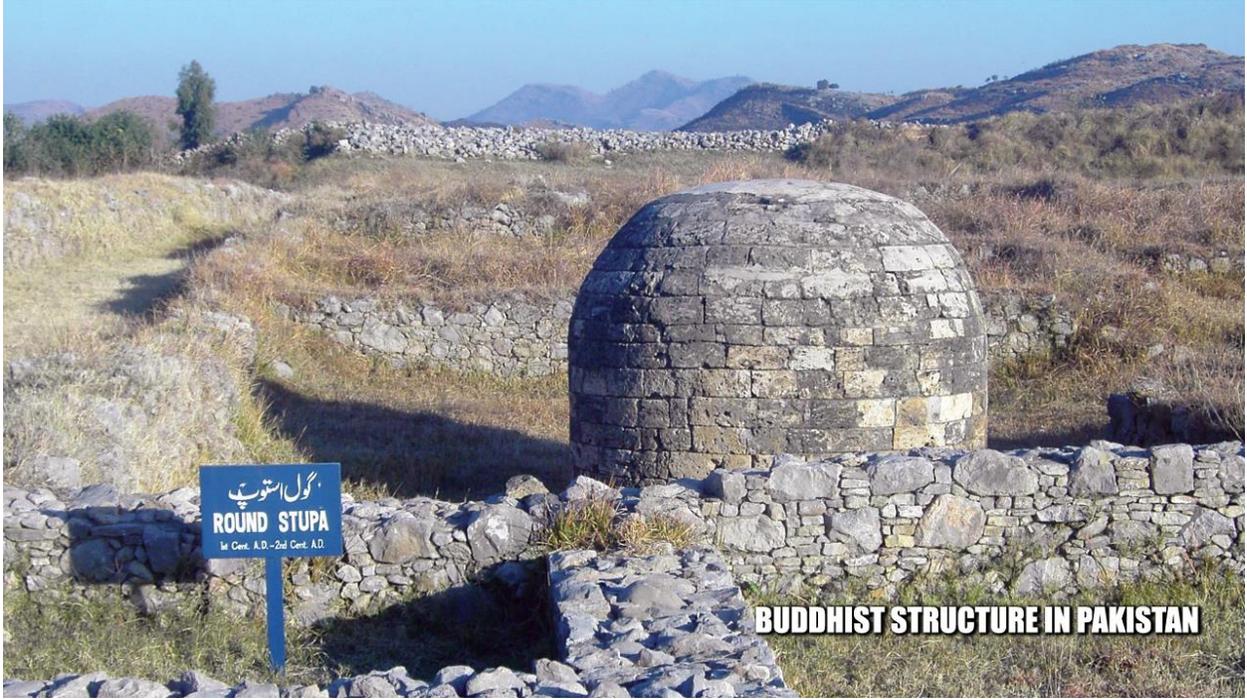
BUDDHIST STRUCTURE IN PAKISTAN

BUDDHIST STRUCTURE IN PAKISTAN

BUDDHIST STRUCTURE IN PAKISTAN

BUDDHIST STRUCTURE CHAITYAS
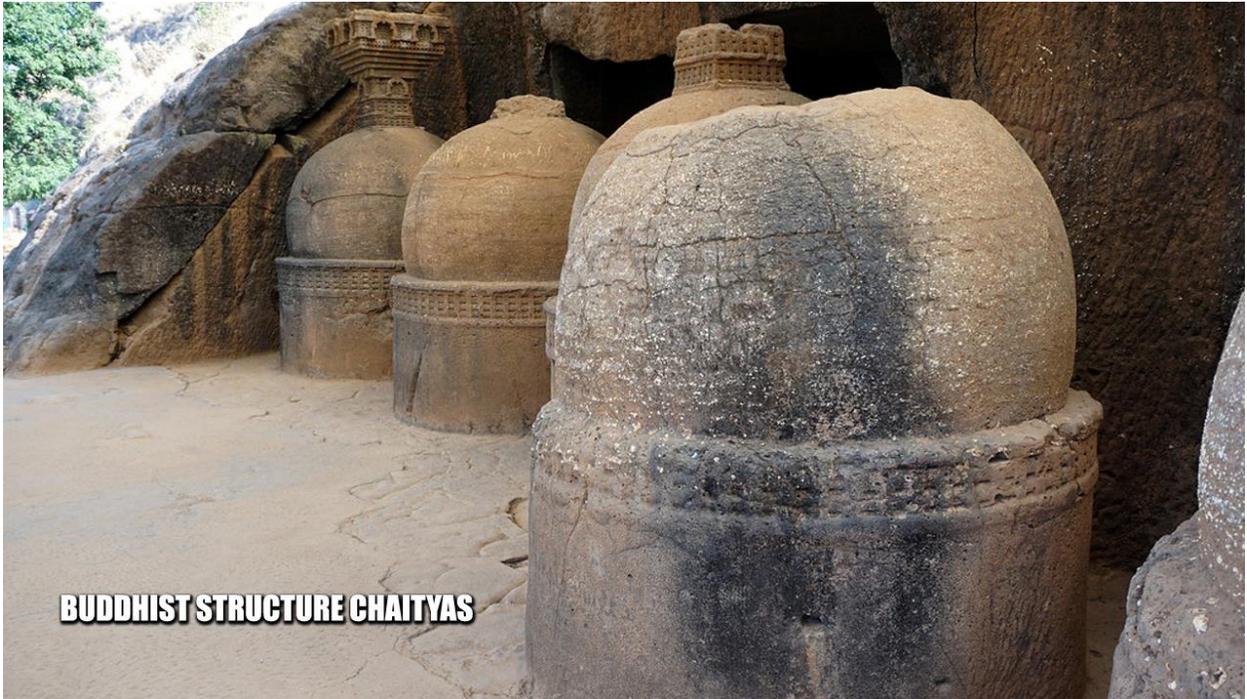
BUDDHIST CHAITYAS

BUDDHIST STRUCTURE CHAITYAS
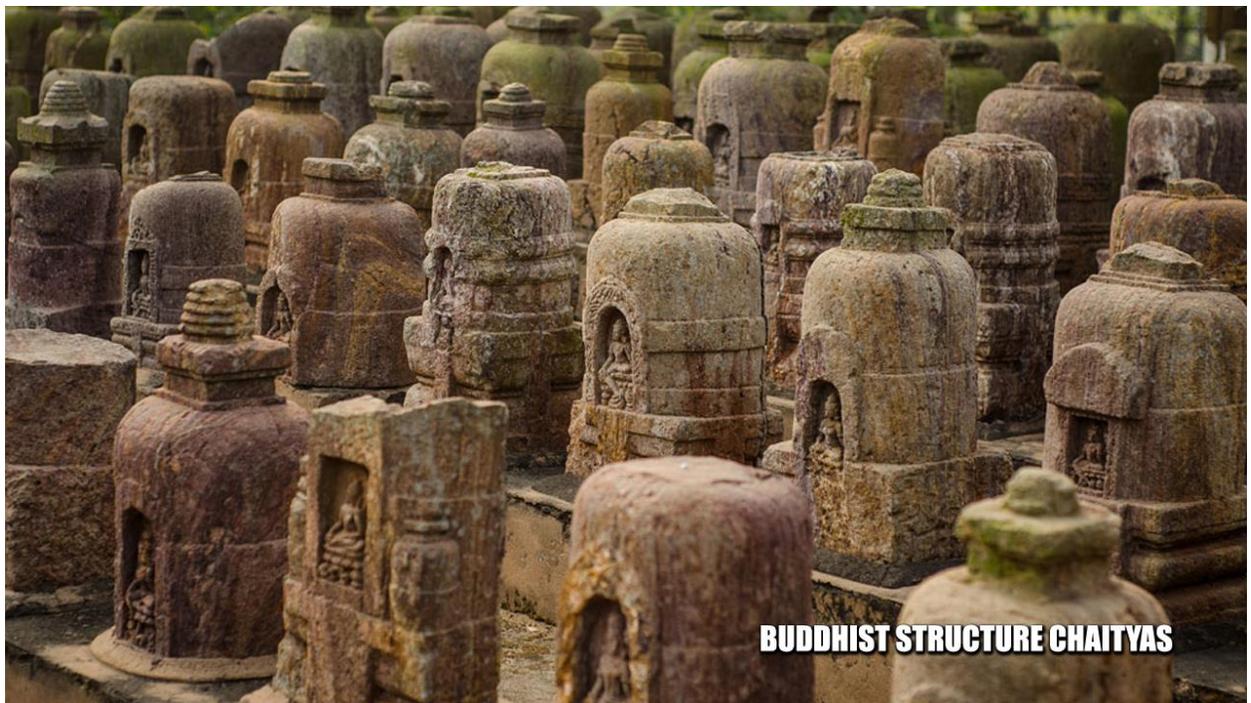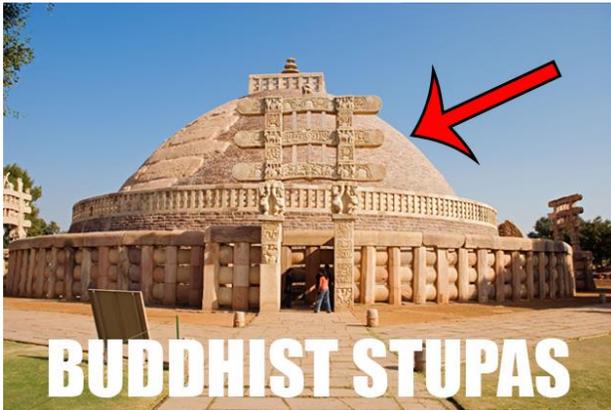
BUDDHIST CHAITYAS
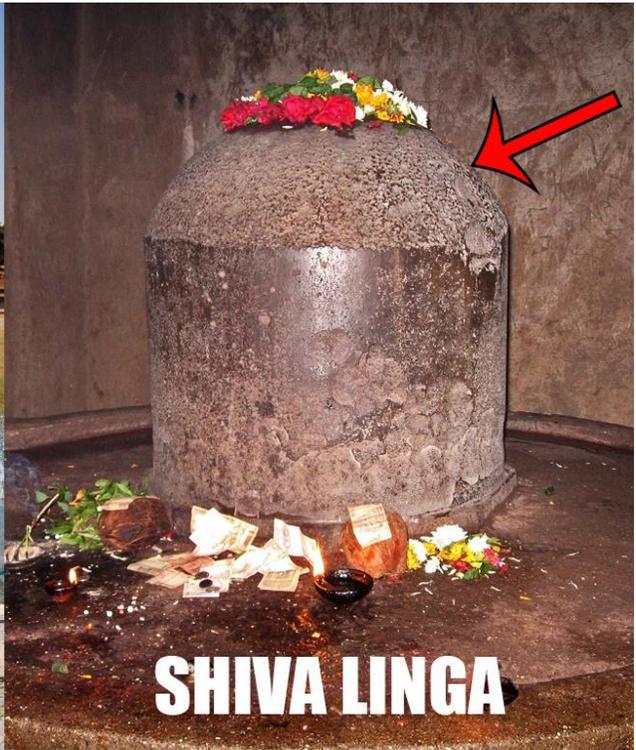
BUDDHIST STUPAS
SHIVA LINGA
ARCHITECTURE OF STUPAS ARE OLDER THAN
ARCHITECTURE OF SHIVA LINGA

ITS HOW ANTI BUDDHIST MOLESTED MINDS OF THEIR FOLLOWERS

ANTIBUDDHIST OF INDIA HAD FABRICATED BUDDHIST CHAITYA AND STUPAS TO PRIVATE PART OF IMAGINARY ENTITY SHIVA
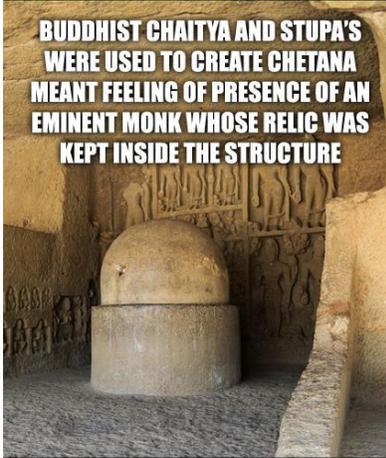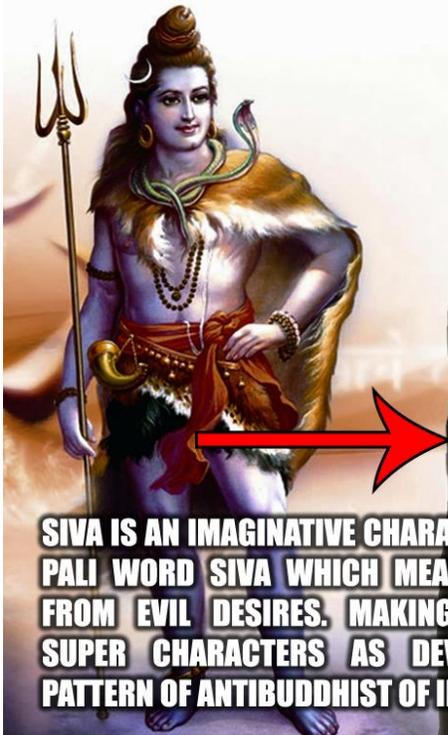
SHIVA NEVER TOLD MY PENIS OR LINGA IS DIVINE. ITS THE VEDIC PROMOTERS PROMOTE LINGA IS DIVINE MAKING FOOLS TO THEIR FOLLOWERS GENERATIONS TO GENERATION.

ITS HOW BUDDHIST TEMPLE FABRICATED BY ANTIBUDDHIST OF INDIA.

YONI (VAGINA) IS THE SYMBOL OF VAISHNAVISM

VAISHNAVISM OR WOMANIZERS?

DECODING FLAG OF BRAHMINS
BRAHMINS SIKHA REPRESENTS
FLAGS OF BRAHMIN
FLAG IN PLACE MEANT REIGN BY BRAHMINS

DECODING FLAG OF RSS
JOINED
TOGETHER
BRAHMINS SIKHA REPRESENTS
FLAGS OF BRAHMIN
RSS FLAG IS JUST
MIRRORING OF TWO FLAGS
JOINED TOGETHER
FLAG OF BRAHMINS
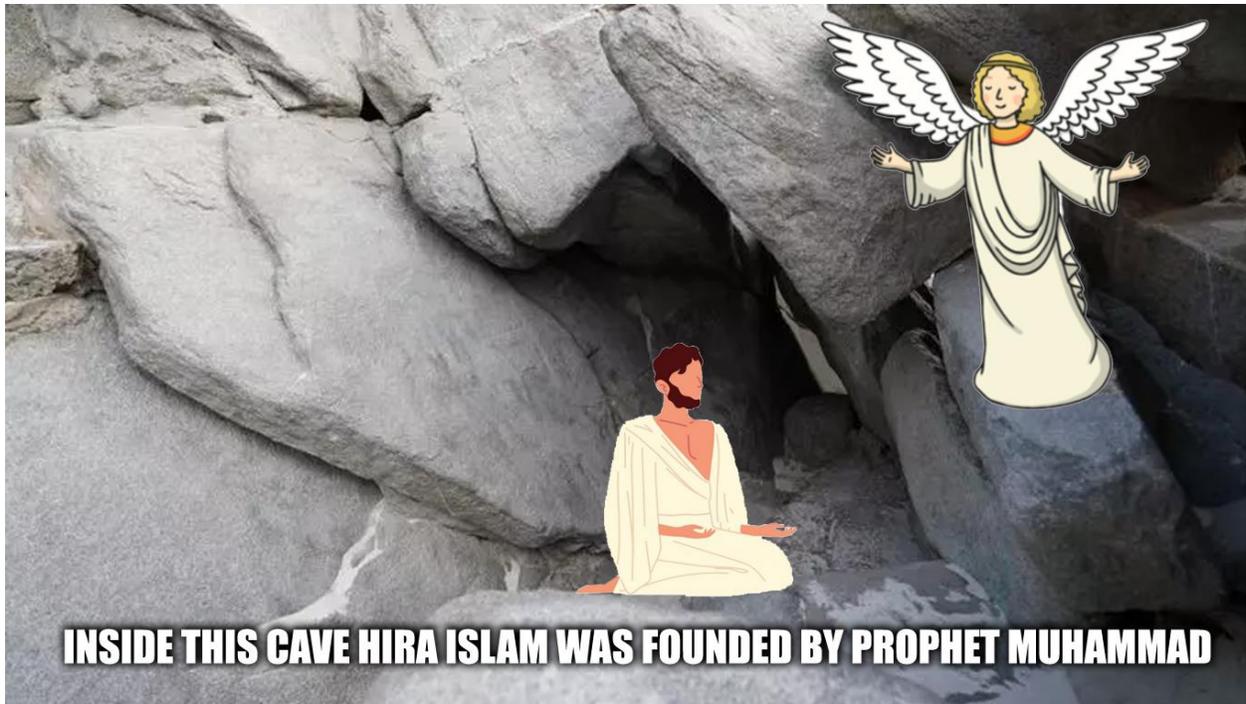
INSIDE THIS CAVE HIRA ISLAM WAS FOUNDED BY PROPHET MUHAMMAD
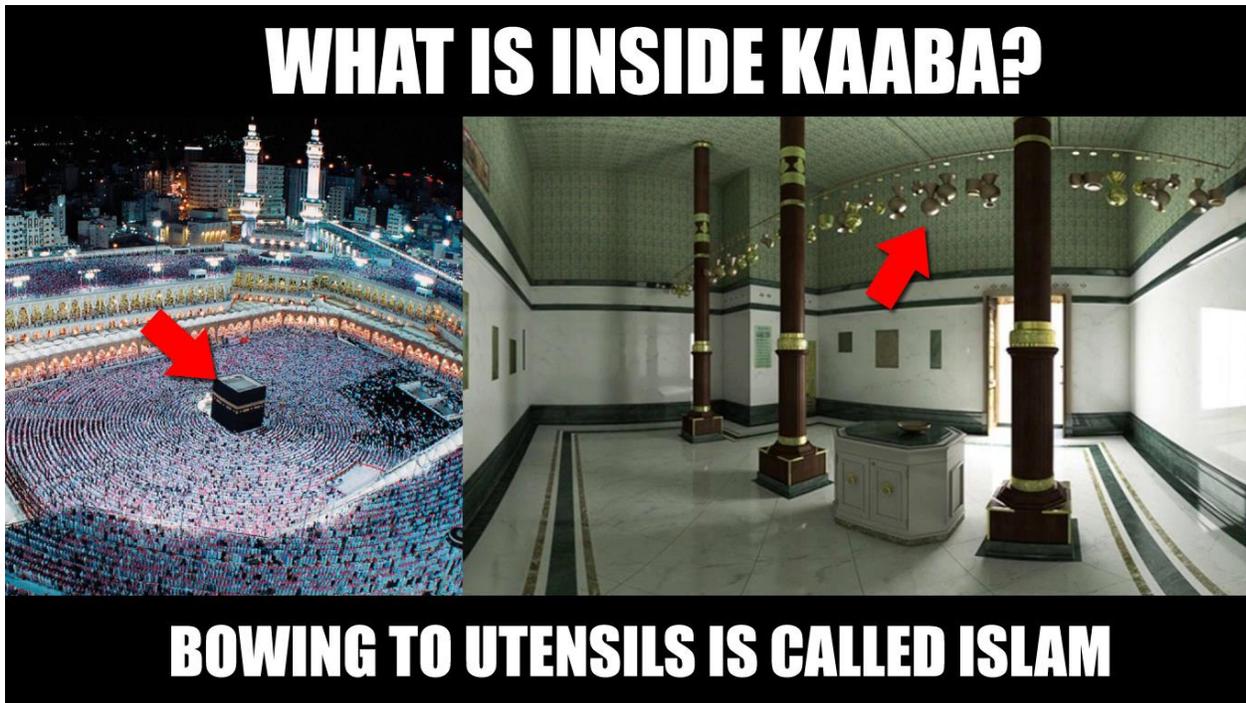
WHAT IS INSIDE KAABA?
BOWING TO UTENSILS IS CALLED ISLAM
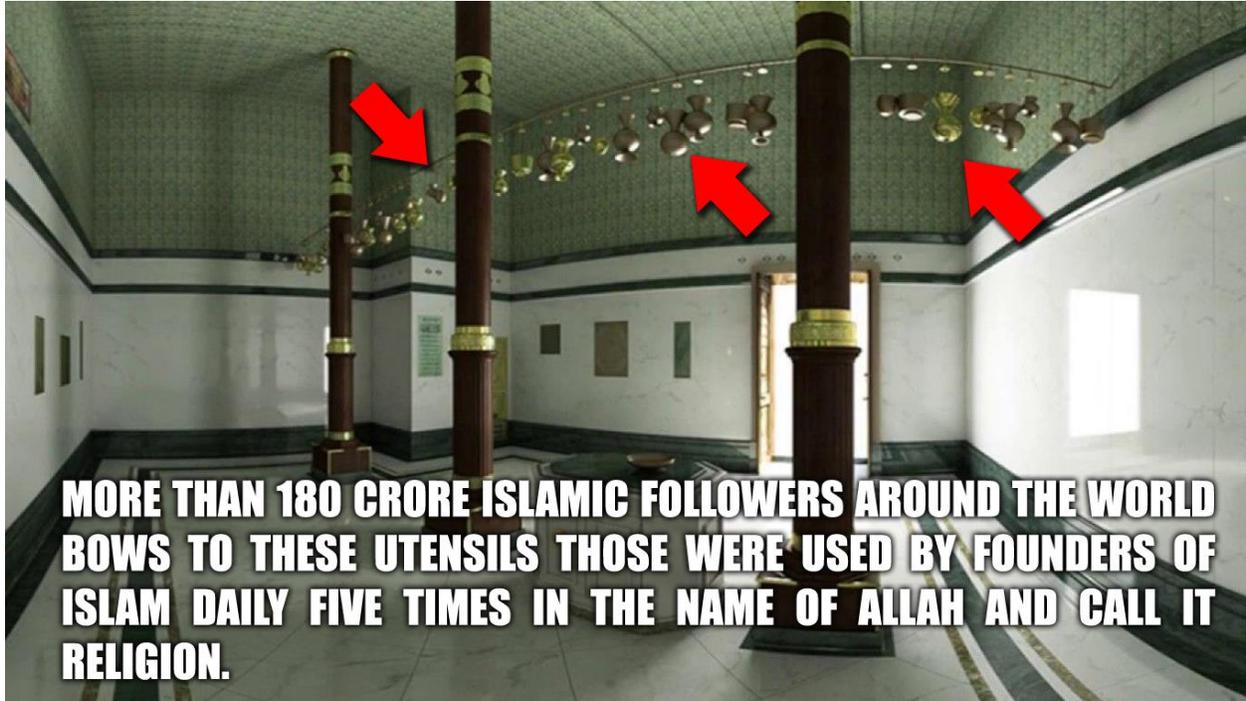
THEOPHILIA CREATES LOGICAL BLINDNESS

IT IS BELIEVED ALLAH HAD SAID FIRST FIVE VERSES IN AL- ALAQ TO PROPHET MUHAMMAD

AL- ALAQ 96:2

SAYS HUMANS ARE MADE FROM CLOTTED BLOOD

ISLAM ADVOCATES HUMANS ARE MADE FROM CLOTTED BLOOD

THE EARTH IS NOT FLAT. THEREFORE PRAYING IN THE DIRECTION OF MECCA, FOLLOWERS ACTUALLY AIMING TOWARDS THE EMPTINESS OF SPACE.
FIVE PRAYERS A DAY,
BILLIONS OF PRAYERS WASTED.
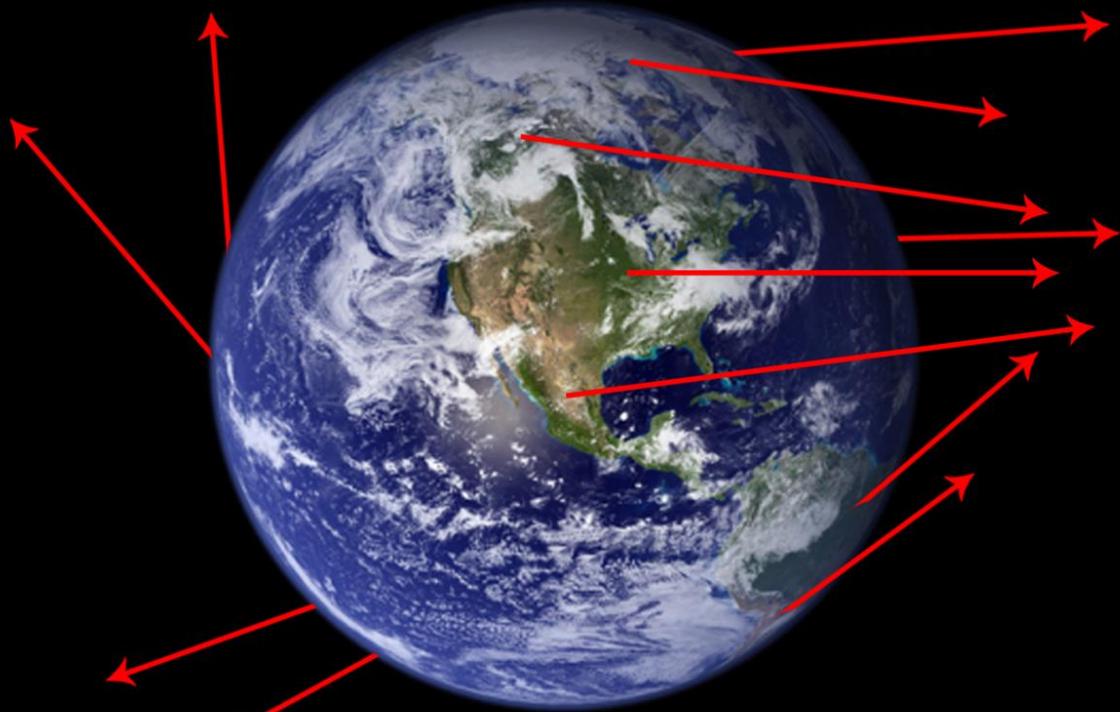
SHAVING HEAD IS A PRACTICE OF BUDDHISM
56560180
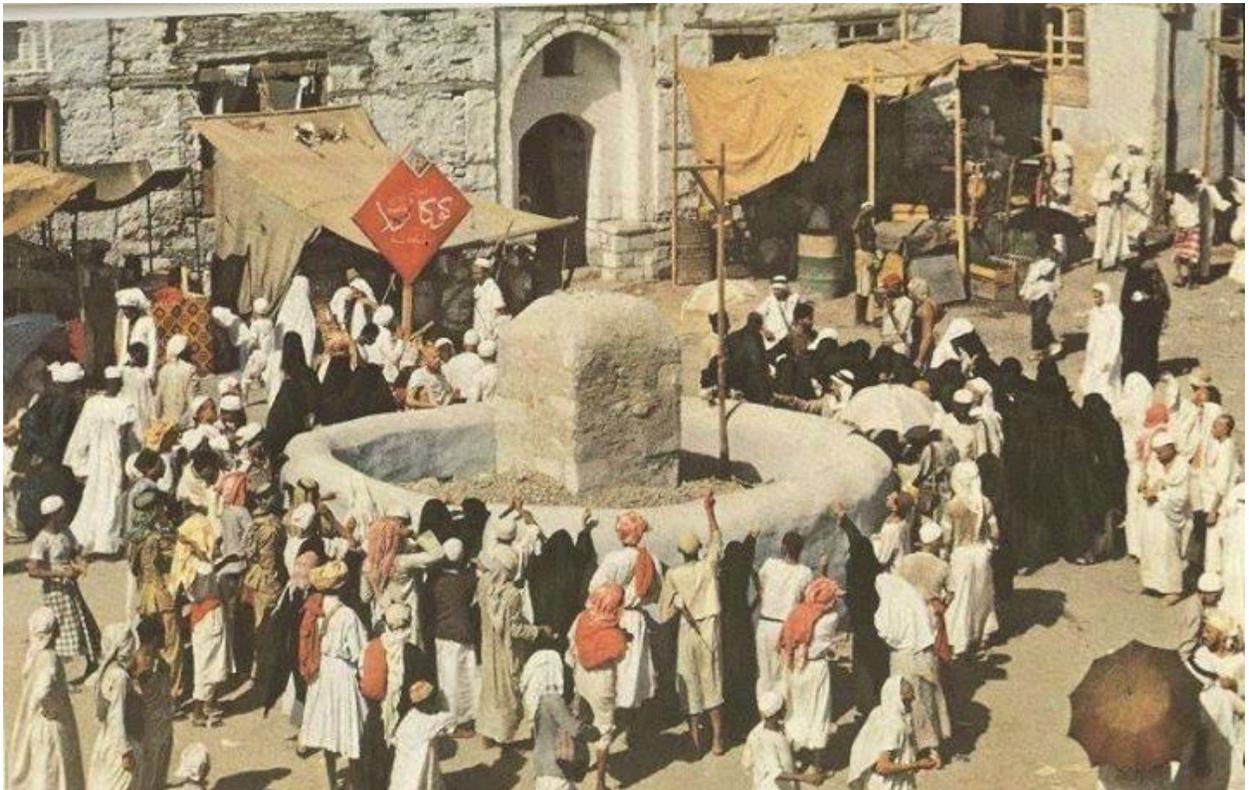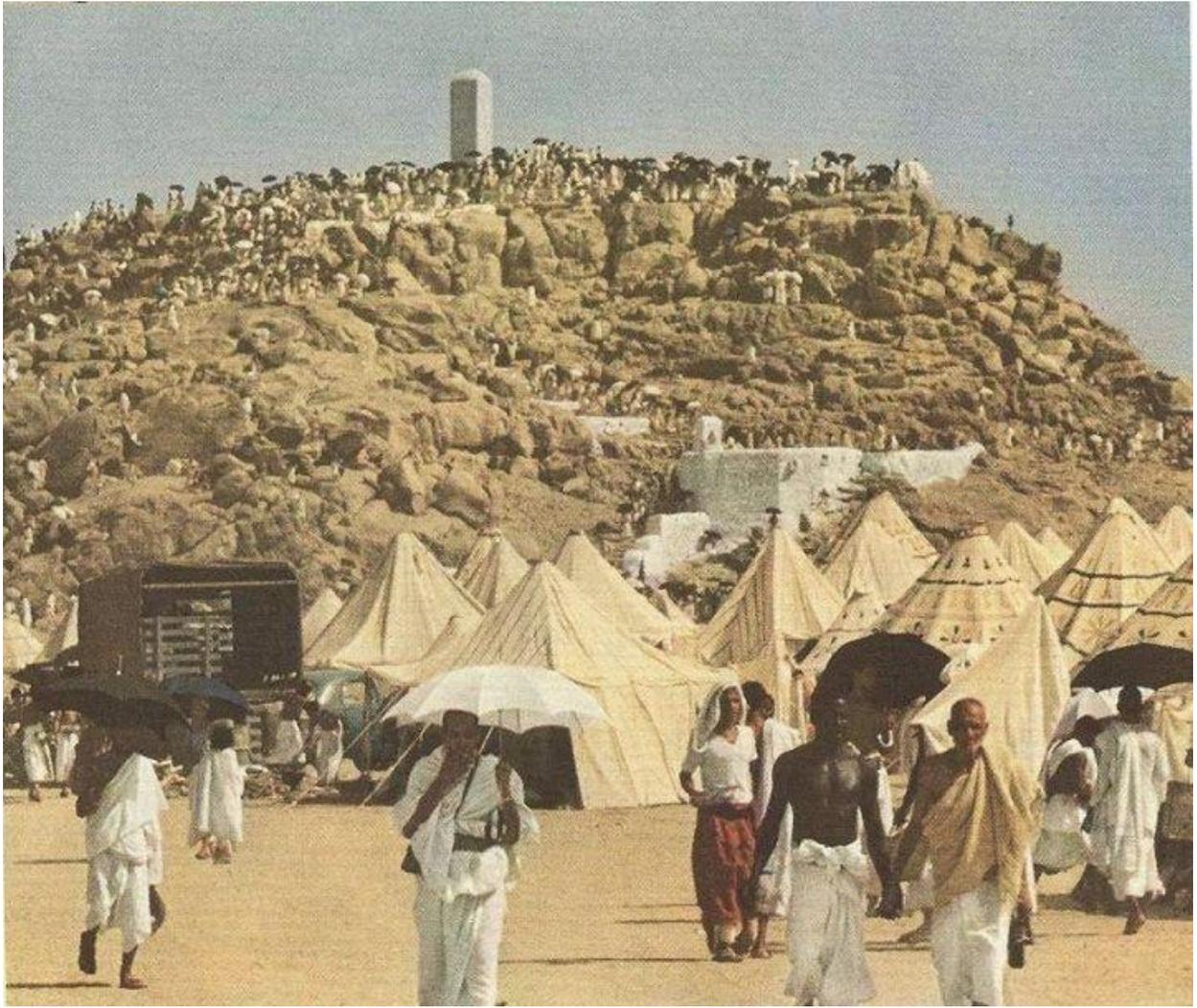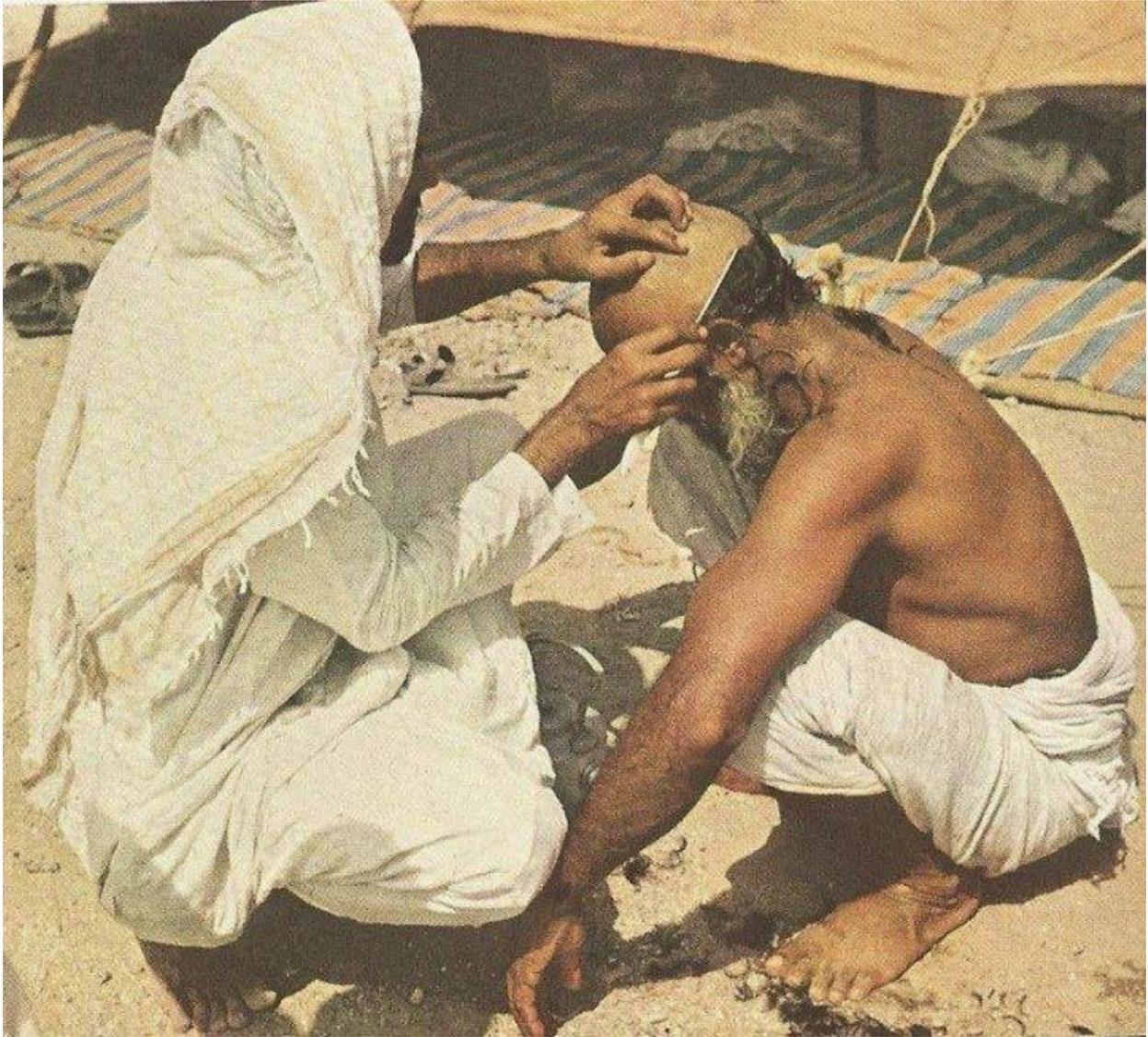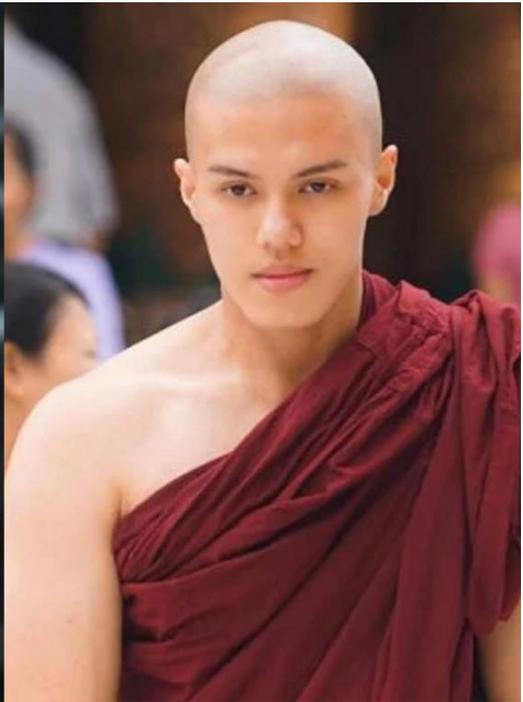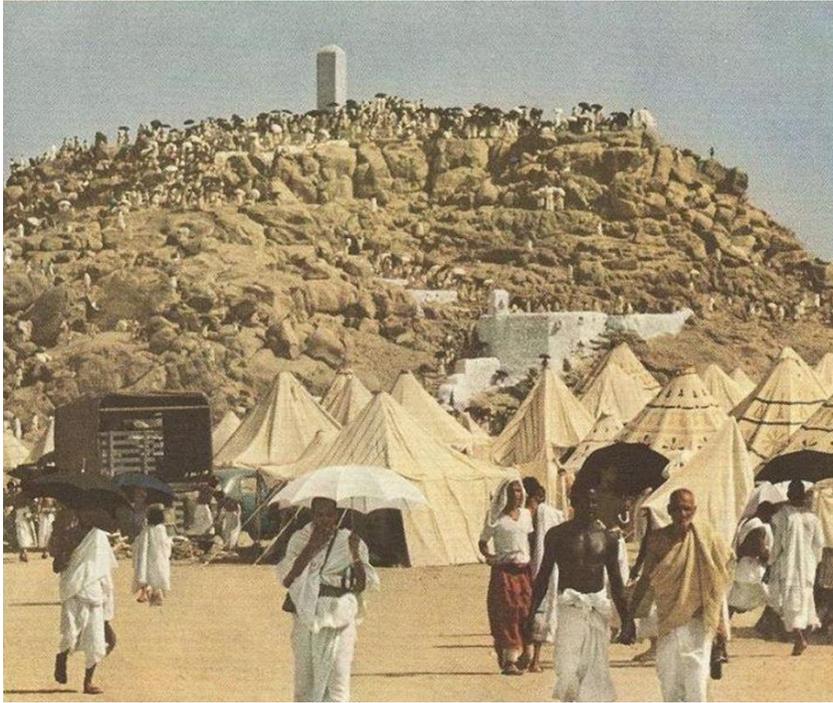
ITS AN OLD PIC OF KAABA BY NATIONAL GEOGRAPHY CHANNEL WHERE ASOKAN PILLAR AND BUDDHIST CHAITYAS LIKE STRUCTURE CAN BE SEEN IN MECCA, ARAB. PROPHET MUHAMMAD HAD FABRICATED BUDDHISM TO ISLAM JUST MIXING OTHER IDEOLOGIES FOUND IN HIS NEIGHBORHOODS LIKE JUDAISM, CHRISTIANITY AND HIS OWN PRACTICES OF LIFE AND BELIEFS.
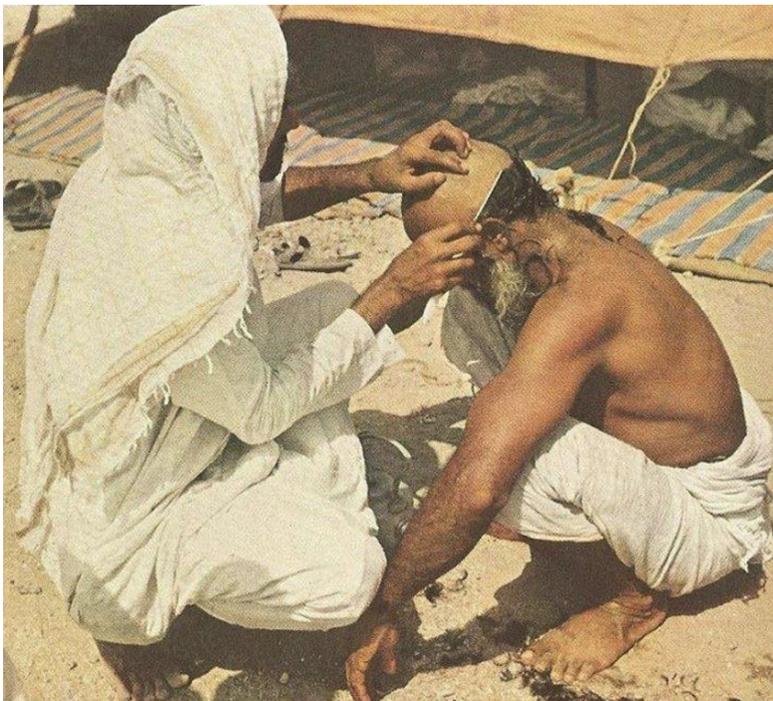
ITS AN OLD PIC OF KAABA BY NATIONAL GEOGRAPHY CHANNEL WHERE SHAVING HEAD LIKE BUDDHIST MONKS PRACTICED TILL TO DATE IN MECCA, ARAB. PROPHET MUHAMMAD DESTROYED IDOLS WERE BUDDHIST CHAITYAS THOSE LOOK LIKE FABRICATED VERSION OF ANTIBUDDHIST SIVA LINGA IN INDIA. PROPHET MUHAMMAD FOUND ISLAM AND ALLAH MEDITATING IN A CAVE CALLED CAVE HIRA. MEDITATION IS A PART OF BUDDHISM WHICH DIRECTLY PROVES BUDDHISM WAS THERE IN ARAB IN PRE ISLAMIC ERA.
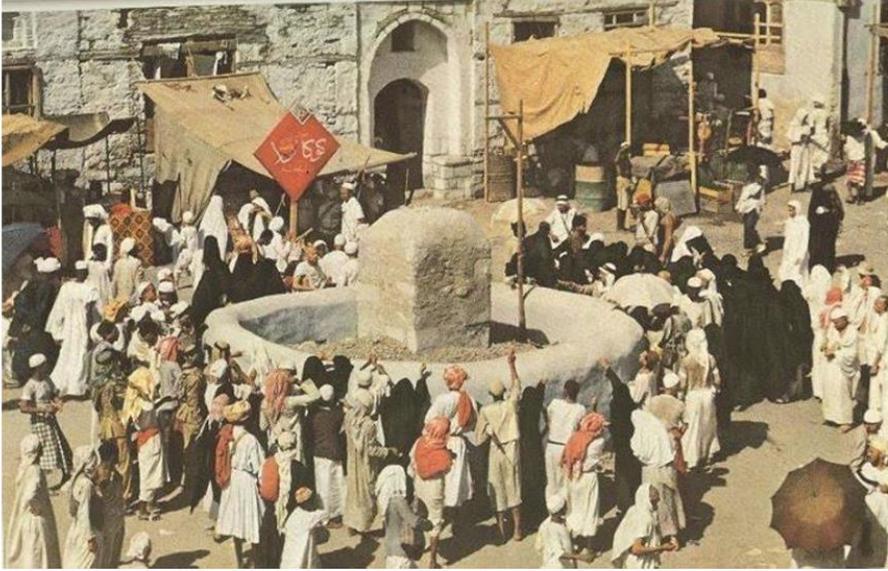
ITS AN OLD PIC OF KAABA BY NATIONAL GEOGRAPHY CHANNEL WHERE BUDDHIST CHAITYAS LIKE STRUCTURE CAN BE SEEN IN MECCA, ARAB. PROPHET MUHAMMAD HAD FABRICATED BUDDHISM TO ISLAM JUST MIXING OTHER IDEOLOGIES FOUND IN HIS NEIGHBORHOODS LIKE JUDAISM, CHRISTIANITY AND HIS OWN PRACTICES OF LIFE AND BELIEFS.

कश्मीर पंडित के बंसज गुजराती बनिया के बंसज

पाकिस्तान की संस्थापक जिन्नाह और इक़बाल
गुजराती बनिया और कश्मीर पंडित के वंशज थे.

थीओफिलिआ (Theophilia)

God addiction or Theophilia or theosphilia or theoiphilia or Godphilia is a psychological disorder that creates numerous social evils in the human race due to addiction to the imaginary entity God. God has been an imaginary entity till to date which can't be proven logically or scientifically true; so it′s always an assumption. This assumption planted as an entity in different forms in the minds of religious followers with different kind of faiths, that is as an set of ideas or ideology like monotheism or polytheism ideology whose addiction of God love ends with different kind of illogical or irrational thinking; based on lies, delusion, ignorance, violence, human discrimination, contradiction of ideology etc. is an originally a psychological disorder. Their major godly entities are based on only by human psychological constructs i.e. entity created by only human imagination or mind and then imposed to a collective human group with social conformity. When followers habituated to these humans made psychological religious believes which is based on imaginary entity God, it acts same as extreme loving or an addiction to love for a real-world entity. This kind of addictions are same as drug addiction or different kind of intoxication but here intoxication medium is an ideology i.e. religious ideology based on God or an addiction of ideology. The God addiction ends with promotion of lies, delusions, irrationality, illogical thinking, blind beliefs, superstitions, human discrimination and different kind of social evils due to addicting these kinds of mental elements by followers. Theophilia or God Addiction is dangerous to human race and it streams from two Greek words "theos or theoi" meant “god” or “gods” and "philia" meant the love or obsession or addiction with a particular thing or subject; together Theophilia or theosphilia or theoiphilia meant God Addiction ideology. Religious fundamentalism, extremism and terrorism are the results of Theophilia or Theosphilia or Theoiphilia psychological disorders.

सृपासंलत का प्रमाण

गेब्रियल को यहूदी धर्म, इस्लाम, बहाई विश्वास, और अधिकांश ईसाईयों द्वारा प्रधान देवदूत (archangels) के रूप में पहचाना जाता है । कुछ प्रोटेस्टेंट माइकल को एकमात्र महादूत होने का मानते हैं । गैब्रियल, माइकल और राफेल को रोमन कैथोलिक चर्च में पूजा की जाती है । इस्लाम में नामित आर्कांगल्स/प्रधान देवदूत गेब्रियल/जिब्राइल(Gabriel/Jibra'il), माइकल(Michael), इस्राफिल(Israfil) और अज़राइल(Azrael) हैं । यहूदी साहित्य, जैसे कि "एनोक की किताब(Book of Enoch)," मेटाट्रॉन(Metatron) को एक महादूत(archangel) के भी उल्लेख करती है, जिसे "स्वर्गदूतों का सर्वोच्च(highest of the angels)" कहा जाता है, हालांकि इस देवदूत की स्वीकृति सभी शाखाओं में कैनोनिकल(canonical) नहीं है ।

हिब्रू के मान्यता के अनुसार गेब्रियल, 'गेब्री'एल(Gavri'el)' का मतलब “GOD मेरी शक्ति है", प्राचीन ग्रीक, कॉप्टिक, अरामाईक और अब्राहमिक धर्मों में, गेब्रियल एक महादूत है जो आम तौर पर GOD के दूत के रूप में कार्य करता है । यहूदी ग्रंथों में, गेब्रियल अपने दृष्टान्तों को समझाने के लिए पैगंबर दानिय्येल(Daniel) को प्रकट करता है (दानिय्येल 8: 15-26, 9: 21-27) । गेब्रियल महादूत भी अन्य प्राचीन यहूदी लेखनों में एक चरित्र है जैसे कि एनोक की किताब (Book of Enoch) में ।

क्रिस्टियन न्यू टेस्टामेंट के "लूक की गॉस्पेल(Gospel of Luke)" में, देवदूत गेब्रियल जकर्याह(Zechariah) और वर्जिन मैरी के सामने दिखाई देते है, जो क्रमशः जॉन द बैपटिस्ट और यीशु के जन्म की भविष्यवाणी करते है (ल्यूक 1: 11-38)। एंग्लिकन, पूर्वी रूढ़िवादी और रोमन कैथोलिक समेत कई ईसाई परंपराओं में, गेब्रियल को संत के रूप में भी जाना जाता है । इस्लाम में, गेब्रियल एक महादूत है जिसे GOD(Allah) ने मुहम्मद समेत विभिन्न भविष्यद्वक्ताओं/नबी(prophets) को उनके विचारधारा की प्रचार और प्रसार केलिए भेजा था । मुसलमानों का मानना है कि, कुरान के 96 वें अध्याय के पहले 5 छंद, गेब्रियल द्वारा मुहम्मद को प्रकट किए गए ।

क्यों की GOD विश्वासियों के मान्यता के अनुसार आदमी मरने के बाद ही स्वर्ग जाता है, जिन्दा होते हुए कोई स्वर्ग के लोगों का साथ बातचित करना क्या आपको तार्किक लगता है? जो कुछ क्रियासील है लोगों की मानना है की उसमे आत्मा है; अबतो कार, टीवी जैसे साधन या कंप्यूटर को भी लेलो या रॉबर्ट सब क्रियाशील है क्या उनमे आत्मा बसते हैं? तो वह फिर कैसे काम करते है? उनके डेस्ट्रक्शन के बाद उनकी आत्मा भटकती होगी या वह भी स्वर्ग और नर्क जाते होंगे? सायद जिस टीवी में ज्यादा GOD की सिरिएल और प्रवचन दिखे गए होंगे वह सब स्वर्ग जायेंगे और जिस में अपराध का सीरियल्स, पॉर्न(porns) और ब्लू पिक्चर्स दिखे गए होंगे वह सब नर्क । अगर एक इंसान मरने का बाद ही स्वर्ग या नर्क जाता है तो वह कौनसा पहला इंसान है जो मरने के बाद फिरसे जिन्दा होकर कहा की में स्वर्ग या नर्क से होकर आया हूँ? क्यों की स्वर्ग हो या नर्क का जानकरि केलिए मरना जरुरी है, इसलिए स्वर्ग या नर्क का पूर्ति कोई भी नहीं कर सकता; इसलिए ये एक सफ़ेद झूठ है । अगर मान भी लेते आत्मा दीखता नहीं जैसे मरे हुए आदमी एक जड़ है और जब वह जिन्दा था उसका अंदर आत्मा था और वही आत्मा स्वर्ग जाता है; क्या वह सरीर के साथ जाता है? यहाँ पर में आप को साफ़ साफ़ बता दूँ आत्मा फात्मा कुछ नहीं होता हर स्पेसिस एक बायोलॉजिकल एंटिटी ही होता है जो साँस यानी हवा, पानी और खाना से चलता है; पानी, साँस और खाना बंद करदो बायोलॉजिकल एंटिटी खुद बा खुद बंद हो

जायेगा यानि उसकी डेथ हो जाएगी; इसमें से किसी एक को लम्बे समय तक बंद करदो उसकी भी मौत तय है; अगर आपकी GOD भी इन चीजों में चलता है उसकी भी अगर ये बंद कर दिया जाये वह भी मर जाएंगे कोई चमत्कार उन्हें बचा नहीं सकता; GOD की GOD भी उससे बचा नहीं सकता । आज तक कभी आपने स्वर्ग में बशने वाले लोगों के साथ जिन्दा इंसान बात करते कभी सुना है? स्वर्ग और नर्क एक सबसे गन्दी झूठ है । मान्यता के अनुसार आपके किये हुए अच्छे या बुरे कर्म तय करते हैं उसकी आत्मा स्वर्ग जायेगा या नर्क । यहां साफ़ साफ़ कहा गया है की जो धर्म स्वर्ग या नर्क में विश्वास करते हैं बस आदमी का आत्मा ही स्वर्ग या नर्क जाता है । यहीं लोगों की तर्क अंधापन है, वह है आत्मा । कभी किसीने आत्मा देखि है? अपने कभी दूसरे जानवर जो हमारे आसपास रहते हैं उनकी आत्मा देखि है? जिव जबतक जिन्दा है तबतक वह सोच सकता है और कुछ भी क्रिया कर सकता है जब मरजाये तो ना वह सोच सकता है ना कोई क्रिया कर सकता है । मरने के बाद उसकी कोई भी इन्द्रिय यानि सेंसेस(senses) काम नहीं करता; अगर इन्द्रिय यानि सेंसेस(senses) काम ही नहीं करेंगे तो उसकी सरीर को पीड़ा हो या इन्द्रिय आनंद (pain and pleasure) कभी भी अनुभव यानि फील कर ही नहीं पायेगा । जब आदमी मरता है तो उनके मान्यता के अनुसार आत्मा स्वर्ग या नर्क जाता है सरीर नहीं; तो नर्क में तेल की कढ़ाई में फ्राई हो या परियों के साथ प्रणय हो उसकी पीड़ा या इन्द्रिय आनंद केलिए जब आपकी इन्द्रियां ही नहीं होंगे तो आप को जो भी मिले उससे आपको कोई फर्क नहीं पड़ेगा इसलिए इसको मानने वाले लोग तर्क अंध और बेवकूफ है । अगर आप अच्छा सोचते हो अच्छा कर्म करते हो जिससे आप आपके साथ साथ दूसरों की जीवन में खुशियां लाते हो वही असली स्वर्ग है अगर आपकी बुरे कर्म खुदकी जिंदगी को दुख देनेका साथ साथ दूसरों को भी दुख दे तो वह नर्क है । अच्छे सोच और अच्छी कर्म यानी सत् कर्म ही असली धर्म है; ना की अंधविश्वास, अज्ञानता, आपराधिक हिंसा, गंदी और संकीर्णता इत्यादि बुरे सोच और कुकर्म करके GOD के नाम पे माफ़ी मांगो या GOD के नामपे कुकर्म करते चलो वह धर्म है; दरअसल वै धर्म नहीं कुकर्म और कुधर्म है । GOD धार्मिक होने से अच्छा एक अच्छी इंसान होना काफी है । असलियत में स्वर्ग और नर्क सबसे बड़ा झूठ और धोका है । अगर स्वर्ग और नर्क ही नहीं GOD के दूत कहां से पैदा होंगे? इसलिए GOD की दूत की पहचान(identity) भी सफ़ेद झूठ है । इसलिए गेब्रियल पहचान ही झूठ है । कहना का मतलब गेब्रियल के नाम पे कहे गए सभी तथ्य उनके नाम पे लेकर कहागया; इसका मतलब कुरान मुहम्मद की खुदकी बनाई गयी सोच है अल्लाह की नहीं । अगर गेब्रियल अल्लाह की दूत थे तो ये साफ़ है की मुहम्मद ने गेब्रियल के नाम पर सफ़ेद झूठ बोला, या अगर सच में मुहम्मद ने गेब्रियल देखि तो वह मोनोबिज्ञान के हिसाब से मानसिक बीमार थे; क्यों के आदमीको जब अनजान लोगों की बातें सुनाई देता है जिसको उसके सिवा किसी और को दिखाई नहीं देता वह एक तरह की मानसिक बीमारी है; मोनोबिज्ञान के हिसाब से जब कोई एंटिटी को किसी एक ब्यक्ति ही उसको सुन सके और देख सके जिसका कोई फिजिकल एक्सिस्टेंस ही न हो उसको मानसिक बिकृति कहते है ।

प्रोफेट मुहम्मद 570AD में पैदा हुए और जब उनको 40 साल हुआ तो वह अपनी बनायीं गयी धर्म की और मोड़े । उन्होंने चालिश की उम्र में "हिरा के गुफा" में अल्लाह की दूत गेब्रियल से बात किया करते थे जिससे की इस्लाम धर्म पैदा हुआ । इसका मतलब चालीस साल तक वह गैर मुस्लिम थे और काबा की 360 मुर्तिबाद की अनुयाई थे जिसको उन्होंने इस्लाम बनने का बाद 630AD में तोडा; और ये मूर्त्ति कोई और नहीं सब बुद्धिस्ट चैत्य थे; क्यों के प्री इस्लामिक अरब का भूखंड में तबका समय में अनेक विचारधारा पाए जाते थे। यहूदी और ईसाई विचारधारा में अनेक आइडल्स का मान्यता नहीं था; जातिवादियों का ब्रह्मा, विष्णु, महेस्वर जैसे काल्पनिक चरित्र इंडिया में 900AD के बाद देखने मिलता है यानि ये तब पैदा ही नहीं हुए थे तो उनका मूर्त्ति वहां सिल्क रूट के थ्रू जाना असंभव था बाकी रहा

बौद्ध विचारधारा का चैत्य और स्तूप का प्रचलन का; जो की सही बैठता है और ये भी साफ़ साफ़ हर इस्लाम स्कॉलर मानता है की प्रोफेट मुहम्मद ने गुफा हीरा में ध्यान लगाया करते थे; जो की बौद्ध विचारधारा में मेडिटेसन करनेका प्रथा को एस्टाब्लिश करता है और ये साबित करता है वहाँ तब बौद्ध विचारधारा का ही प्राधन्य था जिसको प्रोफेट मुहम्मद ने समूल उखाड़ फेका । प्रोफेट मुहम्मद ने आपने पूर्वजों का आस्थाओं की हत्या किया था । अगर इस्लाम हिरा की गुफा में पैदा हुआ तो वहां इस्लाम की पहचान होना चाहिए! ना की जहाँ 360 मूर्त्तियों को ध्वशत किया गया वह काबा में होना चाहीये? अगर आप प्रोफेट मुहम्मद की जीवनी पढ़ेंगे, तो आप को साफ़ साफ़ पता चल जायेगा जब वह गैर मुस्लमान थे (40years) तब वह कोई भी हिंसा नहीं किया; लेकिन मुस्लमान यानि अपनी बनाईगई इस्लाम धर्म बनाने का बाद वह बाकि के 22 साल as a Muslim अल्लाह की नाम पर हिंसा और कई तरह की अपराध किये । ना प्रोफेट मुहम्मद की माता पिता अमीना और अब्दुल्लाह मुस्लिम थे ना उनकी दादा जी और मामा अब्दुल-मुत्तलिब और अबू तालिब मुस्लिम थे; ये भी कंट्रोवर्सी है मुहम्मद अपने बापकी नहीं दादाजी अब्दुल-मुत्तलिब की बेटे थे । इण्डिया में जिन मुगलों ने इस्लाम ज्यादा फैलाई उनके पूर्वज जंगहिस खान और उनके बेटे ओगेडेइ खान, जोचि खान, तोलुइ और चगताई खान मुस्लिम नहीं थे बल्कि टेंगरिजिम का अनुयायी थे । जंगहिस खान(Genghis Khan) सीधे यहूदी और मुस्लिम को अपना दास कहा । चागताई खान के वंशधर इस्लाम कबुली और उनके वंशज ही इंडिया में इस्लाम को ज्यादा फैलाया जब की ओगेडेइ खान की कोडेन यानि गोदान खान और कुबुलाई खान बौद्ध धर्म अपनाया और चीन में उसकी प्रसार किया । प्रोफेट मुहम्मद को अपने कुकर्म की सजा मिली और इस्लाम स्कोलार शेख यासेर अल-हबीब के अनुसार वह अपने प्यारी बीवियां आइसा और हप्सा जिन के पिता अबू बक्र और उमर थे, जो प्रोफेट मुहम्मद की दोस्त और ससुर भी थे उनकी हत्या की साजिस रची और जेहेर देकर मार डाला; इसलिए वह कोई ज्यूस(Jews) औरत से नहीं मरे, बल्कि अपने ही करीबी लोगों के द्वारा हत्या किये गये ।

अमेरिकन साइकियाट्रिक एसोसिएशन का "डायग्नोस्टिक एंड स्टैटिस्टिकल मैन्युअल ऑफ़ मेन्टल डिसऑर्डर्स (डी.एसएम) Diagnostic and Statistical Manual of Mental Disorders (DSM)" के अनुसार प्रोफेट मुहम्मद को कई तरह की मानसिक बीमारी थी । उन्होंने 25 साल की उम्र में आपने से 15 साल बड़ी 40 साल की विधवा औरत खादिजा(Khadijah) से सादी किया जो की "डी.एस.एम्" के अनुसार अनिलीलाग्निआ (Anililagnia) मानसिक बिकृति है । 40 साल की उम्र में उनको हिरा की गुफा में angel Gabriel यानि महादूत गेब्रियल दिखाई देते थे जिसने अल्लाह और इस्लाम के बारे में मुहम्मद को बताया जो आज तक मुहम्मद के सिबा किसी और को दिखाई नहीं दिया ना कभी दिखाई देगा जो की एक भ्रम की बीमारी है और साइकियाट्रि में इसको स्किज़ोफ्रेनिआ (Schizophrenia) कहते हैं । पहले बीवी खादिजा मरने के बाद उनहोंने कई औरत से सादी किया कुछ इस्लामिक स्कोलार जैसे अली दश्ती 30 से ज्यादा बीवी होने का दावा करते हैं । मुहम्मद की सबसे छोटी उम्र की बीवी आइशा(Aisha) थी; जब मुहम्मद 52 वर्ष के थे तब उसे केवल 6 साल की उम्र में मंगनी हो गई और 8 से 9 साल की उम्र में विवाह को समाप्त कर दिया गया । इतनी कम उम्र की लड़की से सेक्सुअल आकर्षण को डी.एस.एम् में पेडोफिलिआ(Pedophilia) बिकृति कहाजाता है । प्रोफेट मुहम्मद ने आपने पूर्वजों का आस्थाओं की हत्या किया था; आपने धर्म को फ़ैलाने केलिए उन्होंने आपने कबीले की नरसंहार की जो की एक आपराधिक कृत्य है और साइकियाट्रिक में इसको ASPD यानि Antisocial personality disorder अर्थात असामाजिक व्यक्तित्व विकार कहते हैं । उन्होंने आपनी आंटी की लास के साथ सेक्स किया जो की डी.एस.एम् की पाराफिलिआ(paraphilia) के अनुसार नेक्रोफिलिआ (Necrophilia) मानसिक बिकृति है । मोहम्मद ने अपने बेटे की पत्नी जैनब के साथ

शादी भी कीया था । कुरान के मुताबिक, मुहम्मद अशिक्षित भी थे । इस तरह अगर आप गिनते जाओगे तो प्रोफेट मुहम्मद पैगम्बर कम मानसिक बिकृत ज्यादा लगेंगे; तो उनकी विचारधारा की कट्टर रूढ़िवादी अनुयाई से क्या आप अच्छे इंसान की उम्मीद रख सकते हो?

इस लेख का ये उद्देस्य है की इंडियन, पाकिस्तान और बांग्लादेश में पाए जानेवाले 97% से ज्यादा मुसलमान इस भूखंड का ही मूल निवासी है । जिनके मातृभाषा कभी, अब वे जिस जमीं से जुड़े हुए है और अगर उनकी पूर्वज कभी खंडित भूखंड को विस्थापित नहीं हुए थे तो वह उसी भाषीय सभ्यता की ही मूलनिवासी हैं जो 700AD के बाद इस्लाम जब इस भूखंड में आया उसके बाद इस्लाम धर्म को कई कारणों केलिए कबुली है । इसका मतलब गुजरात में दिखने वाले मुसलमान गुजराती भाषिय सभ्यता से हैं और महाराष्ट्र में दिखने वाले मुस्लिम मराठी हैं इत्यादि इत्यादि । समय के साथ इस विशाल भूखंड कई धर्म के चपेट में आया और यहाँ के मूलनिवासी उसी धर्म के चपेट में घुलते गए; 263BC से 185BC तक यहांकी प्रमुख धर्म बुद्धिजीम था । 185BC के बाद बौद्ध विचारधारा पतन की शुरुआत हुई जब की इसकी सत्ता वेस्टबेंगल का पाल डाइनेस्टी तक रहा यानी 1200AD तक भी था और उसके बाद ये जंगल के आग की तरह जल गया और इस भूखंड का बौद्धवादी हिन्दू लोग जातिवाद में कॉनवर्ट होने लगे; कहने का मतलब वर्णवाद यानि वैदिक धर्म के चपेट मैं आया और यहाँ की हर भाषिय सभ्यता के मूलनिवासी चार वर्ण में बंट गए । ब्राह्मणबाद बौद्ध धर्म को अपभ्रंस और ख़तम करनेकी कोई कसर नहीं छोड़ी । जब 33AD में ईसाई धर्म पैदा हुआ इंडिया में उसकी प्रसार कुछ भी नहीं था क्यों की कोई इस धर्म को जोर जबरदस्ती या प्रलोभन दिखाके इम्प्लीमेंट करने की कोसिस नहीं की; लेकिन 700AD के बाद जब इस्लाम इस भूखंड में आया ये ज्यादा फैला और इस भूखंड का सेकंड मेजर धर्म बनगया । वर्ण बाद के वजह से कई भाषिय सभ्यता चार वर्ण में बंट ने कारण यहां के लोग जातिवादी और जाती विरोधी में बंटने लगे। वॉर्किंग क्लास को जबरन शूद्र(OBC) बनादिया गया। जो पूर्वज जातिविरोधी थे जातिवादी प्रोमोटर्स ने उनको आउट कास्ट यानि अतिशूद्र बोलकर अपने से अलग करने लगे और अछूत का मान्यता दिया और उनकी सदियों दलन होने का कारण ये उनको दलित कहने लगे; और 1947 के बाद उनका नया नाम अब Sc है । जो मूलनिवासी या ट्राइब उनके जातिवादी सामाजिक व्यवस्था मैं नहीं आते थे या बहार थे जैसे बन और जंगलों में बसनेवाले ट्राइब्स उनको भी इनलोगों ने अतिशूद्र यानि आउटकास्ट का मान्यता दिया और ये अब ST कहलाते हैं । जातिवादी रूलिंग क्लास शूद्र और अतिशूद्र को सदियों गुलाम बनाके रखने केलिए उनको तरह तरह का सामाजिक और आर्थिक प्रतिबन्ध लगाई, जैसे अच्छी जिंदगी का अधिकार, सिक्ष्या की अधिकार, वेल्थ का अधिकार, सामाजिक सम्मान और गरिमा का अधिकार, अच्छे प्रोफेसन चुननेका अधिकार, समानता का अधिकार इत्यादि इत्यादि कई मूल मानविक अधिकार शामिल था और वे उन फंडामेंटल ह्यूमन राइट्स की प्रतिबन्ध लगाई और उनके जिंदगी को जहनुम से भी बत्तर बनाडाला और इस तरह सदियों उनकी पीढ़ियों का उत्पीड़न किया गया क्यों के उनके कइयों का पूर्वज जातिविरोधी या गैरजातिवादी थे; इसलिए शूद्र और अतिशूद्र का वर्ग सबसे बड़ा वर्ग हो गया । मनुवाद यानि वैदिक चार वर्ण की हिसाब से पुजारी, राजा और ब्योपारी की संख्या गैर पुजारी, गैर राजा और गैर ब्यापारियों बृत्ति से बहुत कम थी; धूर्त वर्णवादियों ने पुजारी, राजा और ब्योपारी को अगड़ी बर्ग बना डाला और वर्किंग यानि श्रमिक श्रेणी को शूद्र यानि अगड़ी बर्ग का गुलाम यानि पिछड़ी वर्ग बना डाला जिसे की शूद्र यानि पिछड़ी वर्ग कभी अगड़ी बर्ग बन न पाये इसलिए नाम के पीछे उनके बृत्ति के सरनेम लगाके बृत्ति की सरंक्षण की और फ्रीडम ऑफ़ प्रोफेशन को ब्यान किया । शूद्र और अतिशूद्र की प्रोटेस्ट को दबाया गया इसलिए ज़्यदातर शूद्र और अतिशूद्र ही इस्लाम कबुल लिया, इसका मतलब ये नहीं की दूसरे वर्ण या अन्य धर्म मानने वाले लोग इस्लाम कबुली नहीं होगी । कुछ मुस्लमान

राजाओं ने जबरदस्ती मूलनिवासियों को मुसलमान भी बनाया । यहाँ दिखने वाले 3% मुस्लिम पीढ़ियां बाहरी आक्रांता के पीढ़ियां हैं जो ज्यादातर आपने देश नहीं लौटे और यहाँ बस गए; इसका मतलब इस भूखंड की संकरीकरण से उनकी सत्ता इस भूखंड में ही विलीन हो गया लेकिन उनकी लायी गयी धर्म आज तक एक बड़ी प्रॉब्लम हो गयी है जिसके वजह से अखंड भूखंड तीन भूखंड में यानि पाकिस्तान, इंडिया और बांग्लादेश में बंट गया । यहाँ के लोग इतनी मुर्ख है की उनकी साधारण ज्ञान ही नहीं । क्या कोई आरबीक लोग जिन्होंने इस्लाम धर्म बनाई कभी उर्दू या हिंदी में बात करते देखा है? या बांग्लादेश की मुसलमानों का क्या इतना ज्ञान नहीं अरब में कोई बंगाली में बात नहीं करता? अगर उनको आपकी मातृ भाषा की इल्म ही नहीं आप लोग अरबी भाषा की इतने भूखे क्यों हो? अगर कोई GOD है उसको केवल आरबिक या संस्कृत भाषा ही क्यों पसंद है? किसी GOD को आरबिक या संस्कृत भाषा में संबाद करने के पीछे राज क्या है? अगर आपकी GOD केवल आरबी जानता हो तो क्या ग्यारंटी है गैर आरबिक भाषा वाले मुसलमानों की बात वह समझ पा रहा होगा? मुसलमान आपने ही भाषा में नमाज क्यों नहीं पढ़ते? गूगल ट्रांसलेटर भी आरबिक से दूसरे लैंग्वेज को ट्रांसलेट करलेता है; बंगाली मुस्लिम बंगाली में नमाज़ नहीं पढ़के आरबीक में पढ़ने का क्या जरुरत? इसका मतलब साफ़ है की उनके पूर्वज कभी social existence केलिए धर्म को जबरन कबूला था आपने स्व इच्छासे नहीं; तो इस्लाम केलिए इतना कट्टरपंथी क्यों? क्या ये एक पागलपन या मानसिक विकृति नहीं है? इससे ये साबित हो जाता है की गैर आरबिक भाषीय लोग बस आरबिक सोच यानि इस्लाम को आपने सोसियल एक्जीस्टेंस केलिए बिकल्प की तौर पर चुना था। ये भी सच है एक धर्म के साथ दूसरे धर्म की मत भेद रहता है और उसकी रिजल्ट हिंसा से भी होता है यानि दंगे, झगडे और मौत एक आम बात है । ये झगडे इसलिए होते हैं की उनके स्क्रिप्चर उनके दिमाग को कट्टर बनाता है; स्क्रिप्चर के सब्द उनको ये करने में प्रेरणा या मजबूर करते हैं । जो धर्म बनाये थे उनकी अब एक्जीस्टेंस नहीं है; सीबाये उनके सोच के, उनकी GOD की तो पता नहीं क्यों की रियल वर्ल्ड की झगडे में किसीके GOD उनको बचाने नहीं आते; तो एक सोच जो एक जेनेरेशन से दूसरे जेनेरेशन को ट्रांसफर होता है जो की रिसाईटेसन के मध्यमसे हो या किसी और तरह की कम्युनिकेशन की माध्यमसे हो, वह ही इस सब सामाजिक इविल्स(evils) का जड़ होता है; और इस सोच को रन करनेवाले ही असली गुनेहगार होते हैं । क्यों की इस्लाम एक बार कबूलनेके बाद उससे निकलना मुश्किल है यानी अपोस्टसी और कन्वर्शन के लिए सजाए मौत है ये एक तरह की सोच की ट्रैप ही है । जो एक बार इसका चंगुल में फंसा उससे निकलना नामुमकिन की बराबर ही है जिसलिये अब तक हमारे ही भूखंड के ज्यादातर मूलनिवासी वैदिक ट्रैप से बचने के लिए इस्लाम ट्रेप में 700AD से आज तक फंसे हुए हैं । और कुरान की कट्टर सोच उनकी दिमाग को नियंत्रण करता आ रहा है । नागरी/नगरी भाषा(नगर की भाषा) को वैदिक जातिवादी वाले "देव+नागरी=देवनागरी" बना डाला जिसको बौद्ध भाषा हिंदी भी कहाजाता था और इस्लाम राजाओं ने इसके साथ कुछ पर्शियन और आरबीक सब्द मिलाके इसका नाम उर्दू रखा दिया और इसके लिपि को पर्सियन लेटर्स से प्रेरित होकर मदरसे के माध्यमसे हर भाषिय सभ्यता की मुसलमानों की भाषा उर्दू बना दिया ।

अगर इंसान की मौत कोई बीमारिसे होता है उसकी कारण डिस्फंक्शन ऑफ़ ऑर्गन्स (dysfunction of organs) या वाइरस(virus) या बैक्टीरिया(bacteria) जैसे चीज उसके कारण होता है; वेसे ही अगर एक सोच या विचारधारा सामाजिक बुराइयां या इविल्स का कारण हो जाता है, और तो और मौत की कारण भी होता है, इसके पीछे जो सोच या विचारधारा या मानसिकता इसका कारण है उसको हम क्यों उस मौत या सामाजिक बुराइयां का कारण नहीं मानेंगे? जैसे बीमारी का कारण होता है, वेसे ही जिस सोच की बजह उनके अंध GOD प्रेम है, उसको हम एक बीमारी क्यों नहीं कह सकते? इसलिए

थिओ (Theo) यानि गॉड/गॉडस(GOD or GODs) से संबधित, और फिलिआ(philia) यानि एब्रार्मल(abnormal love) लव तथा अंधा प्रेम जिसका कोई कारण या कारण होना जरूरी नहीं है जिसको हम थीओफिलिआ(Theophilia) बीमारी कह सकते हैं; इसको हम थियोस्फीलिया या थियोइफिलिया या गॉडफिलिया भी कह सकते है जो की एक मानसिक विकृति है; इसको अगर हम मानसिक विकृति कहेंगे तो तथाकथित धर्म के धंदा करनेवाले और धर्म के नामपर भेड़ बकरियों के तरह जो अंधभक्तों को कंट्रोल करनेवाले लोग हैं यानि जो ये विचारधारा को चलाने वाले हर प्रमुख धर्म के ठेकेदार हैं इसका विरोध जरुरु कर सकते हैं क्यों के विकृति फैलाकर जो उनकी संगठित स्वार्थ हासिल होता है इसके बाद ये नहीं हो सकता है और इस को मान्यता देने से वह इंकार भी कर सकते हैं! लेकिन ये मानना या ना मानना आप की उपर निर्भर है। थीओफिलिआ (Theophilia) का मतलब GOD की सोच से उत्पन्न मानसिक विकृति है; जिसका जागरूकता(awareness) लोगों को होना चाहिए जो की मानवता के लिए सबसे ज्यादा खतरनाक मानसिक बीमारी है । यहां की बहु भाषीय मुलनिवाशी जिनलोगों की पूर्वजों ने 700AD के बाद इस्लाम अपनाया इनका आरब भूखंड से कोई रिश्ता नहीं लेकिन यहाँ पैदा हुए हर बच्चे के दिमाग में उनके स्क्रिप्चर में लिखे गए एंटिटी की बाईओलॉजिकल काल्पनिक एंटिटी उनके दिमाग के अंदर पीढ़ी दर पीढ़ी सम्बाद के माध्यम से पैदा किया जाता है और उस एंटिटी के साथ सेंटीमेंटल और इमोशनल सम्बद्ध पैदा किये जाते हैं जो की असलियत में एक्जिस्ट ही नहीं करता और उसकी सेंटीमेंटल डिस्टर्बेंसेस से वह रियेक्ट और इन्टॉलरेंट भी हो जाता है, यही है थीओफिलिआ की असली लक्षण यानी जो एक्जिस्ट ही नहीं करता उसकेलिये लोग मरने और मारने पर उतर आते हैं; इसको हम पागलपन या मानसिक विकृति नहीं कहेंगे तो क्या कहेंगे? इसको हम God की लत (God Addiction) भी कह सकते हैं । क्यों की 3 मेजर रिलिजियन ईसाई, इस्लाम और जातिवाद मानव जाति और मानवता को विभाजन करते आ रहे है, और बिना परिसीमा के एक एक तरह की धर्म की साम्राज्य चला रहे है; जो की भविष्य में अपने भीड़(crowd) बढ़ाने की चक्कर में एक दूसरे से लड़ कर मानव दौड़(Mankind) का विनाश की कारण भी बन सकते हैं ।

कोई भी इंसान कुछ भी विचार लेकर पैदा नहीं होता । इंसान पैदा होने के बाद ही अपने संज्ञात्मक, धारणा, अनुभव और अनुभूति से विचार बनाते हैं और उस विचार को दूसरे इंसान संचार या सम्बाद यानी कमुनिकेसन के जरिये अपनाती है या नकारती है । अगर कोई विचार एक काल्पनिक महा शक्तिसाली चरित्र के उपर आधारित हो जिसका नाम GOD हो वही सोच का अतिप्रेम के विचार से बनी बिकृतियाँ को ही थिओफिलिआ कहते हैं । कुछ इंसान अपने अपने तरह के काल्पनिक GOD बनाये और उस विचारधारा की एक एक दौड़ बनाई जिसका कई अनुयाई अपने आप बने या उनको जबरन बनाई गयी या अपने स्वार्थ और संगठित लाभ मकसदों के लिए उनको धूर्तोंने छल और बल से उन लोगों के उपर थोपा और उनको उनके बिचारधारकी गुलाम बनाया और इस तरह कई GOD विचारधारा की दौड़ बनी । जो जिस बिचारधारकी जितना आसक्तिवान बना उससे उस विचारधारा उतना नियंत्रण किया, इस तरह विचार का अतिवादी, उग्रवादी, कट्टरवादी और आतंकवादी अनुयाई भी पैदा हुए जो समाज का कई मूल सामाजिक बुराइयां पैदा किये । GOD की सोच झूठ, कल्पना, भ्रम, अज्ञानता, कुतर्क, तर्कहीनता और हिंसा जैसे मूल सोच के आधारपर बनी है जिसको हम केवल मानसिक विकृति ही कह सकते हैं और इस तरह जो इस विकृति का अनुयाई है वह एक तरह की विकृत मानसिक इंसान ही है । विचार कोई भी हो, उसकी अतिवादी, उग्रवादी, कट्टरवादी और आतंकवादी सोच समाज के लिए घातक ही है । आप अच्छे सोच और विचारों के अनुयाई बने उस के लिये आपको धर्म की बहाने की ज़रुरत नहीं । धर्म होता क्या है? असलियत में जो विचार या विचारधारा

मन में धारण किया जाता है; कोई तो नहीं चाहेगा बुरा विचार या विचारधारा अपने मन में धारण किया जाये? एक अच्छी चरित्र बनाने केलिए ही अच्छे विचारों का विचार या विचारधारा को इंसान मन में धारण करता है; इसलिए जो विचार या विचारधारा मन में धारण करने से एक अच्छा इंसान की चरित्र को बनाता है जो अपना परिवार और समाज के कल्याण केलिए मंगलमय हो उसको अगर एक इंसानी संगठित वर्ग अपना विचारधारा मान लेता है इस को ही रिलिजियन या धर्म कहते हैं। जैसे चीनी का धर्म मिठास है क्यों ये मीठापन धारण करता है; नमक, नमकिन है; वैसे इंसान का बनाया कोई भी विचारधारा अगर मन में धारण किया जाता है वह उस इंसान को उस विचारधारा का धारण करनेवाला या धर्म वाला कहाजाता है; इसका मतलब वह धारण करनेवाला विचार उसकी खुद की नहीं कोई और इंसान से बनाया हुआ भी होता है; तो कौनसा विचार एक अच्छा चरित्र बनाते है और किस विचारधारा में क्या क्या गन्दगी है और किस विचारधारा को गंदे लोग धर्म के नामपर गन्दा बनाकर आपके साथ गंदे खेल खेल रहे हैं उसको भी जानना जरुरी ही। आज के प्रमुख धर्म एक एक GOD के नाम पर बनी भीड़ है जिसका मक़सद उस विचार को अपनानेवालों को उस विचारधारा से नियंत्रण करना और उनसे तरह तरह की स्वार्थ और संगठित स्वार्थ हासिल करना है। अगर आपकी मन को किसी का भी गुलाम नहीं बनाओगे तो आपकी मन की मालिक आप खुद ही रहोगे और अच्छे विचारों का अनुयाई बन के आप खुद आपकी मन को खुद की नियंत्रण में रख सकते हो; इस लिए आप किसी भी विचारधारा की गुलाम न बने लेकिन अच्छे विचारों की अनुयाई जरूर बने। कोई भी विचार की नशा ठीक अन्य नसाओं की तरह ही होता है जिसकी एक बार लत पड़ जाये उसको छोड़ना कभी कभी मुश्किल ही नहीं नामुमकिन हो जाता है। धर्म को मानने वाले इंसान इस विचार की नसा को उनके बच्चोंपर बचपनसे ही आदत बनाना सुरु कर देते हैं जब वह बड़ा होता है उस को उस विचार की लत लग जाति है जिसको छोड़ना नामुमकिन होता है। ये याद रखें अगर आप थिओफिलिआ को बीमारी समझना सुरु कर देंगे तो अपने आप को और अपने आनेवाले पीढ़ीओं को इन बिकृतियोंसे बचा पाएंगे। आप जब कोई काल्पनिक चरित्र की मूर्ति के आगे झुकते हो या कोई काल्पनिक चरित्र के याद में झुकते हो या कोई मूर्ति या सोच जो झूठ, अंधबिश्वास, भ्रम, कुसंस्कार, कुतर्क, कुरीति, तर्कहीनता, अज्ञानता, पाखंड, हिंसा, भेदभाव, पक्षपात, असामंजस्यता, ढोंग और कपट इत्यादि इत्यादि जैसे मानसिक विकृति की विचारधारा को फैलाते हैं उसके सामने झुकते हो, इसका मतलब ये है आप उस मानिसक विकृति और उस विकृत विचारधारा को बनानेवाले समूह के सामने झुकते हो, और ये मानते हो आपकी विचारधारा उस विकृति के सामने झुकता है और आप उसकी गुलाम हो। दुनिया में पैदा हर इंसान कोई विचारधारा लेकर पैदा नहीं होता; दुनिया में पैदा हर इंसान की बिचारधारा की आजादी है जो की एक प्राकृतिक अधिकार है; इसीलिए किस बिचारधारा के आगे झुकनेसे पहले अपनी आजादी और अपनी आजाद विचारधारा की आत्मसम्मान का भी ख़याल रखें।

धर्म की लड़ाई करने से पहले इन लोगों की उनकी धर्म की बेसिक्स तो पता होना चाहिए? लेकिन उनको बेसिक तो पता नहीं आपने धर्म की लिखी ज्ञान की पांडित्य दिखाते फिरते हैं। विकृत धर्म के वजह से हमारा भूखंड हमेशा पिछड़ा रहा और अगर इन अंधे भक्तों का आँख ना खुले, सदियों पिछड़ा ही रहेगा। थीओफिलिआ (Theophilia) यानी God Addiction अर्थात GOD की लत के कारण धर्म से जुड़ी आतंकवाद और अतिवाद (extremism) पैदा होता है जो की मानबता के लिए खतरा है। इस लेख का उद्देश्य सोये हूए को जगाना है, अगर आप जागतेहुए सोया हो तो आप सोसिओपैथ हो और समाज केलिए सबसे ज्यादा खतरनाक हो जिसकी निदान या खात्मा जरुरी है।

और जहाँ तक GOD की बात है, आप की पूर्वज न कभी GOD को देखे थे, न आप अपने जीवित रहते देख पाएंगे , ना भविष्य में आप के पीढ़ियां कभी GOD को देख पाएंगे, ये जरूर है अगर आप की आस्था सांइस एंड रीजनिंग में हो उस को एक दिन ढूंढ पाएंगे ये सच है या गलत है और उसको समझ पाएंगे । एक दिन सच जान ने का वाद भी आप ये फेथ, आप छोड़ नहीं पायंगे क्यों की ये फेथ एक दिन में आप की दिमाग में नहीं बना इसलिए जो अंधविश्वास अभ्यास में परिवर्तित हो जाये उससे छोड़ना इतना आसान नहीं होता जो की थीओफिलिआ का लक्षण है । प्रोफेट मुहम्मद ने एंजेल गेब्रियल/जिब्राइल को देखा था इसका कोई प्रमाण नहीं, वह कैसे दीखते थे उसका भी कोई कुरान में लेख नहीं; गेब्रियल/जिब्राइल अल्लाह की वारे में कुछ भी वैसे विस्तार जानकारी नहीं दिया; बस कहा अल्लाह ही एक GOD है जो दीखता नहीं पर है, और सबसे बड़ा ताक़तवर है जो दुनिया बनाया और दुनिया का रखवाला है । गेब्रियल/जिब्राइल को प्रोफेट मुहम्मद दिख गए की मुझे इस इंसान को अल्लाह की वारे में कहना है लेकिन जिसके वारे में कहा वह अल्लाह क्यों नहीं दिखा? प्रोफेट मुहम्मद अपना बीते 40 साल रेगिस्तान में घूमते और ब्योपार करते हुए गुजारे थे, ना वह कोई साधु थे ना कोई संत थे ना उनकी पढाई लिखाई था ना कहींपर लोगों को ये धर्म प्रबचन दिया करते थे; तो अल्लाह ने इन जैसे बन्दा को अपना मैसेंजर बनाना क्यों चुना? और गेब्रियल/जिब्राइल को कैसा पता चला की अल्लाह ही सबसे बड़ा GOD है? गेब्रियल/जिब्राइल कौनसा ऐसे अल्लाह की सबुत दिखाया जो प्रोफेट मुहम्मद को लगा अल्ला ही सबसे बड़ा GOD हैं? कुछ देर के लिए मान भी लेते हैं जैसे अंधा आदमी अहसास करता है लेकिन देख नहीं पाता, वैसे गेब्रियल/जिब्राइल कभी नहीं कहा के इस इस कारण से उनको पाता चला या अहसास हुआ के अल्लाह का एक्जिस्टेन्स इस कारण से पता चला । ये अहसास ठीक उसी तरह की है जैसे किसी इंसान को एक काली रात में एक काली बिल्ली का अहसास होना जो की जन्मजात से अंधा और बहरा है, जिसने ना कभी काली बिल्ली को देखा है ना उसकी आवाज सुनी है फिर भी उस को उसकी अहसास है । अगर अल्लाह एक एंटिटी नहीं है लोग हज करने काबा क्यों जाते हैं और काबा के सामने सर झुका ने के पीछे क्या लॉजिक हैं? अगर आप ये मानते हो आइडोल के सामने झुकना इस्लाम में मना है तो काबा भी तो एक स्ट्रक्चर ही है? इसके सामने झुकना कौनसा तार्किक ज्ञान है? और काबा के अंदर है क्या? कुछ प्रोफेट मुहम्मद या इस्लाम को फ़ैलाने वालों का यूज किया गया बर्तन और तीन खम्बे? एक छड़ी में टंगा हुआ ये बर्तन और तीन खम्बों के आगे झुकना और सारी दुनिया के करीब 180 करोड़ इस्लाम अनुयाई काबा और होकर पार्थन करके सर झुकना कौनसा विज्ञानवाली बात है? अंधभक्ति और अन्धविश्वाश का कोई सीमा होता है इस्लाम में केस में तो वह भी सीमा हिन ही हैं। प्रोफेट मुहम्मद के क्या क्या ऐसे अच्छे गुण थे जो अल्लाह ने उनको ही अपने वारे में बोलने के लिए चुना? वैसे कहने को हम कुछ भी कह सकते है । आप खुद अपने खुद की काल्पनिक निर्माण यानी Psychological constructs से भी एक नया एंटिटी बनाकर इसका कोई नया नाम देकर आप की खुदा यानी GOD भी बना सकते हो और शक्ति भरे शब्दों से उसको ताकतवर बनाकर अगर एक जमे हुए भीड़ का दिमाग के अंदर इसको इम्प्लीमेंट करलिया तो आप की GOD का दूकान भी खुल जायेगा और ये ठीक उसी तरह काम करेगा जैसे अब दुनिया के प्रमुख काल्पनिक Godly एंटिटी ने बनायीं हुयी है । उदाहरण के तौर पर हम ये भी कह सकते यूनिवर्स या जो भी कुछ आप देखते हो, अहसास करते हो ये सब एक मेंढक/कुत्ता/बिल्ली/सूअर/गधा/(कोई भी काल्पनिक एंटिटी का एक नया नाम)... ने बनाया जो अद्वितीय, सबसे बड़ा ताक़तवर है, जो सर्वव्यापी है कोई इससे देख नहीं सकता, उस को बस अहसास कर सकते हो, जिसका रूप भी नहीं है न आप उसकी वारे में कल्पना कर सकते हो, उनके वारे में जानना इंसान की दिमाग का बस में नहीं, वह सबसे दयालु, सबसे बड़ा, सबसे शानदार, परम सत्य, अनंत, श्रुष्टिकर्ता, पालन कर्त्ता, संहार कर्त्ता और शांति का स्रोत है, दुनिया में पायेजानेवाले जितने भी

GOD/GODs या गोडली एंटिटी हैं उसका रचनाकार भी ये ही हैं, इनके सिवा कोई रचनाकार एक्जिस्ट ही नहीं करता जो की परम सत्य है, जो सच्चे मन से इनकी कल्पना करे वह उसको ही नजर आये और जो इसको ना मानें वह मुर्ख और पापी है...इत्यादि इत्यादि... जो की शब्द और कल्पनाओं का सक्ति है जिससे कोई इंसानी दिमाग उस एंटिटी का अपने दिमाग में एक आयाम बना लेता है जो की इंसानी क्षमता है; इसका मतलब ये नहीं की वह एंटिटी रियलिटी में एक्जिस्ट करता है; हाँ ये जरूर है काल्पनिक एक्जिस्टेंस पैदा हो जाता है । वैसे इंसान कितने काल्पनिक चरित्र यानी Super Characters बनाये जैसे स्पाइडर मैन, ही मैन, हल्क इत्यादि इत्यादि लेकिन वह बस एक काल्पनिक चरित्र ही हैं । चरित्र काल्पनिक हो या असली उसकी हमेशा लोगों की दिमाग के उपर असर रहता है और आप जैसे असर डालने के लिए प्रोग्रामिंग करोगे उसका असर भी लोगों की उपर वैसे होगा । यहाँ सोसिअल नर्म प्रोग्रामिंग (Social norms programming) करनेवला की नियत क्या है उस को आप को अहसास करना पड़ेगा, बद नियत वालों को आप को नकारना पड़ेगा नहीं तो बस धर्म के नाम पे आप को दुःख ही मिलेंगे । असली चरित्र यानी कोई चरित्र अगर एक दिन पैदा हुआ था और दुनिया के लिए उसकी कुछ सोच और ऐक्शन अच्छे या बुरा था वह मरने का वाद कल्पना के बराबर ही है । एक बार एक चरित्र कल्पना या मैमोरी हो जाये उस चरित्र सच हो या झूठ उसके किये गए नफरत या कुकर्म या गंदे और बुरे विचार को प्रमोट करना या आगे बढ़ाना हमेशा घातक ही होता है । दरअसल कुछ अरबियों का मानना है अल्लाह या हुब्बुल अरब के सबसे ज्यादा माने जाने वाले मूर्त्तिवाद पहचान थे । वक्किदी जैसे इतिहासकारों का मानना है मोहम्मद जब ताक़तवर बने अल्लाह वास्तव में अरब वासियों के मानाजानेवाला देवताओं में अरब की देवताओं का प्रमुख देवता थे । अल्लाह की पहचान प्रोफेट मुहम्मद से पहले था; मुहम्मद ने बस उस पहचान को अपने धर्म केलिए इस्तेमाल किया और मूर्त्तिवाद को उसमें से एलिमिनेट यानि खत्म कर दिया; यानी अपने धर्म केलिए वह अल्लाह की नाम या पहचान की इस्तेमाल किया जिसको हम आइडैंटिटी थेफ़्ट या पहचान की चोरी या डकैती भी कह सकते हैं । अपने धर्म केलिए प्रोफेट मुहम्मद ने अपने पूर्वजों की फ़ेथ सिस्टम को ध्वंस कर दिया ये आतंकवादी का काम नहीं तो क्या है? अगर आप की धर्म उनके फ़ेथ सिस्टम से अच्छा होता तो वह अपने मर्जी से इस्लाम क़बूल लेते जबरदस्ती थोपना ये कौन सा अच्छी कर्म है? इस्लाम को प्रोफेट मुहम्मद ने तलवार के दम पर और मृत्यु के भय दिखा के अपने ही लोगों के उपर पहले थोपा था, प्यार से नहीं, ये कौन सा पैगम्बर वाली बात है? ये पूरी तरह आतंकवादी वाला बात है; जैसे पुष्यमित्र शुंग ने तलवार और मृत्यु के भय दिखा के 185BC में वर्णवाद और वैदिक सोच इम्प्लीमेंट करके बौद्ध धर्म का ख़ात्मा किया था । अगर आप इस्लामी हो ये आपको क्रोधित कर सकता है लेकिन आप खुद को ये प्रश्न पूछना चाहिए सच्चाई बोलने से आप को क्रोध आने के पीछे क्या राज है? जो की थीओफिलिआ की एक लक्षण है । प्रयोगसे पता चला है, जो थीओफिलिआ के शिकार हैं वह इस बीमारि से बचना मुश्किल है यानी नामुमकिन की बराबर है, क्यों के बचपन से ही परिवार से ये बीमारी दिमाग में प्लांट किया जाता है; लेकिन वह चाहे तो उनके आनेवाला पीढ़ियों को इस बीमारि से बचा सकते है, केवल उनके थीओफिलिआक सोच को दूसरे जेनेरेशन को ट्रांसफ़र न करें ।

उदाहरण के स्वरुप आप क्या बिना बिजली , बिना TV, और बिना इंटरनेट के जिंदगी जी सकते हो? अगर आप के जिंदगी में 5 घंटे का पावर कट शुरु हो जाये, इंटरनेट प्रोवाइडर ठीक से इंटरनेट सेवा नहीं दे, या कोई भी साधन जो आपके जिंदगी में अत्यावश्यक योगदान देता हो वह ठीक से काम न करे तो आप गुस्से में आ जाते हो यहाँ तक कुछ लोग जो कंपनी TV बनाया, या जो बिजली और इंटरनेट सर्विस प्रोवाइडर है, उनकेलिए माँ बेहन की गाली भी दे देते है, लेकिन जो लोग बिजली, इंटरनेट और TV की रचना की थी यानी उनके आविष्कारक जैसे बिजली के आविष्कारक बेंजामिन फ्रेंक्लिन, TV

के आविष्कारक जॉन लोगी बैयर्ड और फिलो फार्न्सवर्थ; और इंटरनेट का आविष्कारक रोबर्ट इ.कहन और विन्ट सिर्फ के चरित्र या फॅमिली मेंबर के चरित्र के उपर कुछ भी कह दो आप की मुहं से कुछ भी नहीं निकलेंगे यहां तक भी 99.99% से ज्यादा लोगों को उनके वारे में पता ही नहीं होगा, कहना के मतलब, जिनलोगों ने इंसान की जीने के नक्सा ही चेंज कर दिया उनको ज्यादातर लोग जानते तक नहीं; और उनके चरित्र के वारे में अगर उल्टा सीधा बोल दें आप उस स्थिति में कुछ नहीं कहेंगे; हो सकता है आप उसकी मजा भी लें; लेकिन धर्म को मानने वाले जैसे जातिवादियों का जातिवादी राम, सीता या कृष्ण के वारे में या मुसलमानों को प्रोफेट मुहम्मद या अल्लाह की वारे में या ईसाई धर्म को मानने वालों को यीशु के वारे में कुछ उल्टा सीधा बोल दो तो भक्त लाल पीला हो जाता है और मरने और मारने तक भी बात चली जाती है, जिसको ना उनके पूर्वज देखे थे ना उनकी मूर्ति या स्मृति के सिवा उनका कोई अस्तित्व है, जिसमें ज्यादातर काल्पनिक चरित्र ही हैं, फिर भी उन एंटिटी को वह इतना प्यार करते है की उनकी बदनामी उनसे बर्दाश्त नहीं होता है; भक्त ये भी भूल जाते है की उनके मान्यता का हिसाब से वह अगर सब GOD हैं, जो सर्व व्यापी और महा शक्तिमान हैं; और, जो उनको गाली देगा वह सर्व सक्तिमान GOD उनको सजा देनेकी क्षमता रखते होंगे, लेकिन भक्त खुद ही अपने GOD की GOD बन के उनकी मान का रक्षा करना शुरु कर देता है जो की एक अंधा प्रेम है, ये वह अंधा प्रेम है जो उनकी सोच की लालन पालन से पैदा हुआ है; और ये सोच बचपन में ही जो जिस धर्म का भीड़ में पैदा हुआ है उसके दिमाग में प्लांट किया जाता है ताकि उसकी दिमाग को उस सोच से कंट्रोल किया जा सके इस अंधा GOD प्रेम ही हिंसा करवाता है जिसको थिओफिलिआ कहते है; जो की एक अंध विश्वास से पैदा मानसिक विकृति है और समाज के लिए खतरनाक है । इस सोच को अनुनायियों की सोच में समय के साथ लालन पालन और बढ़ने के लिए स्पिरिचुअल होम्स, प्लेसेस, फेस्टिवल्स, स्क्रिप्चर्स, डिवोशनल गाने, पिक्चर, स्कल्पचर और मोटिवेशन जैसे माध्यम लिए जाते हैं । थिओफिलिआ के कारण इंसान की दिमाग पार्शियल इरेशनल बन जाता है, अज्ञानता का सीकर भी होता है, स्लो लॉजिकल थिंकर बन जाता है और उस में तर्क अंधापन भी पैदा होता है, धर्म की प्रेम डिस्क्रीमिनेशन यानी भेदभाव को पैदा करता है, थिओफिलिआ के वजह से वह धर्म बनानेवालों का झूठ की सीकार भी बनता है और धर्म को चलाने वाले कुछ स्वार्थी, मतलबी दुष्ट दिमाग स्वयंभू पंडित कई तरह की असामाजिक बुराई यानी एन्टीसोसिअल सोच और ऐक्शन उस में मिला के उनके स्वार्थ के लिए भीड़ और भक्त का इस्तेमाल अपने स्वार्थ के लिए करते हैं । आप को बता दूँ थिओफिलिआ एक खतरनाक मानसिक बीमारी है और इस मानसिक विकृति से आप अपने आप को और आप की पीढ़ियों को बचाएँ । थिओफिलिआ के वारे में इंटरनेट में आप को ज्यादा कुछ नहीं मिलेंगे क्यों की ये रिसर्च ये लेख की लेखक का रीसर्च है । आप चाहे विश्वास करें या ना करें ये आप की तर्क और विश्वास के उपर निर्भर है, क्यों के थिओफिलिआ का वैरिफ़िकेशन मेथड इसमें बता दिया गया है जो आप खुद टेस्ट कर के उसकी रिजल्ट पा सकते हैं । थिओफिलिआ की पुष्टि और उसकी सहमति कोई प्रतिष्ठित रीसर्च संगठन की सर्टिफिकेट से नहीं बल्कि आम आदमियों की तार्किक सहमति से होना चाहिए सोसिअल कोन्फोर्मिटी से नहीं ।

-BNS

थिओप्लेसिबो/गॉडप्लेसिबो
THEOPLACEBO/GODPLACEBO

थिओप्लेसिबो/गॉडप्लेसिबो ठीक मैडिसिन वर्ल्ड प्लेसिबो का जैसे ही काम करता है। प्लेसिबो होता क्या है? प्लेसीबो एक "भ्रामक उपचार" या "झूठी उपचार" या "ठगी उपचार" होता है । कुछ रोग खुद दिमाग या मन और विश्वाश का उपज होता है; जो एक तरह की मानसिक विकृति होता है, जो आम दवाओं में ठीक नहीं होता । इन से उत्पन रोग केवल उनकी मन और विश्वाश में बदलाव लाकर किया जा सकता है; यानि इसका इलाज दिमाग के साथ छेड़छाड़ करके भी हो सकता है; जो की प्रवंचनशील और भ्रामक भी होता है और ये कभी भी इनसे बिना पैदा के रोगोंपर प्रभावशाली नहीं होता । उदाहरण के तौर पर आप एक डॉक्टर के पास जाते हैं, क्यूंकि आपको बहुत दिनों से सिर में दर्द हो रहा था । डॉक्टर आपके सारे टेस्ट करवाता है और फिर आपको केवल एक गोली देता है । दिन में दो बार, खाना खाने से पहले । आप हफ़्ते भर गोली खाते हैं और एकदम ठीक हो जाते हैं । आप डॉक्टर को शुक्रिया करने जाते हैं, साथ ही पूछते हैं कि वो दवा कौन सी थी, जिससे महीनों से चला आ रहा सिरदर्द महज़ एक हफ़्ते में छू-मंतर हो गया? डॉक्टर आपको बताता है कि वो कोई दवा थी ही नहीं । वो तो एक मीठी गोली थी जेम्स की, जिसे उसने दूसरे डब्बे में भरकर आपको दे दिया था । अब आप समझ नहीं पाते कि डॉक्टर को शुक्रिया कहें या उसे इस धोखे के लिए कोसें । लेकिन आप उससे कुछ कहें उससे पहले ही डॉक्टर आप को बताना शुरू कर देता है; आपके सारे टेस्ट करवाए । सिर तो छोड़िए, शरीर के किसी कोने में आप की कोई दिक्कत नहीं मिली । दरअसल ये सिरदर्द आपके मस्तिष्क की ही उपज था । आपके दिमाग की; विस्तार से बोलूं तो, आपके मन की । आप कभी अख़बार में किसी बीमारी के लक्षण देखते हैं तो लगता है कि ये सारे लक्षण तो आपके शरीर में भी मौजूद हैं । क्योंकि बहुत सारी बीमारियां आपके शरीर की नहीं मन की देन होती हैं । बीमारियां ही नहीं दुनिया में अधिकतर चीज़ें शरीर की नहीं, मन की देन होती है । आपको ये अजब लगेगा, लेकिन इस यूनिवर्स की बहुत सारी चीज़ें 'मन' की ही उपज हैं; और जो चीज़ आपके मन की उपज है उसका इलाज बाहर कैसे होगा? उसका तो अंदर ही से इलाज करना पड़ेगा? और इसी 'इंटरनल हीलिंग' यानि "आंतरिक चिकित्सा" को मनोवैज्ञानिकों की भाषा में 'प्लेसीबो-इफेक्ट' कहते हैं । 18 वीं सदी के उत्तरार्ध में 'प्लेसीबो चिकित्सा' औषधीय शब्दावली का एक अभिन्न हिस्सा बन गया । इस प्रकार की चिकित्सा लोगों को ठीक/स्वस्थ करने के बजाय संतुष्ट/प्रसन्न करने में अधिक उपयोग में आती थी । सदियों से प्लेसीबो को 'भ्रामक उपचार' माना जाता रहा है । सरल भाषा में कहें तो प्लेसीबो ऐसी चिकित्सा को कहते हैं जिसका कोई वैज्ञानिक आधार न हो । ऐसी चिकित्सा पद्धति या तो प्रभावहीन होती है, या यदि कोई सुधार दिखता भी है तो उसका कारण कोई अन्य चीज ही होती है । और इस पूरे कांसेप्ट या इफ़ेक्ट को कहते हैं "प्लेसीबो इफ़ेक्ट" या "प्लेसीबो प्रभाव" । अब, जब कहा जाता है कि इनको दवा नहीं दुआ की ज़रूरत है तो दरअसल 'प्लेसीबो इफ़ेक्ट' की ही बात की जा रही होती है; यानि मजूदा समय में अगर कोई बीमारी का कोई इलाज नहीं है तो इसका इलाज को प्राकृतिक संभावनाएं के उपर छोड़ दिया जाता है और उसको गॉड के नाम पर छोड़ दिया जाता है; अगर कोई बिमारी का कारण "मन" हो तो इसको बिना गॉड के नाम पर 'प्लेसीबो इफ़ेक्ट'से भी इलाज किया जा सकता है जैसे की बाबा की भभूत, झाड़ फूंक, ताबीज, डॉक्टर की झूठी दवा इत्यादि इत्यादि । और ये प्लेसीबो इफ़ेक्ट बहुत ही पुराना सोच है जो गॉड के नाम पे भी होता आ रहा है । इंडिया का मिनातन बहुदेववाद धर्म यानि तैंतीस करोड़ देवादेवियों का विचारधारा बौद्ध धर्म के विरोध में ही पैदा एक विचारधारा है लेकिन ये धूर्तों और बेइमान मूलनिवासियों से पैदा एक वर्ग स्वार्थी

विचारधारा है जिसका गलत उपयोग होता आ रहा है । जिसको आप अब वैदिक धर्म कहते हो उनके जितने भी प्रमुख देवादेवियाँ है उन में कई बस काल्पनिक है और पुजारी उन चरित्रों से आपकी प्लेसिबो इफेक्ट करवाता है और भक्त को अगर मन की उपज कोई बीमारी हो तो वह ठीक हो जाता है और क्रेडिट उस काल्पनिक देवादेवियों और पुजारी को जाता है; अगर कुछ नहीं होता है तो कहदिया जाता है वह गॉड की मर्जी था; लेकिन अगर कोई ठीक भी हो जाता है उसको गॉड की चमत्कार बोलदिया जाता है जब की ये प्राकृतिक रूपसे आपके इम्यूनोसिस्टम ही विना दवा के करता है, क्यों के ये प्लेसिबो इफेक्ट GOD या देवादेवियों के नामपर होता है ये "गॉडप्लेसिबो" है; लेकिन इस में सबसे बड़ा प्रोब्लेम एक सामाजिक विकार है और वह है पुजारीवाद बनाम ब्राह्मणवाद जो बर्चस्ववादी बनने के कारण वह उत्पीड़क वर्ग होनेका भी दृष्टांत दिया है । ब्राह्मणवाद का काल्पनिक देवदेवियों का 900AD से पहले कोई अतापता नहीं मिलता । इनका कोई भी पुराने मूर्त्ति या मंदिर 900AD से पहले पुरातात्विक साक्ष्य के अनुरूप नहीं मिलेंगे जिससे ये प्रमाणित होता है की बौद्ध धर्म वहुदेववाद विचारधारा से कई पुराना विचारधारा है, लेकिन भांड धूर्त पुजारीवाद अपना काल्पनिक गोपोडवाज मान्यतावादी झूठी इतिहास बनाकर कुछ भी बोलते रहते हैं। पेलसीबो इफेक्ट का प्रमाण आपको बौद्ध धर्म के जातक कथा से मिलजाएँगे लेकिन वह लोगों को ठगने केलिए नहीं थी बलकि मनरोग की उपचार केलिए ही था । बौद्ध विचारधारा के जातक कथा के अनुसार एक बार एक बौद्ध गुरु अपने कुछ शिष्यों के साथ एक गांव से दूसरे गांव जा रहे थे । उन्हें रास्ते में एक नव यौवना दिखाई दी । माने एक सुंदर स्त्री । नव यौवना के पैरों में चोट लगी थी इसलिए वो नदी पार नहीं कर पा रही थी । बौद्ध गुरु ने उसे सहारा देकर नदी पार करवा दी । ये देखकर शिष्यों के मुंह सड़ गए । जब घंटों तक बौद्ध गुरु पीछे चलते शिष्यों की खुसर-फुसर सुनते हुए आजिज़ आ गए, तो उन्होंने शिष्यों से उनकी परेशानी का कारण पूछा । शिष्यों में से एक ने कहा आपने एक कुंवारी स्त्री को अपने हाथों से छुआ, इससे आपका मन, आपकी आत्मा मलीन न हुई? गुरु ने उत्तर दिया (और गौर कीजिए कि उत्तर देते हुए उन्होंने बहुत ध्यान से शब्दों का चुनाव किया) – मैं उस 'विपत्ति-ग्रस्त' को कब का नदी के तट पर छोड़ आया हूं लेकिन तुम उस 'स्त्री' को अब तक ढो रहे हो । कथा यहां पर समाप्त हो जाती है । वैसे हमारे जिंदगी में कई तरह के समस्याएं होते हैं और उन समस्याओं से भी मन में कई तरह की वीमारी बनजाते हैं और उस वीमारी को केवल मन के द्वारा की जा सकती है इस वीमारी का सबसे पुराना समाधान कुछ लोगों ने साइकोलॉजिकल दवाई "थिओप्लेसिबो/गॉडप्लेसिबो" के उपचार के रूप में बनाया जो विज्ञान संगत यानि वैज्ञानिक तो नहीं लेकिन झूठ, भ्रम, तर्कहीनता और अंधविश्वास आस्था के उपर आधारित था; कभी कभी झूठी दिलासा और संतुष्टि मनको दृढ़ बनाता है और क्यों के मन शरीर के साथ सम्पूर्ण रूपसे जुड़ा हुआ होता है, सुदृढ़ मन प्राकृतिक रूपसे शरीर को प्राकृतिक रूपसे इम्यूनलोजिकाल सशक्त बनाने को कोसिस करता है जिससे कई समस्या का समाधान हो जाता है लेकिन ये हर समस्या का समाधान नहीं करता इससे और कई मन से जुडी समस्या को भी पैदा करदेता है जिससे इसके कई एडवर्स इफ्फेक्ट पैदा होते रहते हैं; जैसे, जो मनसे जुडी हुई रोग नहीं है उससे इंसान का मृत्यु हो जाना; अन्धविश्वाश के कारण अज्ञानता, तर्कहीनता और कुतर्क का शिकार होना, पुजारी वर्ग का वर्चस्ववादी हो जाना और उनसे दूसरों को शाररिक और मानसिक रूपसे उत्पीड़न करना, ठगना और प्रवंचन करना; झूठ, भ्रम, अंधविश्वास और तर्कहीनता को बढ़ावा देना और ऐसे कई तरह की हजारों मानसिक और सामाजिक विकृतियाँ इनसे पैदा होने का समस्या बनजाना । इसलिए थिओफिलिआ और थिओप्लेसिबो/गॉडप्लेसिबो के वारे में जानना सबको जरुरी है।

-BNS